॥ओ३म्॥ • प्रत्येक माह दिनांक २५ को प्रकाशित एवं प्रेषित

वैदिक संसार

हिन्दी मासिक

• वर्ष : ९ • अंक : ११ • २५ सितम्बर २०२०, इन्दौर (म.प्र.) • मूल्य : २५/- • कुल पृष्ठ : ३६

खण्डित भारत से आर्यावर्त तथा विश्व गुरुता के पद पर पुनः आरूढ़ होने हेतु कृत संकल्पित एकमात्र राजनैतिक दल

राष्ट्र निर्माण पार्टी

हार्दिक बधाई

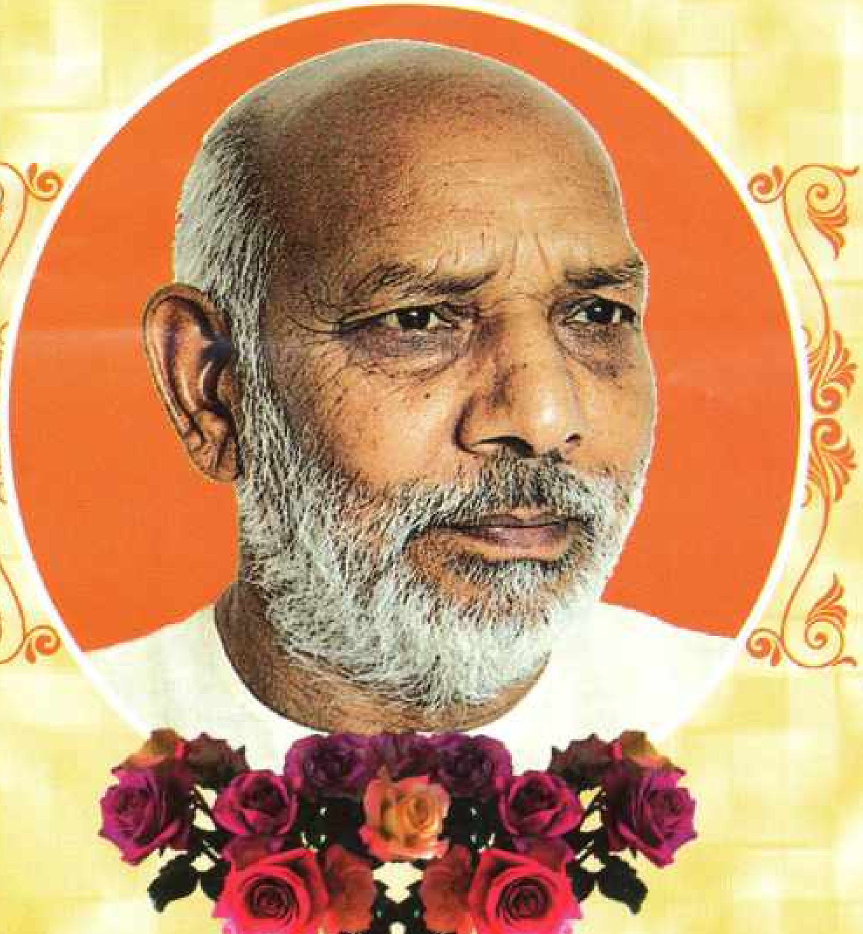

शुभकामनाएँ

ठाकुर विक्रमसिंहजी

राष्ट्र निर्माण पार्टी के संस्थापक एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष, वैदिक विद्वान, दानवीर, आर्य भामाशाह, ओज-तेज के धनी, निर्भीक प्रखर वक्ता, जुझारू कर्मठ कर्मयोगी, वैदिक संसार के संरक्षक श्रद्धेय ठाकुर विक्रमसिंहजी आर्य को ७८वें जन्मदिवस १९ सितंबर २०२० पर समस्त शुभचिन्तकों एवं वैदिक संसार परिवार की ओर से हार्दिक-हार्दिक बधाई तथा स्वस्थ, शतायु-दीर्घायु जीवन के साथ राष्ट्र निर्माण संकल्प पूर्ति हेतु हृदय की गहराइयों से हार्दिक शुभकामनाएँ...

जांगिड कुल गौरव, ओजस्वी, तेजस्वी वाद्य यन्त्रों के कुशल शिल्पी, वैदिक विद्वान, संगीतज्ञ, वयोवृद्ध, ज्ञानवृद्ध

पं. गंगारामजी जांगिड, जयपुर (राज.) का निधन

वेदानुरागी, धर्मनिष्ठ, वरिष्ठ समाज सेवी श्रद्धेय पं. गंगारामजी जांगिड (बाजे वाले), निवासी : माधोबिहारी का अहाता, स्टेशन रोड, जयपुर का १०४ वर्ष की आयु पूर्णता पश्चात् दिनांक ३० अगस्त २०२० को निधन हो गया। कोरोना महामारी की आपदा के कारण आगमन के साथ ही प्रस्थान के रूप में शोकसभा आयोजित की गई जिसमें वृहद संख्या में इष्ट मित्रों, स्नेहीजनों ने दिवंगत पुण्यात्मा के प्रति अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये।

आपका जन्म सीकर जिले के अजबपुरा ग्राम में पिता श्री किशनरामजी जांगिड के यहाँ माता भँवरीदेवीजी की कोख से हुआ था। सन् १९४४ में आप जयपुर आ गए। वाद्य यन्त्र आपके जीवन के अंग थे। आपका का वाद्य यन्त्रों के प्रति रूझान शुरू से ही रहा। आपने इसका तकनीकी ज्ञान प्राप्त कर इसमें प्रवीणता प्राप्त की। गंगाराम एंड सन्स के नाम से आपका ख्याति प्राप्त संस्थान था। जहाँ पर सोने-चाँदी तथा हाथी दाँत की नक्काशी वाले वाद्य यन्त्रों का निर्माण किया जाता था जिसके कारण आप बाजे वालों के नाम से सुविख्यात थे। आपके द्वारा निर्मित वाद्य यन्त्र राजघरानों में लोकप्रिय थे। आपकी संगीत में भी रुचि थी। आप सितार वादन में भी निपुण थे। उच्च कोटि के संगीतज्ञों एवं संगीत प्रशिक्षण केन्द्रों से आपके प्रगाढ़ सम्बन्ध रहे तथा आपने भी संगीत प्रशिक्षण प्रदान किया। शिल्पी वर्ग के महात्मा गाँधी के रूप में समाज सुधारक पं. गुरुदेव जयकृष्णजी मणिठीया का आपको सान्निध्य प्राप्त हुआ जिस कारण से आप समाज सुधार कार्यों की ओर अग्रसर हुए। आपने जांगिड संस्कृत वैदिक विद्यालय फतेहपुर शेखावाटी, जिला सीकर (राज.) के संचालन का दायित्व निर्वहन किया। पं. हरिकेशदत्तजी के सम्पर्क में आने से आप वैदिक ज्ञान प्राप्ति की ओर प्रवृत्त हुए। आपने शास्त्रीजी के सान्निध्य में हिन्दी और संस्कृत भाषा का ज्ञानार्जन कर अनेक ग्रन्थों का अध्ययन किया। वैदिक विधि अनुकूल संध्या तथा यज्ञ आपके जीवन के अंग बन गए। आपने 'वेदों में विश्वकर्मा', 'अष्टांग योग का स्वरूप व उसके अनुष्ठान का फल', 'वेदों में प्राण महिमा एवं पुनर्जन्म' तथा 'वैदिक संध्या' आदि पुस्तकों की रचना कर उन्हें प्रकाशित कर वितरित किया। आप ब्रह्म मुहूर्त में तीन बजे जाग जाते थे तथा नियमित रूप से योग और स्वाध्याय करते थे। यजुर्वेद के ४०वें अध्याय का पाठ प्रतिदिन आपको अतिप्रिय था। आपने दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन, रोजड़ (गुजरात) में चतुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया जिसकी पूर्णाहुति में मुझ वैदिक संसार के प्रकाशक को भी उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आपने जयपुर, अहमदाबाद, गाँधीधाम आदि स्थानों पर आयोजित यज्ञों में यज्ञ ब्रह्मा का दायित्व निर्वहन किया। अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा, दिल्ली के जयपुर अधिवेशन में आपकी महती भूमिका रही। महासभा के पूर्व प्रधान भैरोबक्क्षजी चोयल, पं. हरिकेशदत्तजी शास्त्री, सेशन जज तुलसीरामजी शर्मा, गजानंदजी डेरोलिया, श्री भगत भीमसेन, श्री माधवदासजी तथा अनेक वैदिक विद्वानों से आपके मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध रहे। आप अनेक महानुभावों के प्रेरणा स्रोत भी रहे। अनेक बंधुओं को आपने संध्या-हवन करना सिखाया। अंधविश्वास, पाखण्ड, रूढ़िवादिता तथा समाज में प्रचलित कुरीतियों का विरोध भी किया तथा इनके प्रति समाज को सचेत-सावधान भी किया।

आपके निधन से मात्र परिवार ही नहीं तथा जांगिड समाज ही नहीं वरन सम्पूर्ण मानव जाति ने एक नियम-संयम से जीवन व्यतीत करने वाली महान विभूति, वेद जिनके जीवन का आधार था, जो वाद्य यन्त्रों के कुशल शिल्पी थे, को खो दिया है। आपके निधन से अपूरणीय क्षति हुई है।

आप अपने पीछे मनोज, कौशल (पुत्र) सुमित, देवेश, रोहित (पौत्र) श्रीमती शान्ति-स्व. बेनीप्रसादजी जयपुर, श्रीमती सुमित्रा-ओमप्रकाशजी अहमदाबाद, श्रीमती पुष्पा-रजनीकांत मुंबई (पुत्री-दामाद), रघुनाथ, ओमप्रकाश, नाथूलाल, मोहन, रामविलास, मूलचंद, प्रकाश, हंसराज आदि परिजनों का भरा-पूरा परिवार छोड़ गए हैं।

आपकी सुपुत्री श्रीमती सुमित्राजी शर्मा अहमदाबाद में योग प्रशिक्षिका तथा वरिष्ठ समाज सेविका हैं। आप जांगिड ब्राह्मण महिला मण्डल तथा जांगिड ब्राह्मण समाज वाड़ी अहमदाबाद के आयोजनों में सक्रिय रूप से भाग लेती हैं। आप वैदिक संसार की संरक्षक सदस्य हैं। आप तथा आपके भाई कौशलजी के द्वारा मुक्त हस्त से आर्थिक सहयोग वैदिक संसार को प्राप्त होता रहता है। अभी भी पिताजी की पुण्य स्मृति में आपके परिजनों द्वारा वैदिक संसार को ११०० रुपये दान स्वरूप भेंट किये गये।

वैदिक संसार परिवार दिवंगत पुण्यात्मा के प्रति अपने श्रद्धासुमन अर्पित करता है।

प्रतिष्ठान : नेहा सेल्स कार्पोरेशन (चलभाष : ९३५२७६९१८३, ९३२४७८१९३०)

प्राणी मात्र के हितकारी वैदिक धर्म का सजग प्रहरी

वैदिक संसार

आरएनआई–एमपीएचआईएन
२०१२/४५०६९
डाक पंजीयन : एमपी/आईडीसी/२०१८–२०
वर्ष : ९, अंक : ११
अवधि : मासिक, भाषा : हिन्दी
प्रकाशन आंग्ल दिनांक : २५ सितम्बर, २०२०
आर्ष तिथि : आश्विन मास, शुक्ल पक्ष, नवमी तिथि
सृष्टि सम्वत् : १,९७,२९,४९,१२२
शक सम्वत् : १९४२
विक्रम सम्वत् : २०७७, दयानन्दाब्द : १९७

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक
सुखदेव शर्मा, इन्दौर
०९४२५०६९४९१

सम्पादक
गजेश शास्त्री, इन्दौर (म.प्र.)
(अवैतनिक)

प्रकाशन स्थल एवं पत्र व्यवहार का पता
१२/३, संविद नगर, इन्दौर–१८, मध्यप्रदेश

वैदिक संसार का आर्थिक आधार

संरक्षक (१५ वर्ष)	२५,०००/–
आजीवन सहयोग (१५ वर्ष)	२,५००/–
पंचवार्षिक सहयोग :	१,१००/–
त्रैवार्षिक सहयोग	७००/–
वार्षिक सहयोग	३००/–
एक प्रति	२५/–
अन्य सहयोग	स्वैच्छानुसार

बैंक खाता धारक– वैदिक संसार
भारतीय स्टेट बैंक
शाखा : ओल्ड पलासिया, इन्दौर
चालू खाता क्र. ३२८५९५९२४७९
आईएफएससी : एसबीआईएन०००३४३२ ← **बैंक खाते का विवरण।**

अध्यात्म के विषय में व्याप्त अन्धकार को दूर करने एवं वेदोक्त ज्ञान के प्रकाश को प्रकाशमान करने में सहायक ज्योति पुंज : 'वैदिक संसार'

अनुक्रमणिका

विषय	शब्द संग्रहकर्ता	पृष्ठ क्र.
वेद मन्त्र : भावार्थ एवं वैदिक संसार के उद्देश्य	वैदिक संसार	०४
आर्यावर्त के महत्वपूर्ण पर्व एवं दिवस	श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम्	०४
अमृतमयी वेदवाणी : साम अथर्व वेद शतक	स्वामी शान्तानन्द सरस्वती	०५
बगैर वेद ज्ञान के मानवोचित व्यवहार तथा....	सम्पादकीय	०५
आर्य समाज क्या नहीं मानता!	आचार्य रामज्ञानी आर्य	११
हमारी महान विभूतियाँ : स्वामी रामतीर्थ	शिवनारायण उपाध्याय	१२
: प. श्यामजी कृष्ण वर्मा	देवनारायण भारद्वाज	१५
भगवान श्रीराम जन्मभूमि गर्भगृह का भूमिपूजन घोर...	गजेन्द्रसिंह आर्य	१७
आयुर्वेद अपनाओ–कोरोना भगाओ	नन्दलाल निर्भय	१९
आओ! जानें कुछ ऐतिहासिक तथ्य	इन्द्रदेव गुलाटी	२०
भगवान विश्वकर्मा का विहंगम स्मारक/अयोध्या...	डॉ. लक्ष्मी निधि	२१
सैद्धान्तिक चर्चा (भाग–७) (गतांक से आगे)	कमलेश कुमार अग्निहोत्री	२२
सत्यार्थ प्रकाश काव्य सुधा (गतांक से आगे)	आचार्य देवनारायण तिवारी	२३
प्रतिक्रिया : सरदार वल्लभभाई पटेल जयन्ती पर...	सावरकरवाद प्रचार सभा	२४
हम पूर्वाग्रह से ग्रसित परम्परावादी नहीं अपितु...	उम्मेदसिंह विशारद	२५
दशहरा अर्थात् विजयादशमी	डॉ. गंगाशरण आर्य	२७
अध्यात्म का सरल व सही मार्ग क्या है?	मोहनलाल दशोरा	२९
कोरोना	सुन्दरलाल चौधरी	३०
पुस्तक परिचय : श्री कृष्ण गौरव गाथा	महात्मा देवमुनि	३१
हिन्दी की वर्ण मंजु मंजरी	चौधरी बदनसिंह	३१
त्याग देता है सच्चा सुख	रोहिताश्व जांगिड	३२
रोज एक टमाटर खाने से डॉक्टर आपसे दूर रहेगा	हरिश्चन्द्र आर्य	३२
बेटियों के लिए	आर्य पी.एस. यादव	३३
ब्रह्म बेला	रमेशचन्द्र भाट	३३
बेहाल और निहाल	खुशहालचन्द्र आर्य	३४
वानप्रस्थ साधक आश्रम की गतिविधियाँ	वैदिक संसार	३४

वैदिक संसार आपके सहयोग की बाँट जोह रहा है

वैदिक संसार के समस्त पाठकगणों की सेवा में विनम्र अनुरोध है कि वैदिक संसार विगत नौ वर्षों से निर्बाध गति से अनवरत प्रकाशित होता आ रहा है तथा २५ सितम्बर २०२० को अपनी जीवन यात्रा के दसवें वर्ष में प्रवेश कर रहा है।

कोरोना महामारी आपदा के कारण समूचे संसार की विकास गति ठप्प हो गई है। वैदिक संसार भी इसे अछूता नहीं है। फिर भी हम प्रकाशन को नियमित बनाए रखने का प्रयास कर रहे हैं। बाहरी आवागमन न होने से आर्थिक संकट का सामना वैदिक संसार को करना पड़ रहा है। आप स्नेहीजनों से विनम्र आग्रह है कि अपनी सात्विक कमाई का इस पवित्र कार्य में सहयोग कर पुण्यार्जन करें। वैदिक संसार आपका आभारी रहेगा। जिन महानुभावों द्वारा उदारतापूर्वक सहयोग किया गया है उन सभी का हृदय की गहराइयों से हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं। धन्यवाद।

● **सुखदेव शर्मा** (प्रकाशक : वैदिक संसार)

वेद मन्त्र एवं भावार्थ

ओ३म् नहि त्वा रोदसी उभे ऋघायमाणमिन्वतः।
जेषः स्वर्वतीरपः सं गा अस्मभ्यं धूनुहि।। –ऋ. १.१०.८

भावार्थ : जब कोई पूछे कि ईश्वर कितना बड़ा है, तो उसका उत्तर यह है कि जिसको सब आकाश आदि बड़े–बड़े पदार्थ भी घेर में नहीं ला सकते, क्योंकि वह अनन्त है। इससे सब मनुष्यों को उचित है कि उसी परमात्मा का सेवन, उत्तम–उत्तम कर्म करने और श्रेष्ठ पदार्थों की प्राप्ति के लिए उसी की प्रार्थना करते रहें। जब जिसके गुण और कर्मों की गणना कोई नहीं कर सकता, तो कोई उसके अन्त पाने को समर्थ कैसे हो सकता है?

श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम् अनुसार आर्यावर्त्त के ९ गते, ऊर्ज मास से ९ गते, सहस् मास, शक सम्वत् ११४२ तक तथा आश्विन मास, शुक्ल पक्ष, पूर्णिमा तिथि से कार्तिक मास, शुक्ल पक्ष, पूर्णिमा तिथि, विक्रम सम्वत् २०७७ तदनुसार दिनांक १ अक्टूबर से ३१ अक्टूबर सन् २०२० तक के महत्वपूर्ण पर्व एवं दिवस

भारत के एकमात्र वैदिक पंचांग से

०९ गते	ऊर्ज मास	आश्विन शुक्ल पूर्णिमा	१ अक्टूबर	वाल्मीकि जयन्ती, शरद पूर्णिमा
१० गते	ऊर्ज मास	आश्विन कृष्ण प्रतिपदा	२ अक्टूबर	लाल बहादुर शास्त्री एवं मोहनदास गाँधी जयन्ती
११ गते	ऊर्ज मास	आश्विन कृष्ण द्वितीया	३ अक्टूबर	पंचक समाप्त– २९:२०, विश्व पर्यावास दिवस
१२ गते	ऊर्ज मास	आश्विन कृष्ण द्वितीया	४ अक्टूबर	विश्व पशु कल्याण दिवस
१३ गते	ऊर्ज मास	आश्विन कृष्ण तृतीया	५ अक्टूबर	रानी दुर्गावती जयन्ती
१४ गते	ऊर्ज मास	आश्विन कृष्ण चतुर्थी	६ अक्टूबर	कृतिका– २९:४९, डॉ. मेघनाथ शाह जयन्ती, गुरु हरराय पुण्यतिथि
१५ गते	ऊर्ज मास	आश्विन कृष्ण पंचमी	७ अक्टूबर	वीरांगना दुर्गा भाभी जयन्ती, गुरु गोविन्दसिंह पुण्यतिथि
१६ गते	ऊर्ज मास	आश्विन कृष्ण षष्ठी	८ अक्टूबर	मृगशिरा– १९:२३, जयप्रकाश नारायण व मुंशी प्रेमचन्द पुण्यतिथि, भारतीय वायुसेना दिवस
१७ गते	ऊर्ज मास	आश्विन कृष्ण सप्तमी	९ अक्टूबर	गुरु रामदास जयन्ती, विश्व डाक दिवस
१८ गते	ऊर्ज मास	आश्विन कृष्ण अष्टमी	१० अक्टूबर	राष्ट्रीय डाक दिवस
१९ गते	ऊर्ज मास	आश्विन कृष्ण नवमी	११ अक्टूबर	पुष्य– ३०:१७, रवि–पुष्य योग, जयप्रकाश नारायण जयन्ती, अन्तर्राष्ट्रीय बालिका दिवस, बाजी राउत बाल शहीद दिवस
२० गते	ऊर्ज मास	आश्विन कृष्ण दशमी	१२ अक्टूबर	डॉ. राममनोहर लोहिया जयन्ती
२१ गते	ऊर्ज मास	आश्विन कृष्ण एकादशी	१३ अक्टूबर	मघा– २९:४३
२३ गते	ऊर्ज मास	आश्विन कृष्ण त्रयोदशी	१५ अक्टूबर	क्षय तिथि चतुर्दशी– २८:५५, धनतेरस, शास्त्रार्थ चतुर्दशी, हनुमान जयन्ती, वीरांगना दुर्गा भाभी व पं. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' पुण्यतिथि, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जयन्ती
२४ गते	ऊर्ज मास	आश्विन कृष्ण अमावस्या	१६ अक्टूबर	हस्त– २५:२३, चित्रा– २६, नव शस्येष्टि पर्व (दीपावली), महावीर स्वामी निर्वाण दिवस, विश्व खाद्य दिवस
२५ गते	ऊर्ज मास	कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा	१७ अक्टूबर	स्वामी रामतीर्थ पुण्यतिथि, कर्मवीर जयानन्द भारतीय जयन्ती
२७ गते	ऊर्ज मास	कार्तिक शुक्ल तृतीया	१९ अक्टूबर	अनुराधा– २६:३७, डॉ. सुब्रह्मण्यम चन्द्रशेखर जयन्ती
३० गते	ऊर्ज मास	कार्तिक शुक्ल षष्ठी	२२ अक्टूबर	उत्तराषाढ़– १५:३६, अशफाक उल्ला खाँ एवं स्वामी रामतीर्थ जयन्ती
०१ गते	सहस् मास	कार्तिक शुक्ल सप्तमी	२३ अक्टूबर	वृश्चिक संक्रान्ति– ०४:३२
०२ गते	सहस् मास	कार्तिक शुक्ल अष्टमी	२४ अक्टूबर	पंचक प्रारम्भ– २५:००
०५ गते	सहस् मास	कार्तिक शुक्ल एकादशी	२७ अक्टूबर	बन्दा बैरागी एवं जतीन्द्रनाथ दास जयन्ती
०८ गते	सहस् मास	कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी	३० अक्टूबर	डॉ. होमी जहाँगीर भाभा जयन्ती
०९ गते	सहस् मास	कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा	३१ अक्टूबर	पंचक समाप्त– ११:२६, सरदार वल्लभभाई पटेल एवं इन्दिरा गाँधी जयन्ती

नवीन पंचांग अतिशीघ्र मँगवाएँ, लाभ उठाएँ

किसी भी शंका–समाधान एवं पंचांग प्राप्ति हेतु आ. दार्शनिय लोकेश, ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.) से मो. ०९४१२३५४०३६ पर सम्पर्क करें

अन्य स्रोतों से प्राप्त अक्टूबर माह के कुछ विशेष दिवस

१. राष्ट्रीय रक्तदान दिवस, अन्तर्राष्ट्रीय वृद्ध दिवस, रायबहादुर डॉ. हीरालाल जयन्ती, विश्व शाकाहारी दिवस। २. अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस। ३. विश्व प्रकृति दिवस। ४. पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा जयन्ती, राष्ट्रीय अखण्डता दिवस एवं इन्दिरा गाँधी जयन्ती, विश्व अन्तरिक्ष सप्ताह (४–१०)। ५. विश्व आवास दिवस, विश्व शिक्षक दिवस। ८. विश्व वयोवृद्ध दिवस, पं. उमाकान्त उपाध्याय जयन्ती (दीपावली १९३०) ९. कोलम्बस दिवस, विश्व पोस्ट दिवस, कांशीराम जयन्ती। १०. विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस, अन्तर्राष्ट्रीय मृत्युदण्ड विरोध दिवस। ११. विश्व गठिया रोग निवारण दिवस। १३. अन्तर्राष्ट्रीय आपदा न्यूनीकरण दिवस, विश्व दृष्टि दिवस। १४. हिन्दी दिवस। १५. अन्तर्राष्ट्रीय ग्रामीण महिला दिवस, विश्व छात्र दिवस, सुरक्षित मातृत्व सप्ताह (१५–२१)। १६. कान्हा राष्ट्रीय उद्यान दिवस, विश्व एनेस्थेशिया दिवस। १७. महाराज अग्रसेन जयन्ती, विश्व निर्धनता उन्मूलन दिवस, विश्व आघात दिवस। २१. पुलिस स्मरणोत्सव दिवस, आजाद हिन्द फौज स्थापना दिवस। २४. पुलिस स्मृति दिवस, विश्व पोलियो दिवस, विश्व विकास सूचना दिवस, विश्व आयोडीन अल्पता दिवस। २६. पं. गणेश शंकर विद्यार्थी जयन्ती। ३०. विश्व मितव्ययिता दिवस। ३१. संकल्प दिवस, एकता दिवस।

वैदिक संसार के उद्देश्य

- जगत् नियन्ता परमपिता परमात्मा द्वारा मानव की उत्पत्ति के साथ सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याणार्थ दिए गए ज्ञान– वेदों की महत्ता को पुनर्स्थापित करने हेतु वैदिक सिद्धान्तों, ऋषि–मुनियों एवं ऋषि दयानन्द प्रणीत सन्देशों को प्रकाशित करना।
- महान् योगी, संन्यासी, महर्षि, अखण्ड ब्रह्मचारी, वेद प्रतिष्ठापक, तत्वज्ञानी, युगदृष्टा, स्व राष्ट्रप्रेमी, स्वराज्य के प्रथम उद्घोषक, नवजागरण के सूत्रधार, शोषित–पीड़ित वर्ग एवं महिला उद्धारक, समाज सुधारक, खण्डन–मण्डन के प्रणेता, अन्धविश्वास नाशक, पाखण्ड खण्डनी ध्वजा वाहक, आर्य समाज संस्थापक, अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश एवं वेदानुकूल सद्–साहित्य के रचयिता, दयालु, दिव्य, अमर बलिदानी महर्षि दयानन्द सरस्वती के समस्त मानव जाति पर किये गये उपकारार्थ कार्यों को गतिमान बनाए रखने हेतु प्रयत्न करना।
- आमजन में व्याप्त अज्ञानता, धर्मान्धता, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियों के विरुद्ध जन जागरण कर उन्मूलन हेतु प्रयास करना।
- आर्य (श्रेष्ठ) विद्वान् महानुभावों के मन्तव्यों, सन्देशों का प्रचार–प्रसार कर प्रतिजन को उपलब्ध करवाना।
- आवश्यक सूचनाओं, गतिविधियों, समाचारों को प्रतिजन तक पहुँचाने का प्रयास करना।

अमृतमयी वेदवाणी

साम-अथर्व वेद शतक पुस्तक से

● **स्वामी शान्तानन्द सरस्वती**
(एम.ए. दर्शनाचार्य)
प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दर नगर, रोहतक (हरियाणा)
सन्त ओधवराम वैदिक गुरुकुल, भवानीपुर (कच्छ), गुजरात
चलभाष : ९९९८५९४८१०, ९६६४६३०११६

अग्ने मृड महाँ अस्यय आ देवयुं जनम्।
इयेथ बर्हिरासदम्।। (७) –पू. १.१.३.३

शब्दार्थ– अग्ने = हे पूजनीय ईश्वर! हमें, **मृड** = सुखी करो, **महान् असि** = आप महान हो, **देवयुं जनम्** = ज्ञान यज्ञ से आप देव की पूजा चाहने वाले भक्त को, **अयः** = प्राप्त होते हो, **बर्हिः** = यज्ञस्थल में, **आसदम्** = विराजने को, **आ इयेथ** = प्राप्त होते हो।

पद्यार्थ : ***पूज्यनीय परमेश्वर प्यारे, ज्ञानवान हे पिता हमारे।***
देकर निज भक्तों को विद्या, सुख भरते कर वारे न्यारे।
आये हैं हम शरण आपकी, विमल शरण में हमें लगाओ।
श्रद्धा, भक्ति, प्रेम, नम्रता, दे वेदों पर हमें चलाओ।।
–श्रीमती विमलेश बंसल 'आर्या', दिल्ली

विनय : हे पूजनीय परमात्मा! आप अग्नि स्वरूप हैं, ज्ञान स्वरूप हैं और सुख के भण्डार हैं, सुख के सागर हैं, कृपा करके हमें सुखी कर दीजिये। आप महान हैं, ज्ञान की दृष्टि से, बल की दृष्टि से, सब प्रकार की ऐश्वर्य की दृष्टि से। आपसे बड़ा महान् कोई भी नहीं है। आपके महान् गुणों को हमें भी धारण करा दीजिये।

हे प्रभु! जो व्यक्ति ज्ञान यज्ञ के माध्यम से आपकी पूजा करता है, आपकी आज्ञा का पालन करता है, उस भक्त को आप प्राप्त होते हैं। हे परमात्मा! आप हमारे हृदय रूपी यज्ञस्थल में आकर विराजमान होइये। जो भी व्यक्ति इस प्रकार आपकी भक्ति करता है, उसको आप परमात्मा सुखी कर देते हैं। इससे विपरीत जो व्यक्ति आप ईश्वर में श्रद्धा नहीं रखता, वह नास्तिक होता है। ऐसे नास्तिक व्यक्ति को आप परमात्मा कभी भी प्राप्त नहीं हो सकते हैं। नास्तिक व्यक्ति बाहर से सुखी दिख सकता है, किन्तु अन्दर से भयभीत, दुःखी रहता है। अतः हम आज से ही आप ईश्वर की भक्ति उपासना करने में यज्ञ, हवन, स्वाध्याय, सत्संग करने में संलग्न हो जाएँ। जिससे हमारा जीवन सुखमय हो, हमारा कल्याण हो तथा औरों का भी हम कल्याण कर सकें। ■

सम्पादकीय

बगैर वेद ज्ञान के मानवोचित व्यवहार तथा आध्यात्मिक उन्नति कैसे?

वेद ज्ञान के अभाव में स्वाभिमान के प्रतीकों को अन्धविश्वास–पाखण्ड के गढ़ तथा धर्मभीरू बनाने के स्त्रोत ना बना इतिहास ना दोहराएँ, इसके लिए अति आवश्यक देश का नायक (राजा) वेदादि शास्त्रों का ज्ञाता हो...

कोई भी पदार्थ हो अथवा सम्बन्ध उस विषय का ठीक–ठीक ज्ञान होना अति आवश्यक है। इसके बगैर कोई भी पदार्थ हो अथवा सम्बन्ध, उसके प्रति मानव ठीक–ठीक व्यवहार नहीं कर सकता और बगैर ज्ञान की परिस्थिति में जिस पदार्थ अथवा सम्बन्ध के साथ जो–जो व्यवहार किया जा रहा है वह लाभप्रद अथवा सुखद होने के स्थान पर हानिप्रद तथा दुःखद भी हो सकता है।

वैसे तो समस्त प्राणियों के जीवन में ज्ञान का महत्वपूर्ण स्थान है। जिनके पास आँख, नाक, कान, जिव्हा तथा त्वचा अर्थात् ज्ञानेन्द्रियाँ हैं उनके लिए ज्ञान का होना अति आवश्यक है। क्योंकि इन इन्द्रियों को ही ज्ञान इन्द्रियाँ कहा गया है। ज्ञान के अभाव में ज्ञानेन्द्रियाँ कैसी? ज्ञान और जीवात्मा का अटूट सम्बन्ध है। ज्ञान के अभाव में वह निर्जीव हो जाएगा, किन्तु ज्ञान दो प्रकार का होता है– स्वाभाविक ज्ञान और आध्यात्मिक ज्ञान। सामान्य जीवन संचालन व्यवहार का ज्ञान स्वाभाविक ज्ञान की श्रेणी में आता है जो परम पिता परमात्मा द्वारा प्रत्येक जीवात्मा को उसके जीवन के साथ प्रदान किया जाता है। आध्यात्मिक ज्ञान का सम्बन्ध मानव नामक प्राणी से होता है। इस आध्यात्मिक ज्ञान के प्रकाश में वह अपने मानव जीवन की विलक्षणता तथा विशिष्ट प्रयोजन को जान–समझ पाता है और उसकी प्राप्ति कर पाता है। अन्यथा आध्यात्मिक ज्ञान के अभाव में मानव मानव होते हुए भी पशुवत बनकर रह जाता है।

आध्यात्मिक ज्ञान के अभाव में जीवन होते हुए भी निर्जीव होने का सर्वाधिक भय मानव नामक प्राणी को होगा क्योंकि परम पिता परमात्मा की न्यायकारी व्यवस्था के अन्तर्गत इस मानव नामक प्राणी को नैमित्तिक ज्ञान आधारित निर्मित किया गया है। सामान्यतः किसी व्यक्ति के किसी प्रकार की त्रुटि करने पर उसे जानवर अथवा ढोर आदि कह दिया जाता है। यहाँ तक कि उच्च कोटि के बुद्धिजीवी भी किसी अल्पज्ञ मनुष्य के जीवन को पशुवत् जीवन की संज्ञा दे देते हैं। यह न्यायोचित नहीं है। यह

व्यवहार पशु-पक्षियों के मान-सम्मान के प्रति अकारण किया गया दुर्व्यवहार और परम पिता परमात्मा की न्यायकारी व्यवस्था पर प्रश्नचिह्न उत्पन्न करता है क्योंकि मनुष्यों से इतर पशु-पक्षियों का जीवन कहीं अधिक सुव्यवस्थित और नियमानुकूल होता है। पशु-पक्षियों के लिए कहीं कोई विद्यालय, महाविद्यालय, प्रशिक्षण केन्द्र नहीं होते। किसी भी क्षेत्र अथवा देश में ही नहीं अपितु समस्त भू-मण्डल पर पाए जाने वाले एक प्रजाति के पशु-पक्षियों का व्यवहार, आहार, बोली-भाषा आदि समान होते हैं। वे अपनी जाति के नियत नियमों का उल्लंघन नहीं करते जबकि एक मानव जाति का प्राणी जिसे ज्ञान-विज्ञान दिये जाने का उच्च कोटि का प्रबन्ध होकर इसे ज्ञानी बनाने और इसके जीवन व्यवहार को सुव्यवस्थित बनाए रखने हेतु सामाजिक संस्थाएँ, कार्यपालिकाएँ, व्यवस्थापिकाएँ, न्याय पालिकाएँ, संविधान, दण्ड संहिताएँ आदि न जाने कितने प्रबन्ध किये जाकर इसे मानव जीवन मर्यादा में रखने का भरसक प्रयास किया जाता है। फिर भी इसके व्यवहार, आहार, बोली-भाषा में एकरूपता तो दूर, अनेक बार यह ऐसे-ऐसे निम्न स्तरीय कृत्य कर जाता है कि यह मूक कहे जाने वाले प्राणियों को भी पीछे छोड़ देता है और इसे पशुवत संज्ञा देना भी न्यायोचित नहीं होता क्योंकि मानव से इतर प्राणियों को ज्ञान तथा प्रशिक्षण प्रदान किये जाने की कोई व्यवस्था नहीं होती, ना ही उन्हें किसी प्रकार के सामाजिक नियमों और नियमों के उल्लंघन पर दण्डित किये जाने अथवा हेय दृष्टि से देखे जाने का भय होता। उनके लिए कार्यपालिका, व्यवस्थापिका और न्याय पालिका तथा संविधान व दण्ड संहिता आदि का कोई भारी-भरकम प्रबन्ध करना भी नहीं होता है। इसके उपरान्त भी वे अपनी प्रजाति के नियत नियमों का उल्लंघन नहीं करते। अत्यन्त विस्मयकारी तथ्य है कि जिनके लिए किसी प्रकार के ज्ञान-विज्ञान, प्रशिक्षण तथा जीवन को व्यवस्थित संचालित करने की व्यवस्था नहीं, उनका जीवन नियमानुकूल है और अत्यन्त चमत्कृत करने वाला विषय है कि उन समस्त प्राणियों का जीवन व्यवहार अपनी प्रजाति के प्राणियों के व्यवहार के अनुरूप एक समान होता है। उनमें कोई भिन्नता नहीं होती, चाहे उनके भू-भाग की क्षेत्रीय भिन्नता के कारण जलवायु भिन्नता के प्रभाव से रंग-रूप, शारीरिक संरचना में कुछ भिन्नता ही क्यों न हो और अधिकांश यह भी देखने में आया है कि एक प्रजाति के प्राणी आपस में समूह बनाकर संगठित भी रहते हैं। कुछ अपवाद छोड़कर वे अपनी प्रजाति के प्राणी को हानि नहीं पहुँचाते और जिनके लिए ज्ञान-विज्ञान, प्रशिक्षण आदि की भारी-भरकम व्यवस्था है, इसके हेतु उच्च से उच्चतम स्तर पर नित नए प्रयोग इसके जीवन को श्रेष्ठ और श्रेष्ठतम बनाने के लिए किये जाते हों। इस मानव जाति के प्राणी के जीवन को नियमानुकूल सुव्यवस्थित चलाने हेतु इस विलक्षण मानव जाति की अत्यधिक ऊर्जा व्यय होती हो और इस सबके उपरान्त भी यह बुद्धिजीवी कहा जाने वाला प्राणी इतने अत्यधिक घृणित कार्य कर जाता है कि इसके बुद्धिजीवी होने पर प्रश्नचिह्न लग जाता है।

समस्या अति गम्भीर है और समस्या है तो उसका कारण भी अवश्य होगा तथा किसी भी समस्या का कारण खोजें और उस कारण का निवारण किये बगैर समस्या का समाधान सम्भव ही नहीं है। तो आइये, उपरोक्त समस्या जो हमारी अपनी मानव जाति के सुख-शान्तिमय सुरक्षित जीवन के स्थान पर दु:ख-अशान्ति तथा असुरक्षित बने रहने की गम्भीर समस्या है और यह दिन-प्रतिदिन तीव्रता से अति विकराल, भीषणतम होती जा रही है, के समाधान की दिशा में आगे बढ़ने से पूर्व इस समस्या का कारण खोजते हैं।

पशु-पक्षियों, जीव-जन्तुओं यहाँ तक कि वृक्ष-वनस्पतियों का जीवन एक निर्धारित व्यवस्था के अन्तर्गत निहित होता है। उनका सम्पूर्ण जीवन व्यवहार उस व्यवस्था से अटूट बँधा होता है। वे प्राणी चाहकर भी उस व्यवस्था से बाहर जाकर नियत जीवन व्यवहार से विपरीत कर्म नहीं कर सकते और इसी कारण से उन्हें पृथक से कोई ज्ञान-विज्ञान, प्रशिक्षण व व्यवस्थित चलाए रखने हेतु किसी व्यवस्था की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि वे स्वत: व्यवस्था के अधीन होते हैं। उदाहरणार्थ- किसी बन्दीगृह के बन्दी की तरह। बन्दीगृह के बन्दियों को भलीभाँति पता होता है कि वे कहाँ पर हैं, उन्हें कब-कब, क्या-क्या करना है। वे बन्दी किसी व्यवस्था के अधीन होते हैं। उनके लिए अब पृथक से कोई व्यवस्था की आवश्यकता नहीं होती और वे चाहकर भी उस व्यवस्था के बाहर नहीं जा सकते। जबकि बन्दीगृह के बाहर उसी मानव जाति के प्राणी मुक्तावस्था में विचरण करते हैं। उन्हें व्यवस्थित रखने हेतु एक पृथक व्यवस्था की आवश्यकता होती है। ठीक इसी प्रकार पशु-पक्षी, जीव-जन्तु, वृक्ष-वनस्पति अपने पूर्व मानव जीवन में किये गये नि:कृष्ट कर्मों का परम पिता परमात्मा की व्यवस्था के अधीन इस संसार रूपी कारागार में दण्ड भोग रहे हैं। मानव से इतर समस्त योनियाँ भोग योनियाँ हैं। अब वे कर्म करने हेतु स्वतन्त्र नहीं हैं। किसी कारागार के बन्दी की तरह। जिस प्रकार कारागार का बन्दी कारागार की व्यवस्था के अन्तर्गत जीवन व्यतीत करता है, वह संसार के अन्य मनुष्यों की भाँति कर्म करने हेतु स्वतन्त्र नहीं होता वह केवल और केवल अपने नि:कृष्ट कर्मों का दण्ड भोग रहा होता है और जब वह अपने किये कर्म का निर्धारित दण्ड भोग लेता है, तब कारागार से मुक्त कर मनोवांछित कर्म किये जाने हेतु स्वतन्त्र कर दिया जाता है। किन्तु उसके द्वारा किये जाने वाला मनोवांछित कर्म संसार की व्यवस्था जो कारागार की व्यवस्था से भिन्न है, उसे अधिक स्वतन्त्रता प्रदान करने वाली है, के अनुकूल होना चाहिये। इस व्यवस्था के अन्तर्गत आप अपनी सुख-शान्ति के लिए अन्य प्राणियों की सुख-शान्ति का हरण नहीं कर सकते। मानव कृत इस व्यवस्था का नाम संविधान है। आप संविधान के अनुकूल कर्म कर अपना चाहो जितना कल्याण करने के लिए स्वतन्त्र हैं और व्यवस्था के विपरीत जाकर कर्म कर जब अन्य को कष्ट पहुँचाते हैं तो पुन: कारागार में भेज दिये जाते हो। जब तक आप अपना सुधार नहीं करते यह कारागार आवागमन का क्रम यूँ ही चलता रहता है। इसी प्रकार परम पिता परमात्मा प्रदत्त इस संसार का संविधान वेद प्रतिकूल जीवन व्यतीत करने वालों को परम पिता परमात्मा दण्डित कर मानव से इतर योनियों में भेजते हैं। इन योनियों में वे जीवात्माएँ बन्दी की तरह होती हैं। वे किसी बन्दी की तरह कर्म करने हेतु स्वतन्त्र न होकर मात्र अपने कर्मों का फल भोगती हैं। कर्म करने की स्वतन्त्रता न होने से उन्हें विशिष्ट ज्ञान की आवश्यकता न होकर मात्र जीवन संचालित करने के ज्ञान की आवश्यकता होती है। यह ज्ञान जिस प्रभु ने उन्हें उनके कर्मों के अनुरूप जीवन प्रदान किया

है उस जीवन के अनुकूल आवश्यक ज्ञान भी प्रदान किया होता है। इस ज्ञान को स्वाभाविक ज्ञान कहते हैं। अर्थात् जीवन के साथ सम्बद्ध। अब इन प्राणियों को अतिरिक्त ज्ञान अर्जित करने की कोई आवश्यकता नहीं। मानव से इतर योनियों में अपना कर्मफल भोग चुकने अर्थात् दण्ड भोगने के उपरान्त परम पिता परमात्मा इन जीवात्माओं को जन्म–मृत्यु के आवागमन अर्थात् संसार रूपी कारागार से मुक्त होकर समस्त दुःखों से छूटकर परमात्मा के असीम आनन्द की प्राप्ति का विशाल लक्ष्य सम्मुख प्रस्तुत कर विलक्षण मानव जीवन का स्वर्णिम अवसर प्रदान करता है। परम पिता परमात्मा द्वारा प्रदत्त मानव जीवन कर्म करने हेतु स्वतन्त्र होने से नैमित्तिक ज्ञान आधारित है क्योंकि कर्म का आधार ज्ञान है। बगैर ज्ञान प्राप्ति के कोई कर्म नहीं किया जा सकता तथा यह भी ज्ञान आवश्यक है कि कैसे कर्म का कैसा फल प्राप्त होगा। इस व्यवस्था को जानने–समझने के लिए उस व्यवस्थापक ने जिसने इस संसार को आपके लिए बनाया, आपको विलक्षण मानव जीवन प्रदान किया, उसी व्यवस्थापक ने आपको अपने मानव जीवन को, इस संसार को और इस संसार में आपको कैसे रहना है, क्या करना है, क्या नहीं करना है का ज्ञान प्रदान किया होता है। उस ज्ञान का नाम ही वेद ज्ञान है। आपका मनोवांछित कर्म वेद ज्ञान के अनुकूल है तो वह आपके लिए कल्याणकारी है। उसी में आपके मानव जीवन की सफलता–सार्थकता है अन्यथा मानव जीवन निष्फल है।

नैमित्तिक का अर्थ है किसी निमित्त अर्थात् माध्यम से। विशिष्ट प्रयोजन हेतु विशिष्ट कर्म तथा विशिष्ट कर्म हेतु विशिष्ट ज्ञान की आवश्यकता होती है। विशिष्ट ज्ञान वही दे सकता है जो विशिष्ट ज्ञानी हो। परम पिता परमात्मा सर्वज्ञ है, अर्थात् उसमें लेशमात्र भी अल्पज्ञता नहीं।

पिता–पुत्र का परस्पर कैसा व्यवहार हो, पति–पत्नी का परस्पर कैसा व्यवहार हो, गुरु–शिष्य का परस्पर कैसा व्यवहार हो, राजा–प्रजा का परस्पर कैसा व्यवहार हो, ईश्वर स्वरूप का ठीक–ठीक ज्ञान और उसके प्रति हम जीवात्मा का व्यवहार किस प्रकार का होकर वह हमारे लिए लाभप्रद कैसे हो? आदि–आदि ज्ञान हमें कौन देगा? पता चला हमें यह ज्ञान हमारे माता–पिता, गुरुजन आदि देते हैं। प्रश्न उपस्थित हुआ माता–पिता गुरुजन को यह ज्ञान किसने दिया? उत्तर प्राप्त होता है उनके माता–पिता गुरुजनों ने। इस प्रकार हम पीछे की ओर खोजते–खोजते संसार के प्रथम व्यक्ति के पास पहुँच जाते हैं और जानने का प्रयास करते हैं कि संसार में प्रथम व्यक्ति जो उत्पन्न हुआ उसे किसने मानव जीवन के लिए आवश्यक उपरोक्त तथा इसके अतिरिक्त समस्त विषयों का ज्ञान प्रदान किया? इस प्रश्न का उत्तर तो यही होगा और है कि जो उसका निर्माता है, जिसने उसका निर्माण किया और जिस प्रकार इसको विलक्षण बनाया तो इसकी इस विलक्षणता के पीछे उसका कोई विशिष्ट प्रयोजन भी होगा। उस विलक्षणता और विशिष्ट प्रयोजन की सिद्धि के लिए विशिष्ट ज्ञान भी वही प्रदान कर सकता है और करता भी है जो सर्वज्ञ तथा सर्वशक्तिमान है।

इस प्रकार सिद्ध हुआ कि मानव जाति की विलक्षणता उसके विशिष्ट प्रयोजन की सिद्धि में है और विशिष्ट प्रयोजन की सिद्धि तभी सम्भव है जब वह परम पिता परमात्मा प्रदत्त इस संसार के संविधान अर्थात् वेद ज्ञान से सम्बद्ध रहता है। जब तक मानव जाति के प्राणी इस वेद ज्ञान से सम्बद्ध रहते हैं, तब तक इनके मानव जीवन की उत्कृष्टता बनी रहती है तथा मानव जाति के लिए ही नहीं अपितु प्राणी मात्र के लिए इस मानव नामक प्राणी का व्यवहार सुख–शान्ति प्रदान करने वाला होता है। इस मानव से किसी प्राणी को किसी प्रकार की असुरक्षा का भय उत्पन्न नहीं होकर यह सबके लिए मित्रवत् सहयोगी तथा सुख–शान्ति का प्रदाता बन जाता है तथा जब यह वेद ज्ञान से अपना सम्बन्ध तोड़कर दूरी बनाता है तो अन्य प्राणियों के लिए तो इसका व्यवहार कष्टप्रद होता ही है, स्वयं का जीवन भी दुःखों–कष्टों से परिपूर्ण हो इसका मानव जीवन व्यर्थ व्यतीत हो जाता है और यह जीवात्मा अनेक जन्म–जन्मान्तरों तक मानव योनि से इतर दुःख सागर में गोते लगाता रहता है।

विचारणीय प्रश्न है कि इस धरा पर अनेक देश हैं। उन देशों के संचालनकर्ताओं के द्वारा स्थापित एक व्यवस्था होती है। उस व्यवस्था के अधीन समस्त जन सुरक्षित, सुख–शान्ति पूर्वक रहते हुए अपना विकास करते हैं। इस व्यवस्था को संविधान कहते हैं। इस संविधान रूपी व्यवस्था में समय–समय पर आवश्यकतानुसार संशोधन तथा नवीन विधान सम्मिलित किये जाते हैं। इस कार्य को किये जाने हेतु सामान्यजन द्वारा नियुक्त जनप्रतिनिधि अधिकृत होते हैं। उपरोक्त व्यवस्था मानवीय व्यवस्था है किन्तु जिसने इस संसार को बनाया, भाँति–भाँति के पदार्थ तथा प्राणी बनाए, उसकी भी तो अपनी कोई व्यवस्था अर्थात् संविधान होगा? वह सर्वज्ञ होने के साथ पक्षपाती भी नहीं अर्थात् सबके साथ समान व्यवहार करता है। इस कारण वह संसार की रचना के साथ ही समस्त प्राणियों के लिए आवश्यक ज्ञान एक बार में ही प्रदान कर देता है जिसका लाभ आदि से लेकर अन्त तक समस्त प्राणियों को समान रूप से मिलता है। इस कारण परमात्मा प्रदत्त संविधान (वेद) में कभी भी किसी भी प्रकार के, किसी भी समय संशोधन तथा अन्य कोई कुछ जोड़ने–हटाने की आवश्यकता नहीं होती। वेद प्रत्येक काल में परिपूर्ण होते हैं। इसीलिए वेद ज्ञान सार्वकालिक है। अर्थात् प्रत्येक कालखण्ड में प्रासंगिक है। वेद सम्पूर्ण पृथ्वी के वासी समस्त मनुष्यों के लिए समान रूप से आवश्यक होने से सार्वभौमिक अर्थात् सम्पूर्ण भू–भाग के लिए तथा सार्वजनिन अर्थात् मनुष्य मात्र के लिए भी है। वेद ज्ञान से सम्बद्ध रहने पर ही मानव का व्यवहार अनुकूल तथा वेद ज्ञान से सम्बन्ध छूटने पर प्रतिकूल होते देर नहीं लगती। इस कथन की पुष्टि तथा वेद की प्रासंगिकता को लेकर मानव जीवन का सर्वोत्कृष्ट संविधान मनुस्मृति के कुछ प्रसंगों को सम्मुख प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं। पाठक विस्मित हो रहे होंगे कि लेख में वेद को संसार का संविधान प्रस्तुत किया गया है और मानव जीवन का सर्वोत्कृष्ट संविधान **'मनुस्मृति'** को बताया जा रहा है। जी हाँ! वेद और मनुस्मृति पृथक–पृथक और विरोधाभासी नहीं है। मनुस्मृति का आधार वेद ही है। वेद का ज्ञान परमात्मा द्वारा सम्पूर्ण मानव जाति के लिए प्रदत्त होने से इसे संसार का संविधान कहो अथवा मानव जाति का संविधान कहो, बात एक ही है। मनु महाराज ने वेद के आधार पर ही वेद के गूढ़ रहस्यों का सरलीकरण कर मानव जाति पर महान् उपकार किया है।

मानव जाति की संगठित सबसे लघु इकाई परिवार होता है। आइये!

देखते हैं कि मनु महाराज परिवार के विषय में क्या कहते हैं?

मनु महाराज विवाह संस्कार हेतु योग्य पात्रों की व्यवस्था देते हैं कि गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करने वाले युवक-युवती साङ्गोपाङ्ग वेदों के ज्ञाता हों। उनसे जब जानने का प्रयास किया गया कि साङ्गोपाङ्ग चारों वेदों के ज्ञाता न हो तो क्या करें? उन्होंने क्रमश: तीन-दो के पश्चात् न्यून से न्यून एक वेद पढ़े होने की अनिवार्यता जताई अन्यथा वेद ज्ञान विहीन व्यक्ति का विवाह न किया जाए। मनु महाराज ने इतनी कठोर व्यवस्था क्यों दी कि जिसने एक भी वेद नहीं पढ़ा हो उनका विवाह न किया जाए। क्या कारण है? इसमें कौनसा रहस्य छुपा है? आइये! विचार करते हैं। सर्वप्रथम जिसने एक भी वेद नहीं पढ़ा होगा वह वेद ज्ञान की महत्ता को नहीं जान पाएगा। इस कारण उसकी वेदों के प्रति निष्ठा नहीं होगी और ऐसे व्यक्ति की अन्य वेदों को भी पढ़ने की अपने जीवन में सम्भावना नहीं होगी।

गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करने वाले जिन प्रतिभागियों ने न्यून से न्यून एक वेद भी नहीं पढ़ा होगा, उनके जीवन में वेदों की महत्ता तथा निष्ठा न होने तथा गृहस्थ दायित्व बोझ तले दबे होने से उनका भविष्य में भी वेद ज्ञान अर्जित करने का मार्ग अवरुद्ध हो जाएगा और वे वेद ज्ञान विहीन ही रह जाएँगे। जिस कारण वे अपने मानव जीवन के चरम और परम लक्ष्य मोक्षानन्द की प्राप्ति को नहीं जान पाएँगे। इस कारण उनका मनुष्य जीवन निष्फल हो जाएगा। ऐसे वेद ज्ञान विहीन स्त्री-पुरुष पति-पत्नी के प्रति तथा पत्नी-पति के प्रति अपने-अपने दायित्वों का निर्वहन ठीक से नहीं कर पाएंगे। पति-पत्नी का दायित्व मात्र सहवास कर संतान उत्पत्ति करने मात्र का नहीं है। यह तो गौण विषय है। इसकी चर्चा आगे करेंगे। पति-पत्नी का मुख्य दायित्व धर्म अर्जित करने में परस्पर एक-दूसरे के सहायक की भूमिका का निर्वाह करने का होता है। वेद ज्ञान विहीन व्यक्ति अपने इस मुख्य पुरुषार्थ **'धर्म'** को अर्जित करना तो दूर, जान-समझ भी नहीं पाएगा जिसके अर्जित करने के पश्चात् दो पुरुषार्थ **'अर्थ'** और **'काम'** अर्जित होते हैं और तीन पुरुषार्थों **'धर्म', 'अर्थ'** और **'काम'** के वेदानुकूल सिद्ध होने पर चौथा पुरुषार्थ **'मोक्ष'** जो मानव जीवन का चरम और परम लक्ष्य है, स्वत: सिद्ध हो जाता है। इसके पश्चात् सन्तान उत्पत्ति का क्रम आता है। किन्तु सन्तान तो पशु-पक्षी, जीव-जन्तु भी उत्पन्न करते हैं। मानव और अन्य प्राणियों के सन्तान उत्पन्न करने में क्या कोई भेद है अथवा समान है? वेद कहता है **'मनुर्भव जनया देव्यम् जनम्'** अर्थात् मनुष्य बनो। इसका तात्पर्य है जिसके लिए तुम्हें मनुष्य जीवन मिला है उसे जानो-समझो और उसे पूर्ण मनोयोग से सिद्ध करो। तभी मनुष्य जीवन मनुष्य जीवन है, अन्यथा मनुष्य और पशु में कोई भेद नहीं। आगे कहते हैं **'जनया देव्यम् जनम्'** अर्थात् देवताओं को जन्म दो। इसका तात्पर्य है कि आपकी सन्तान दिव्य गुणों से युंक्त हो। आपसे प्रश्न करते हैं क्या कोई पशु-पक्षी दिव्य गुणों से युक्त सन्तान उत्पन्न कर पाएगा? और जो मनुष्य होते भी पशुवत् आहार, निद्रा, भय, मैथुन के जाल में उलझकर अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं, क्या वे अपनी सन्तानों को दिव्य गुणों से युक्त कर पाएँगे? सन्तान खाने-पीने, मौज-मस्ती करने तथा धन-सम्पत्ति का उत्तराधिकारी बनाने मात्र के लिए नहीं होती, अपितु सन्तान के माध्यम से भी धर्म अर्जित होता है। सन्तान को शास्त्रोक्त रूप से प्रजा कहा जाता है। पशु-पक्षियों के शिशु प्रजा नहीं कहलाते। प्रजा अर्थात् जिसका जन्म विशिष्ट प्रयोजन के लिए हुआ हो। आपकी प्रजा वेद निष्ठ ज्ञानी होकर धार्मिक है, परोपकारी है तो उसके द्वारा अर्जित पुण्य के आप भी भागी हैं और अगर आपकी सन्तान दुष्ट-दुराचारी है, पाप कर्मों में लिप्त है तो उसके द्वारा अर्जित पाप के क्या आप भागी नहीं होंगे? यही **'पितृदोष'** है कि आपने इस संसार को एक सुसन्तान नहीं दी। भूमि-अन्तरिक्ष सम भेद वेद ज्ञानी तथा वेद ज्ञान विहीन गृहस्थी का होता है। इसीलिए मनु महाराज ने सचेत-सावधान किया कि न्यून से न्यून एक वेद भी नहीं पढ़े वह चाहे युवक हो अथवा युवती, उनका विवाह न किया जाए अन्यथा पारिवारिक व्यवस्था बिगड़ जाएगी और ऐसे लोगों से समूची संसार की व्यवस्था बिगड़ जाएगी। जो वर्तमान में सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रहा है।

एक समय था जब इस आर्यावर्त भूमि पर गुरुकुल आश्रम होते थे, वृद्धाश्रम का कोई उल्लेख इतिहास में कहीं नहीं पाया जाता। जो दिन-दूने, रात-चौगुने कुकुरमुत्तों की तरह बढ़ रहे हैं।

परिवार व्यक्ति के निर्माण की प्रथम पाठशाला है और माता-पिता इस पाठशाला के ज्येष्ठ और श्रेष्ठ गुरु हैं। परिवार के पश्चात् मानव समाज की दीर्घ संगठित इकाई राज व्यवस्था है। जिस प्रकार परिवार व्यक्ति निर्माण की प्रथम पाठशाला और उसके ज्येष्ठ और श्रेष्ठ गुरु माता-पिता हैं ठीक उसी प्रकार राज व्यवस्था मानव निर्माण का महाविद्यालय और राजा उसका प्राचार्य है। परिवार से शिक्षित व्यक्ति को राज व्यवस्था और अधिक परिपक्व और सुदृढ़ बना उसे दीक्षित करती है। अगर किसी व्यक्ति के निर्माण में पारिवारिक पाठशाला में कोई न्यूनता रह गई तो उस न्यूनता को दूर कर एक सजग-जिम्मेदार नागरिक का निर्माण करने का अहम दायित्व राज व्यवस्था का होता है। यह कब सम्भव है? इस सम्बन्ध में मनु महाराज व्यवस्था देते हैं राजा वेदादि शास्त्रों का ज्ञाता हो।

जिस व्यक्ति का किन्हीं कारणों से अपने परिवार में निर्माण नहीं हो पाया उसकी रिक्तता की पूर्णता राज व्यवस्था से हो सकती है क्योंकि राज व्यवस्था से ही शिक्षा और दण्ड व्यवस्था का प्रबन्ध किया जाता है। जब राजा वेदादि शास्त्रों का ज्ञाता होगा तो वह राजकीय शिक्षा व्यवस्था को भी वेदानुकूल स्थापित करेगा और वेदानुकूल शिक्षा ग्रहण करने के उपरान्त भी कोई व्यक्ति वेद विरुद्ध आचरण तथा निषिद्ध कर्मों को कर अन्यों को हानि पहुँचाता अथवा अव्यवस्था, अराजकता उत्पन्न करता है तो उसे दण्डित कर उसका सुधार वेदादि शास्त्रों के ज्ञाता राजा द्वारा ही सम्भव होगा। मनु महाराज कहते हैं कि सोए हुए मनुष्यों में भी दण्ड ही हमेशा जागता रहता है अर्थात् मानव समाज की सुरक्षा दण्ड करता है। राज व्यवस्था का प्रमुख राजा अर्थात् नायक होता है जिस नायक को वेद की प्रासंगिकता का ज्ञान नहीं उससे वेदादि शास्त्रों के ज्ञान के प्रचार-प्रसार तथा वेदानुकूल शिक्षा व्यवस्था व वेद विरुद्ध आचरण पर दण्डित किये जाने की व्यवस्था की आशा कैसे की जा सकती है? हाँ, यह भय अवश्य रहेगा कि उसके वेद विरुद्ध आचरण व्यवहार से सम्पूर्ण मानव जाति पथभ्रष्ट हो सकती है। जैसा कि हम वर्तमान में हमारे देश और दुनिया के नायकों (राजाओं) का आचरण व्यवहार सर्वत्र देख-सुन रहे हैं।

हमारे रक्षामन्त्री उच्च तकनीक से निर्मित लड़ाकू वायुयान राफेल पर स्वस्तिक बनाकर उसकी पूजा कर रहे हैं और उसके पहियों के नीचे

नींबू रख रहे हैं। ऐसे अनेक उदाहरण आम हैं। कोई नायक किसी कार्य का मुहूर्त निकलवा रहा है तो कई ग्रह शान्ति करवा रहे हैं तो कोई जनता में अपनी छवि धार्मिक, परोपकारी बनाने हेतु भण्डारा, भागवत कथा, चुनरी यात्रा आदि न जाने क्या-क्या कर अन्धविश्वास-पाखण्ड के पौधे को खाद-पानी दे रहे हैं।

जबकि नरेन्द्र मोदी सरकार में अभूतपूर्व मानव संसाधन विकास मन्त्री जो कि महर्षि दयानन्द भक्त, वैदिक सिद्धान्तों के ज्ञाता तथा मुम्बई के पुलिस कमिश्नर पद पर अपनी सेवाएँ दे चुके उच्च शिक्षित को डार्विन के सिद्धान्त मानव बन्दर से मानव बना को असत्य तथा अवैज्ञानिक बताने तथा नमामि गंगे योजना के अन्तर्गत गंगा को प्रदूषण मुक्त रखने हेतु गंगा में अस्थियाँ विसर्जित करने को अवैदिक तथा अवैज्ञानिक बताने पर देश भर में धर्म और ईश्वर के नाम पर अपनी ठगी की दुकान चलाने वाले लाल-पीले हो गए और वोट बैंक के भय से विद्वान् मन्त्री को अभूतपूर्व के स्थान पर भूतपूर्व बना दिया गया। जब योग्यों की उपेक्षा तथा अयोग्यों का सत्कार होगा तो कैसे मानव जाति और राष्ट्र का उद्धार हो सकता है?

अति तो तब हो गई जब प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा राम मन्दिर निर्माण का अवेदोक्त विधि से मुहूर्त निकलवाकर भूमि पूजन किया गया तथा भूमि पूजन के पूर्व जिस प्रकार दण्डवत होकर जड़ मूर्ति को अभिवादन किया। प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या माननीय प्रधानमन्त्री वेद शास्त्रों के ज्ञाता होते तो इस तरह का आचरण व्यवहार करते? और उनके इस वेद विरुद्ध आचरण व्यवहार का आम जन मानस में क्या सन्देश जाएगा? हम राम मन्दिर निर्माण के विरोधी नहीं हैं। ना ही राम मन्दिर में राम मूर्ति अथवा अन्य मूर्ति लगने के विरोधी हैं। हमारी आपत्ति जड़ के साथ जो चेतन का व्यवहार किया जा रहा है, मात्र उसकी आपत्ति है। वेद हमें दिशा देता है कि जड़ के साथ जड़ का व्यवहार और चेतन के साथ चेतन का किया गया व्यवहार हितकारी होता है। इसमें क्या गलत है? राम मन्दिर तथा भगवान श्री रामचन्द्रजी की मूर्ति हमारे स्वाभिमान तथा गौरव का स्मारक हो सकता है। भगवान राम की मूर्ति राम के वेदानुकूल आदर्शों को जीवन में उतारने की प्रेरणा स्त्रोत तो हो सकती है तथा इस प्रकार इससे लाभ प्राप्त किया जा सकता है तो कोई हानि नहीं है किन्तु जड़ मूर्ति का जलाभिषेक तथा कंकू-चावल व पुष्प-पत्र आदि से पूजा तथा मात्र राम-राम नाम रटने से क्या लाभ हो सकता है? अपितु मानव के अन्धविश्वास, पाखण्ड व धर्मभीरू होने की हानि अधिक दिखाई देती है।

वर्तमान हलातों में हम अकूत धन-सम्पदा तथा हमारी ऊर्जा व्यय कर अन्धविश्वास-पाखण्ड के गढ़ तथा वेद ज्ञान विहीन धर्म भीरू उत्पन्न करने का कार्य कर रहे प्रतीत होते हैं। इससे मानव जाति तो दूर, हमारा भी कल्याण असम्भव है तथा इसके उलट हानि अधिक है क्योंकि हम इतिहास से शिक्षा प्राप्त करने के स्थान पर उसकी उपेक्षा कर रहे हैं। हमें गहनता से विचार करना चाहिये कि हम विश्व गुरु थे तो क्यों थे? क्या हम विश्व गुरु थे उस काल में वेद विरुद्ध जन्मना जातिवाद तथा जड, मूर्ति पूजा जैसे पाखण्ड थे? जन्मना जातिवाद और जड, मूर्ति पूजा दो ऐसे प्रमुख कारक हैं जिसने हमें विश्व गुरु के सर्वोच्च शिखर से पराधीनता के दलदल में ला पटका। यह मात्र हमारा पतन न होकर सम्पूर्ण मानव जाति का पतन था। जब विश्व गुरु की ऐसी दुर्दशा हो जाएगी तो सामान्य जन का क्या कहना; सरदार वल्लभभाई पटेल की विशालकाय मूर्ति **'स्टेच्यु ऑफ यूनिटी'** हो अथवा अयोध्या में सरयू के किनारे स्थापित होने वाली भगवान राम की विशालकाय मूर्ति। अगर ये हमारे देशवासियों में देशभक्ति और उन महापुरुषों के आदर्शों के अनुरूप जीवन जीने की प्रेरणा प्रदान करती है तो इन मूर्तियों का स्थापित किया जाना सार्थक है किन्तु ऐसा प्रतीत नहीं होता। अपितु मूर्तियों और विशालकाय मन्दिरों के निर्माण की प्रतिस्पर्धा सी देखी जा रही है। जिसमें व्यर्थ धन-सम्पदा तथा ऊर्जा नष्ट की जा रही है। यह सब कुछ उस देश में हो रहा है जहाँ अनेक लोगों को दो जून की रोटी उपलब्ध नहीं होती। अनेक बालकों को निर्धनता के अभिशाप के चलते अपनी शिक्षा छोड़ परिवार चलाने में अपने अभिभावकों का हाथ बँटाने हेतु कोई काम-धंधा करना होता है, अनेक रोगी उपचार के अभाव में दम तोड़ देते हैं।

वैसे भी इस देश में मन्दिरों की बाढ़ आई हुई है। परम पिता परमात्मा द्वारा निर्मित मानव रूपी चेतन मूर्ति निर्धन और बेहाल है जबकि मनुष्य द्वारा निर्मित जड, मूर्ति मालामाल होकर अरबपति-खरबपति होकर विधर्मियों, चोरों, लुटेरों, आक्रान्ताओं को निमन्त्रण दे रही है कि आओ, हमें लूटो और तोड़ो जैसे पूर्व में अतीत में किया था। और हम नहीं सम्भले तो एक दिन पुनः यही होगा भी।

हम अरबों-खरबों रुपये व्यय कर **'स्टेच्यु ऑफ यूनिटी'** के रूप में मूर्ति स्थापना इसलिए कर रहे हैं कि लौह पुरुष सरदार पटेल ने देश की ५६१ रियासतों को एक सूत्र में पिरोया था। किन्तु हमारे नायक अपना व्यवहार किस प्रकार कर रहे हैं। अभी हाल ही में मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान ने घोषणा की है कि मध्यप्रदेश में बाहरी व्यक्ति को सरकारी नौकरी नहीं मिलेगी। बताइये, इनके देखा-देखी अन्य प्रदेश भी ऐसा करने लगे तो यह प्रदेश के युवाओं के हित में होगा अथवा अहित में? क्या ऐसे कृत्यों से देश में प्रेम तथा एकता का सूत्रपात होगा अथवा वैमनस्यता और विखण्डता का? जबकि हम वसुधैव कुटुम्बकम् की संस्कृति के अनुयायी हैं और वैसे भी योग्य व्यक्ति के लिए देश-दुनिया कहीं भी कार्य करने के द्वार खुले होना चाहिये। स्वार्थ-संकीर्णता से परिपूर्ण उपरोक्त निर्णय हमारे नायकों की मानसिकता को प्रदर्शित करते हैं।

हमें इतिहास को उपेक्षित न कर उससे शिक्षा प्राप्त करना चाहिये कि महाभारत काल के पश्चात् तथा पराधीनता काल के पूर्व हमारे वेद ज्ञान विहीन राजाओं ने विशालकाय मन्दिरों-दुर्गों, घाटों आदि का निर्माण किया। अकूत धन-सम्पदा उन मन्दिरों में व्यय तथा एकत्र की। परिणाम क्या हुआ? वे मन्दिर विधर्मी आक्रान्ताओं द्वारा लूट लिए गए। मन्दिरों की मानव निर्मित मूर्तियाँ तोड़ दी गईं। मूर्ति विहीन मन्दिरों के ढाँचे को परिवर्तित कर मस्जिदें बना दी गईं तथा परमात्मा कृत श्रेष्ठ कृति मानव को भीषणतम क्रूरतम माध्यमों से काटा-पीटा, जलाया-रौंदा गया। **महर्षि दयानन्द के शब्दों में पत्थर निर्मित जड़ मूर्तियाँ एक मक्खी की टाँग भी न तोड़ सकी।** सच पूछो तो विधर्मी मतों के फलने-फूलने में वेद ज्ञान के स्थान पर जड, मूर्ति पूजा से उपजे अन्धविश्वास, पाखण्ड, के कारण व्यक्ति उन पत्थर की मूर्तियों से रक्षा की झूठी आस लगाए बैठा

रहा जो स्वयं अपनी रक्षा न कर सकी और जन्मना जातिवाद के झूठे दम्भ में मानवीय ऐकता कोसों दूर थी। एक–दूसरे को नीचा दिखाने तथा दूसरे के लूटने–पिटने पर प्रसन्नता होने की आपसी फूट ने खाद–पानी दिया। विधर्मी आक्रान्ताओं को अकूत धन–सम्पदा तो दी ही दी, धर्मस्थलों के विशालकाय ढाँचे भी दिये और आत्मबल से हीन आपसी फूट से ग्रसित तथा शोषित–पीड़ित करोड़ों की संख्या में अनुयायी भी दिये। इन्हीं कुछ कारणों से सत्य सनातन वैदिक धर्म संस्कृति की सम्पूर्ण विश्व में नाद बजाने वाला यह भू–भाग आयातित विधर्मी मतों के अनेक देश देने वाला तथा विधर्मी मतानुयाइयों की विश्व में सर्वाधिक बहुलता वाला चारागाह बन गया और यह क्रम अनवरत जारी है।

इस सबके उपरान्त भी हम वही सब कर रहे हैं जो हमारी दुर्दशा–पराधीनता के कारण थे। क्या हमारा यह व्यवहार हमारे ज्ञानी होने का परिचय देता है? हमारे कार्य तथा व्यवहार ऐसे होने चाहिये जो बुद्धिमत्ता पूर्वक होकर हमारे ही नहीं, सम्पूर्ण मानव जाति को उज्ज्वल भविष्य, सुरक्षा और सुख शान्ति प्रदान करने वाले तथा हमसे वैचारिक विरोध रखने वालों के लिए भी अनुकरणीय हों। जैसे योग दर्शन के सूत्र आसन–प्राणायाम को वैश्विक समर्थन प्राप्त हुआ है व वेदानुकूल नमस्ते अभिवादन को सम्पूर्ण जगत् ने स्वीकार किया है। अनेक बन्धुओं को विचार उत्पन्न होगा कि क्या वर्तमान के हमारे देश तथा दुनिया के नायक (नेता व अधिकारीगण) सब अज्ञानी हैं? उन्हें कोई ज्ञान नहीं है? क्या वेद के ज्ञाता ही ज्ञानी होते हैं? जो वेद के ज्ञानी नहीं हैं वे ज्ञानी नहीं हो सकते? आपका विचार अपनी जगह पूर्ण रूपेण ठीक है। ये लोग ज्ञानी नहीं महाज्ञानी हैं। इन्हें भौतिक साधनों को जुटाने अर्थात् भौतिक उन्नति, धन तथा सत्ता की प्राप्ति येन–केन प्रकारेण कैसे की जावे तथा इन पर अपनी पकड़ कैसे बनाकर रखी जावे, सत्ता तथा धन–सम्पदा को वंश परम्परागत कैसे अपनी विरासत बनाकर रखी जावे, विरोधियों से कैसे निपटा जावे आदि कलाबाजियों में ये पूर्ण पारंगत होते हैं। किन्तु जब मानव को उसके मनुष्य जीवन के लिए अति आवश्यक इस संसार के मूल तथा मुख्य अनादि तथा अनन्त तत्व ईश्वर, जीवात्मा और प्रकृति के ज्ञान अर्थात् मनुष्य जीवन के महत्वपूर्ण विषय आध्यात्मिक उन्नति की बात आएगी तो ये सब महाज्ञानी महा अज्ञानी ही सिद्ध होंगे। इस परीक्षा में ये औंधे मुँह गिरकर पूर्णतया ढपोरशंख ही कहलाने के पात्र होंगे।

राम मन्दिर निर्माण भूमिपूजन के पश्चात् विधर्मी विचारधारा के प्रमुख व्यक्तियों की ओर से वक्तव्य आए कि उस स्थल पर मस्जिद थी, है और रहेगी। कहने को तो और भी बहुत कुछ इसके पूर्व भी पूर्ण दबंगता के साथ कहा जाता रहा है और इस भूमिपूजन के बाद भी कहा गया है, जिससे सभी अवगत हैं। उसकी सम्पूर्ण चर्चा यहाँ करना आवश्यक नहीं। किन्तु उसकी अनदेखी भी करना बिल्ली को देखकर खरगोश का आँखें बन्द कर लेने के समान ही होगा।

वेद विरुद्ध मतों के द्वारा इस खण्डित आर्यावर्त के विशाल भू–भाग को अनेक देशों के रूप में निगल लेने के बाद भी विधर्मी मतानुयाइयों का आक्रामक व्यवहार किस ओर इंगित करता है? इसका स्पष्ट तात्पर्य है कि हम सत्ता पर हमारा आधिपत्य होने से बलात् राम मन्दिर का निर्माण कर रहे हैं और जब इनका समय आएगा, ये पुनः उस स्थान पर मस्जिद बनाएँगे। क्या यही मानव जाति की एकता है? क्या मन्दिर–मस्जिद बनाने–तोड़ने और पुनः बनाने में ही इस मानव जाति का हित है और परम पिता परमात्मा ने इसके लिए ही मनुष्य जीवन प्रदान किया है?

वैसे देखा जाए तो विधर्मी विचारधारा की निराकार, एकेश्वरवाद की मान्यता निष्ठा तथा समर्पण का व्यवहार प्रशंसनीय तथा वेदानुकूल है जो मानव जाति की एकता में सहायक हो सकता है क्योंकि मनुष्य ईश्वरोक्त मान्यता में हठी होता है। वर्तमान में मानव जाति की विखण्डता तथा विवाद का मुख्य कारण ही ईश्वर तथा धर्म सम्बन्धी विभिन्न मान्यताएँ हैं जिन्हें मनुष्य सरलता से नहीं छोड़ता बल्कि प्राण लेने और देने पर तत्पर हो जाता है। भाषा, भूषा, सामाजिक रीति–रिवाज आदि की समस्या तो गौण तथा सामाजिक विषय है। इन विषयों में हठ, दुराग्रह छोड़कर मनुष्य विचार करे तो उसका सुधार सम्भव है और समय के साथ बहुत कुछ बदलता भी है।

और इसके उलट सत्य सनातन वैदिक धर्म संस्कृति के अनुयायी कहे जाने वाले मनुष्य जिनका दायित्व सम्पूर्ण मानव जाति के पथ प्रदर्शक का है। वे अवतारवाद, साकार, जड, मूर्ति पूजावाद, बहुईश्वर जो वेद के सिद्धान्तों के प्रतिकूल है, से ग्रसित होकर अन्धविश्वास–पाखण्ड के दलदल में आकण्ठ डूबे हुए हैं। इन्हें इस दलदल से उबारने हेतु अनेक विभूतियों ने अपने प्राणों तक को न्यौछावर किया है किन्तु यह है कि और नीचे को धँसता जा रहा है।

बगैर वेद ज्ञान के मनुष्य से न तो मानवोचित व्यवहार की उम्मीद की जा सकती है, ना ही आध्यात्मिक उन्नति की और ना ही मानवीय एकता की। वैदिक सिद्धान्तों को सार्वभौम स्थापित करने से ही सम्पूर्ण मानव जाति में एकता तथा परस्पर विश्वास, प्रेम, सौहार्द तथा सुख–शान्ति स्थापित हो सकती है।

आओ लौट चलें वेदों की ओर...। ■

लघुकथा

स्पष्टवादी– दो टूक बात

कल रद्दी वाले से बात हुई तो बोला– आप तौल कर देंगे तो सात रुपये किलो का भाव होगा। मैं तोलूँगा तो साढ़े नौ रुपये किलो।

कैसी साफ स्पष्ट दो टूक बात।

आज डेयरी वाले से दूध पतला होने की शिकायत की तो जवाब मिला कि छियालीस रुपये लीटर में तो ऐसा ही दूध आता है। पचास रुपये के भाव लें तो आपके लिए भी अलग से ले आया करूँगा।

कुछ दिन पूर्व एक सरकारी दफ्तर में मामूली सा काम था। बाहर ही एक सज्जन मिले। समझाया कि महीनों चक्कर काटने पड़ेंगे, जूतों के तल्ले घिस जाएँगे। २००० रुपये खर्च करें तो काम अभी खड़े–खड़े हो जाएगा।

● **ओमप्रकाश बजाज**
विजय विला, १६६– कालिंदी कुंज,
पिपल्याहाना, रिंग रोड, इंदौर (म.प्र.)
चलभाष : ९८२६४९६९७५

आर्य समाज क्या मानता और क्या नहीं मानता!

● **आचार्य रामज्ञानी आर्य**
(पूर्व प्रधानाचार्य)
लार टाउन, देवरिया (उ.प्र.)
चलभाष : ८०५२९८०११६

१. आर्य समाज ईश्वर को साकार (शरीर) नहीं मानता। २. आर्य समाज ईश्वर का अवतार स्वीकार नहीं करता। ३. आर्य समाज ईश्वर को किसी स्थान विशेष में रहने वाला नहीं मानता। ४. आर्य समाज नहीं मानता कि बाहर कहीं ईश्वर को आँखों से देखा जा सकता है। वह आँखों का विषय है ही नहीं। ५. श्रीराम व श्रीकृष्ण ईश्वर के अवतार नहीं, महापुरुष थे। ६. ईश्वर की कई मूर्तियाँ जड़ है, चेतन की तरह उनकी पूजा को आर्य समाज नहीं मानता। ७. ईश्वर दुष्टों को मारने के लिए धरती पर कहीं से उतरकर आता है, यह आर्य समाज नहीं मानता। न ईश्वर जीवात्मा बन सकता है और न जीवात्मा कभी ईश्वर बन सकता है। ९. आर्य समाज जीवात्मा को परमात्मा का स्वरूप या उसका अंश स्वीकार नहीं करता। १०. वेद मनुष्य कृत ज्ञान नहीं है। ११. वेदों में मानवीय इतिहास नहीं है। १२. ईश्वर अपने भोग के लिए सृष्टि की रचना नहीं करता। १३. आर्य समाज जीवात्मा और परमात्मा को एक नहीं मानता। १४. आर्य समाज परमात्मा को अविधान में फँसा हुआ तथा पाप-पुण्य के कर्मों का कर्ता नहीं मानता। १६. आर्य समाज परमात्मा को आनन्द स्वरूप मानता है। जीवात्मा को आनन्द स्वरूप नहीं मानता। १७. सत्व, रज, तम ये प्रकृति के गुण हैं। परमात्मा और जीवात्मा के स्वरूप में ये गुण नहीं हैं। १८. परमात्मा न पाप-पुण्य के कर्म करता है और न सुख-दुःख के रूप में फल भोगता है। १९. सुख-दुःख को अनुभव करने का कारण जीवात्मा के कर्म ही हैं। २०. जीवात्मा का न जन्म होता है न मृत्यु। २१. आर्य समाज परमात्मा, जीवात्मा एवं प्रकृति का उपादान कारण नहीं मानता, तीनों अनादी है। २२. पूर्व जन्म जीवात्मा का नहीं अपितु देह का होता है, कर्मों के अनुसार जीवात्मा को नई देह मिल जाती है। २३. आर्य समाज नित्य मुक्ति नहीं मानता क्योंकि जीवात्मा के कर्म अनन्त नहीं है अत: उसे अनन्त फल के रूप में अनन्त मोक्ष नहीं मिल सकता, मोक्ष से पुनरावृत्ति होती है। २४. आर्य समाज परमात्मा का बन्ध और मोक्ष नहीं मानता। २५. आर्य समाज जीवात्मा परमात्मा और प्रकृति का विनाश नहीं मानता। २६. ईश्वर की भक्ति का सर्वोत्तम तरीका उसकी ध्यानावस्था में उपासना है। नवधा भक्ति को आर्य समाज नहीं मानता। २७. भगवान की मूर्ति बनाकर उसमें प्राण डालना, उसे सुलाना, जगाना, खिलाना, पिलाना, धूप, दीप दिखाना, आरती करना आर्य समाज नहीं मानता। २८. योग का अर्थ है संयम, समाधि की अवस्था में जीवात्मा और परमात्मा का एक रूप हो जाना आर्य समाज नहीं मानता। २९. आर्य समाज सम्प्रदायों को नहीं मानता और सम्प्रदायों को सार्वभौमिक धर्म नहीं मानता। ३०. आर्य समाज किसी मनुष्य को अछूत नहीं मानता। ३१. मरने के बाद कोई भोजन, जल, वस्तु जीवात्मा को पहुँचती है, यह आर्य समाज नहीं मानता। ३२. भूत कहते हैं भूत काल को जो वर्तमान में नहीं रहा वह भूत और प्रेत कहते हैं मृतक शरीर को। मृतक शरीर न किसी को कष्ट दे सकता है और न जीवात्मा किसी अन्य मनुष्य के शरीर में प्रवेश करके किसी को कष्ट दे सकता है। न अकेली जीवात्मा किसी के शरीर में प्रविष्ट होकर किसी को कष्ट दे सकती है क्योंकि उसे कर्मानुसार नई देह अवश्य मिल जाती है। अत: आर्य समाज तथाकथित भूत-प्रेत को नहीं मानता। ३३. नारी को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं है। ऐसा आर्य समाज नहीं मानता। नारी वेद पढ़ सकती है और पढ़ा भी सकती है। ३४. आर्य समाज केवल किसी नदी के पानी को या स्थान को तीर्थ नहीं मानता। न किसी नदी के जल में नहाने से या स्थान के दर्शन से स्वर्ग या मोक्ष की प्राप्ति मानता है। ३५. आर्य समाज मांस या अण्डे को भक्ष्य नहीं मानता। ३६. दुष्ट, हिंसक अपराधी, प्राणी को दण्ड मिले। निरअपराध प्राणी की हिंसा या बलि प्रथा को आर्य समाज नहीं मानता। ३७. आर्य समाज दिनों से सम्बन्धित या तिथियों से सम्बन्धित अथवा ग्रहों से सम्बन्धित व्रतों को नहीं मानता। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह ये महाव्रत हैं। उपवास का अर्थ भोजन छोड़ना नहीं है। इसका अर्थ है गुरु के समीप रहकर ज्ञान प्राप्त करना। ३८. गणित ज्योतिष को आर्य समाज मानता है फलित को नहीं। ३९. आकाश या पाताल में किसी स्थान विशेषकर स्वर्ग या नरक की अवधारणा को आर्य समाज नहीं मानता। ४०. आर्य समाज ब्राह्मण ग्रन्थों को वेद नहीं मानता। ४१. आर्य समाज सहशिक्षा को स्वीकार नहीं करता। ४२. आर्य समाज अधर्म से संचालित राजनीति को स्वीकार नहीं करता है। ४३. आर्य समाज अविद्या में पड़े हुए दुर्व्यसनी चरित्रहीन अपने को भगवान कहने वाले को भगवान नहीं मानता। ४४. पंचक को भद्रापर ग्रहों पर, राशि पर आधारित मुहूर्तों को आर्य समाज नहीं मानता। ४५. आर्य समाज अनमेल विवाह को नहीं मानता। ४६. आर्य समाज दहेज प्रथा को नहीं मानता। ४७. आर्य समाज श्री हनुमानजी को बन्दर, जटायु को पक्षी, जामवन्त को रीछ नहीं मानता। ४८. आर्य समाज सीता की उत्पत्ति भूमि से नहीं मानता। ४९. आर्य समाज मत्स्य, कुर्म, श्रीमद् भागवत आदि १८ पुराणों को नहीं मानता। ५०. आर्य समाज हठयोग को नहीं मानता। ५१. संस्कृत के श्लोकों से रामचरित मानस की चौपाइयों से या तान्त्रिक मन्त्रों से देवयज्ञ में आहूतियों को देना नहीं मानता। ५२. आर्य समाज सृष्टिक्रम के विरुद्ध कल्पना और गप्पों पर आधारित मान्यताओं को नहीं मानता। ५३. आर्य समाज ध्वज को प्रणाम करना या माल्यार्पण करना नहीं मानता। ५४. आर्य समाज मुर्दों पर कब्र पर, चित्र पर या स्मारक पर सम्मान के लिए माल्यार्पण करना नहीं मानता या फूल चढ़ाना नहीं मानता। ५५. आर्य समाज तान्त्रिकों और श्याणों की विद्या को नहीं मानता।

सभी आर्य समाजियों को इन बिन्दुओं का पालन करना चाहिये तथा सिद्धान्त की रक्षा करना चाहिये। ■

वैदिक धर्म सिद्धान्तों के अनुकूल त्रैतवाद अर्थात् ईश्वर जीवात्मा और प्रकृति है। आर्य समाज इस त्रैतवाद का पक्षधर है। इस कारण वह अद्वैतवाद व द्वैतवाद का समर्थक नहीं है ना ही अवतारवाद का समर्थक है। किन्तु एक महान् विभूति के जीवन को प्रस्तुत करने की दृष्टि से उपरोक्त तथ्य प्रस्तुत किये जा रहे हैं। प्रकाशन मण्डल इन अवैदिक तथ्यों का समर्थन नहीं करता। *–सम्पादक*

स्वामी रामतीर्थ

• शिवनारायण उपाध्याय
१३, शास्त्री नगर, दादावाड़ी, कोटा (राज.)
दूरभाष : ०७४४–२५०१७८५

स्वामी रामतीर्थ का जन्म पवित्र गोस्वामी वंश में हुआ। गोस्वामी लोग अपने वंश का सम्बन्ध वशिष्ठ ऋषि से जोड़ते हैं। सन्त तुलसीदास भी इसी वंश में उत्पन्न हुए थे। कालान्तर में गोस्वामी वंश के वैभव में कुछ कमी आने लगी और वे छिन्न–भिन्न होकर समस्त भारत में फैल गए। उन्हीं में से कुछ व्यक्ति गुजरांवाला जिले में आकर बस गए। उनमें से फिर कुछ व्यक्ति मुरारीवाला गाँव में आकर बस गए। इनमें से एक व्यक्ति थे हीरानन्दजी। वे बहुत ही निर्धन थे। पुरोहित वृत्ति से अपनी जीविका चलाते थे। उन्हीं की धर्मपत्नी के गर्भ से २२ अक्टूबर १८७३ को एक शिशु ने जन्म लिया। उसका नाम तीर्थराम रखा गया। बालक के जन्म से एक वर्ष के अन्दर ही उसकी माता का देहान्त हो गया। तीर्थराम की बहन तीर्थदेवी भी उनसे केवल एक वर्ष बड़ी थी। दो–दो बच्चों को सम्भालना पिता के लिए कठिन था। हीरानन्द ने अपनी समस्या अपनी बहन धर्मकौर को बताई। परिणाम स्वरूप धर्म कौर अपने पति ठाकुरदास के साथ जड़ियालां को छोड़कर मुरारीवाला में आ गई और बच्चों को पालने लगी। धर्म कौर अत्यन्त धर्मपरायण महिला थी। वह दोनों बच्चों को लेकर प्रतिदिन मन्दिर जाती थीं। तीर्थराम का मन्दिरों में शंख ध्वनि से अत्यन्त प्रेम हो गया। यदि वे रोते होते और शंख ध्वनि होती तो रोना बन्द कर देते थे। कथा श्रवण से भी उन्हें अत्यन्त प्रेम था।

स्वामी रामतीर्थ

छह वर्ष की अवस्था में उन्हें गाँव की प्रारम्भिक पाठशाला में प्रविष्ट कराया गया। उन्होंने पाँच वर्ष की पढ़ाई केवल तीन वर्ष में पूरी कर ली। वार्षिक परीक्षा में कक्षा में प्रथम आए तो उन्हें छात्रवृत्ति मिल गई। अपने अध्यापक मौलवी मुहम्मद अली में उनकी अपार गुरुभक्ति थी। अध्ययन समाप्त करने के बाद इन्होंने अपने पिता से कहकर घर की एकमात्र गाय भी मौलवी मुहम्मद अली को दिला दी। दस वर्ष की आयु में उनका विवाह रामचन्द्रजी की पुत्री के साथ कर दिया गया। रामचन्द्र बेरके ग्राम तहसील वजीराबाद के निवासी थे। गाँव की पढ़ाई समाप्त करके आगे की पढ़ाई के लिए मुरारीवाला ग्राम छोड़ना आवश्यक था। तीर्थराम की माता के देहान्त के बाद हीरानन्द ने दूसरा विवाह कर लिया था। उनके नए ससुर का नाम नानकचन्द था। वे गुजरानवाला के निवासी थे। हीरानन्द ने तीर्थराम को गुजरानवाला हाईस्कूल में भर्ती करा दिया। गुजरानवाला में हीरानन्द के परम स्नेही मित्र भक्त धन्नाराम रहते थे। धन्नाराम भी तीर्थराम का ध्यान रखने लगे। लगातार साथ रहने से दोनों में प्रगाढ़ स्नेह हो गया। बालक तीर्थराम भक्त धन्नाराम की आज्ञा मिले बिना कोई काम नहीं करता था। धन्नाराम ठठेरे का कार्य करते थे। वे अपनी आय का अधिकांश भाग साधु सेवा में लगा देते थे। जाड़ों में नग्न शरीर रहते और गर्मियों में कपड़े लादकर पहनते थे। वे कवि भी थे। योग वशिष्ठ के अध्ययन से उन्हें अत्यधिक अनुराग था। धन्नाराम को एक अद्वैतवादी महात्मा की कृपा से आत्मा–परमात्मा की अनुभूति हुई। कहते हैं कि उन्हें अलौकिक सिद्धियाँ प्राप्त थी। तीर्थराम की भक्त धन्नाराम में अत्यन्त श्रद्धा उत्पन्न हो जाना स्वाभाविक ही था। कहते हैं कि धन्नाराम को तीर्थराम ने आगे की पढ़ाई के लिए बाहर जाने पर २४ मई १८८६ से १२ अगस्त १८९८ के बीच ११२४ पत्र लिखे थे। तीर्थराम ने सन् १८८८ में मैट्रिक्युलेशन परीक्षा द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण कर ली। उस समय वे केवल साढ़े चौदह वर्ष के थे। द्वितीय श्रेणी में आने से उन्हें छात्रवृत्ति प्राप्त नहीं हो सकी।

तीर्थराम के पिता हीरानन्द उन्हें आगे पढ़ाना नहीं चाहते थे। निर्धनता के कारण वे चाहते थे कि तीर्थराम अब कोई नौकरी करके गृहस्थी का खर्च चलाए। परन्तु तीर्थराम आगे पढ़ना चाहते थे। उस समय उनके मौसा डॉ. रघुनाथ मल और भक्त धन्नाराम ने उन्हें पढ़ने की अनुमति दे दी। आगे के अध्ययन के लिए वे लाहौर चले गए। इन्होंने सन् १८८८ मई में मिशन कॉलेज में दाखिला लिया। बड़ी आर्थिक कठिनाइयों का सामना करते हुए उन्होंने अध्ययन किया। कई दिनों तक तो भोजन भी दिन में एक ही समय ले पाते थे। सन् १८९० में इन्होंने इंटर परीक्षा उत्तीर्ण कर ली। वे पंजाब प्रान्त में २५वें स्थान पर रहे इसलिए उन्हें छात्रवृत्ति स्वीकृत हो गई। सन् १८९३ में उन्होंने बी.ए. उत्तीर्ण कर ली। इस बार वे पंजाब प्रांत में प्रथम रहे और उन्हें स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ। अब उन्हें पैंतीस और पच्चीस रुपयों की पृथक–पृथक दो छात्रवृत्तियाँ भी मिलीं। बी.ए. में उन्होंने एक विषय गणित भी लिया था। पढ़ाई के साथ–साथ वे आध्यात्मिक क्षेत्र में भी कार्यरत रहे। तीर्थराम ने इस बीच योग वशिष्ठ का भी अध्ययन पूर्ण कर लिया। साथ ही यौगिक क्रियाएँ भी करते रहे। उन्होंने भक्त धन्नाराम को लिखा– १८ अगस्त १८९३, मुझे यहाँ अनहद शब्द बहुत सुनाई पड़ता है। यह स्थान दिव्यानन्द से भरा मालूम होता है। फिर २ जून १८९४ को लिखा– **वास्तव में जगत्**

में कोई भी वस्तु स्थायी नहीं है। जो मनुष्य इन वस्तुओं पर आश्रय करता है वह अवश्य हानि उठाता है। संसार के धनाढ्य पुरुष नंगे और कंगाल पुरुषों के सदृश हैं। सन् १८९५ में तीर्थराम ने गणित में सम्मान सहित एम.ए. कर लिया। प्रिंसिपल बैल साहब ने इन्हें बुलाकर कहा कि यदि तुम चाहो तो तुम्हारा नाम प्रान्तीय प्रशासकीय सेवा के निमित्त नामांकन हेतु भेज दूँ। परन्तु तीर्थराम ने कहा कि मैं शिक्षक बनना चाहता हूँ। नौकरी नहीं मिलने पर वे ट्यूशन्स करने लगे। अधिक परिश्रम से अस्वस्थ हो गए तो स्वास्थ्य सुधार हेतु मुरारीवाला चले गए। १६ सितम्बर १८९५ को उन्होंने स्यालकोट हाईस्कूल में द्वितीय मुख्य अध्यापक का पद संभाल लिया। अध्यापक के रूप में तीर्थराम की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई। तीर्थराम स्यालकोट की स्थानीय सनातन धर्मसभा में भी सक्रिय कार्य करने लगे। स्यालकोट का जलवायु उनके स्वास्थ्य के अनुकूल नहीं था। उनका स्वास्थ्य निरन्तर बिगड़ता गया। ३ दिसम्बर १८९५ को जब वे पढ़ाकर लौटे तो बेहोश हो गए। वे अपनी आँखों और पेट से सदैव परेशान रहे। मार्च १८९६ को इन्होंने मिशन हाईस्कूल स्यालकोट से त्यागपत्र दे दिया। तीर्थराम ने सन् १८९६ के अप्रैल में पोरमेन मिशन कॉलेज लाहौर में कनिष्ठ प्राध्यापक के पद पर कार्य प्रारम्भ कर दिया। परन्तु एक माह बाद ही उनके कार्य से सन्तुष्ट होकर उन्हें वरिष्ठ प्रोफेसर का पद दे दिया। वे बी.एस-सी. करना चाहते थे परन्तु धार्मिक कार्यों में अधिक समय दे देने से यह सम्भव नहीं हो सका। अब वे मनसा-वाचा-कर्मणा साधना में लग गए। उनका लक्ष्य बना ईश्वर प्रेम में पूर्ण डूब जाना। परन्तु अध्यापन में वे कोई कसर उठाकर नहीं रखते थे। अपने छात्रों में वे लोकप्रिय थे। समस्त छात्र उन्हें श्रद्धा की दृष्टि से देखते थे। साथ ही भक्ति के मार्ग पर भी वे तेजी से बढ़े जा रहे थे। कथा सुनते समय वे रो पड़ते और कहने लगते- कृष्ण मुझ पर कृपा करो। अपना मनोहर मुखड़ा तो दिखाओ। क्या मैं किष्किन्धा के बन्दरों से भी गया गुजरा हूँ। रावी के तट पर घूमते हुए एक दिन कोयल के कूकने पर कहने लगे- अरी कोयल! तूने इतना मधुर और आकर्षक स्वर कहाँ से पाया? क्या तूने बाँसुरी वाले कृष्ण को देखा है? कदाचित तूने उसी से यह मधुर स्वर लिया है। तू ही बता, उस निर्मोही का दर्शन कब होगा?

सन् १८९६ के अगस्त में पण्डित दीनदयाल शर्मा के साथ वृन्दावन की यात्रा की। यहाँ राम का कृष्ण प्रेम और उद्दीप्त हो गया। भगवान कृष्ण की लीला से सम्बन्धित किसी भी स्थल को देखकर वे भाव समाधि में निमग्न हो जाते थे। सन् १८९७ में द्वारका मठ के शंकराचार्य अद्वैत मत के प्रचार के लिए लाहौर आए। धर्मसभा के कार्यकर्ता होने के कारण उनकी सेवा परिचर्या का भार तीर्थराम पर आया। वे तीर्थराम की सेवा से प्रभावित हुए और अपने बहुमूल्य समय में से कुछ तीर्थराम के लिए निर्धारित कर दिया। उन्होंने राम की शंकाओं का समाधान भी किया और शास्त्रों की सूक्ष्म व्याख्या भी की। नवम्बर १८९७ में स्वामी विवेकानन्द अद्वैत मत का प्रचार करने लाहौर आए। उनके दिव्य धारावाहिक भाषण, महान त्याग, उनकी अलौकिक शक्ति, उनका चुम्बकीय व्यक्तित्व, अकाट्य युक्ति और तर्क शक्ति ने श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया। लाहौर में तीर्थराम ने ही स्वामी विवेकानन्द के व्याख्यान की व्यवस्था की थी। स्वामी विवेकानन्द और तीर्थराम में असाधारण बौद्धिक प्रतिभा थी। परन्तु स्वामी विवेकानन्द के अलौकिक व्यक्तित्व से तीर्थराम अत्यधिक प्रभावित हुए।

सन् १८९८ में बैसाखी के अवसर पर तीर्थराम ने कटासराज तीर्थ की यात्रा की। यह वह स्थान है जहाँ यक्ष ने युधिष्ठिर के चारों भाइयों को बेहोश किया था और फिर युधिष्ठिर से कुछ प्रश्न पूछे थे। उनका सन्तोषजनक उत्तर मिल जाने पर सभी को स्वस्थ कर दिया था। अपने दूसरे पुत्र के उत्पन्न होने पर १५ फरवरी १८९९ के पत्र में भक्त धन्नाराम को लिखा मालूम हुआ कि एक पुत्र उत्पन्न हुआ है। समुद्र में एक नदी आन पड़े तो कुछ अधिकता नहीं हो जाती और यदि कोई नदी न गिरे तो कुछ न्यूनता नहीं हो जाती। सन् १८९९ के ग्रीष्मावकाश में तीर्थराम ने काश्मीर की यात्रा की। तीर्थराम की आध्यात्मिकता, पवित्रता, सादगी, संयम, त्याग और सन्तोष कीर्ति चारों ओर फैल गई। वेदान्त की शिक्षा का उन पर गहरा प्रभाव पड़ा।

अब तीर्थराम को नौकरी खटकने लगी। वे गम्भीरता से नौकरी छोड़ने की बात सोचने लगे। उन्होंने इण्डियन प्रेस को लिखा- चाकरी करना दास का काम है। मैं तो राम बादशाह हूँ। न तो मैं किसी का नौकर हूँ और न कोई मेरा स्वामी ही है। मैं अपनी हस्ती में विराजमान हूँ। राजे-महाराजे मेरे चरणों में नमित होते हैं। मैं शरीर नहीं हूँ। शरीर और प्राण दोनों से परे हूँ। तुम मुझे शरीर समझकर भूल करते हो। मैं तुम्हारे प्राणों का प्राण हूँ। तुम्हारी आत्मा हूँ। पंचतत्व मेरे चाकर हैं। इन्होंने नौकरी से त्यागपत्र देकर लाहौर छोड़ दिया। वे हिमालय की यात्रा पर चले गए। हिमालय की यात्रा पर जाने के मन्तव्य पर उन्होंने बताया है- हमें जाकर ऐसे स्थान में निवास करना चाहिये जहाँ कोई मित्र और शत्रु न हो। संयोग वश हम बीमार भी पड़े तो हमें कोई पूछने वाला न हो। यदि देहान्त भी हो जाए तो कोई आँसू बहाने वाला भी न हो। उनके साथ एक मण्डली थी। राम को गंगोत्री के दर्शन की तीव्र इच्छा थी। रास्ते में टेहरी पड़ता है। वहाँ कुछ दिन ठहरने का निश्चय किया। एक रमणीक बगीचा था वह गंगाघाट पर था। वहाँ तीर्थराम ने नारायणजी से कहा- मेरा तथा मण्डली के अन्य सदस्यों के सभी रुपये-पैसे गंगा में प्रवाहित कर दीजिये। जो परमात्मा पर आश्रित है उसे रुपये-पैसों की आवश्यकता नहीं। राम के आदेश का पालन किया गया। गंगा मैया अतुल धनराशि से सम्पन्न है। वे पूर्ण है। उन्हें किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं है। वे विष्णु पदी हैं। विष्णु के पद में श्रेयस और प्रेयस का सहज निवास है- "माँ मेरी सारी वस्तुएँ तुम्हारी दी हुई हैं। मेरा क्या है? तन-मन-धन परिवार ऐश्वर्य, मान-प्रतिष्ठा सब तेरी ही दी हुई है। मेरा क्या है। तेरी ही दी हुई वस्तुएँ तुझे सौंप रहा हूँ। कुछ समय बाद ऋषिकेश के बाबा रामनाथ वहाँ आए। वे तीर्थराम को मिलने आए। राम आध्यात्मिक आनन्द में निमग्न थे। ब्रह्मानन्द की अलौकिक मस्ती से उनका मुख और आँखें चमक रही थी। बाबा उन्हें देखते ही मन्त्रमुग्ध हो गए। उन्होंने राम से पूछा- महाराज! आप यहाँ कब पधारे? राम का उत्तर था- कल। फिर वे मौन हो गए। कुछ क्षण बाद बाबाजी ने राम से पूछा- महाराज! आपके भोजन की क्या व्यवस्था है? राम ने आकाश की ओर संकेत कर कहा- उससे पूछिये। वे फिर मौन हो गए। अन्त में बाबाजी ने उनके भोजन की व्यवस्था की।

नित्य की भाँति प्रात: ९ बजे ही भोजन की सारी व्यवस्था हो गई। इस घटना से सब प्रभावित हुए और प्रभु की आराधना में तन-मन से लग गए। एक रात को राम टेहरी से अकस्मात लापता हो गए। इससे उनकी पत्नी शिवदेवी को गहरा आघात लगा। उससे उनका स्वास्थ्य गिर गया। राम कुछ दिनों बाद उत्तर काशी से लौट आए। शिवदेही ब्रह्मानन्द के साथ मुरारीवाला भेज दिया गया। सन् १९०१ में उन्होंने संन्यास ले लिया। अब तीर्थराम का नाम स्वामी रामतीर्थ हो गया। रामतीर्थ की प्रसिद्धि तेजी से फैली। अब उनको मिलने के लिए लोग झुण्ड के झुण्ड में आने लगे तो ईश्वर आराधना में बाधा पड़ने लगी तो उन्होंने वह स्थान त्याग दिया। वे १६ सितम्बर १९०१ को रवाना हुए और १८ सितम्बर को गंगोत्री पहुँच गए। राम ने इस यात्रा का आकर्षक वर्णन किया है। फिर राम ने सुमेरु पर्वत की भी यात्रा की। १९ अक्टूबर १९०१ को राम बूढ़े केदार और त्रियुगी नारायण के मार्ग से केदारनाथ की तरफ रवाना हुए। केदारनाथ के दर्शन कर वे ३ नवम्बर १९०१ को बद्रीनाथ पहुँचे। शीत ऋतु प्रारम्भ हो गई थी इसलिए वे मैदान की तरफ लौटे और २५ दिसम्बर को मथुरा पहुँचे। सन् १९०२ के फरवरी में वे फैजाबाद पहुँचे। वहाँ उन्होंने साधारण धर्मसभा के द्वितीय वर्ष के समारोह की अध्यक्षता की। सभा में हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई सभी को आमन्त्रित किया था। फैजाबाद में कुछ दिन ठहरकर स्वामीजी लखनऊ के लिए रवाना हो गए। वहाँ के बाबू गंगाप्रसाद वर्मा के यहाँ ठहरे जो उन दिनों लखनऊ के बेताज बादशाह थे। उनके घर पर ही स्वामी रामतीर्थ के व्याख्यान होने लगे। स्वामी रामतीर्थ ने नारायण से कहा कि वह संन्यास लेकर सिन्ध में प्रचार करने जाएँ। रामतीर्थ ने उन्हें संन्यास देकर सिन्ध भेज दिया।

मई १९०२ में राम ने टेहरी के जंगल में जाकर अपना डेरा लगाया। रास्ता में वे कौड़िया चट्टान पर रुके थे। संयोग से वहाँ टेहरी नरेश सर कीर्ति शाह उनसे मिले। राजा साहब ने स्वामी राम का स्वागत किया और अपने शिविर में ले आए। स्वामी रामतीर्थ ने टेहरी नरेश से दार्शनिक विषय पर चर्चा की और उनके समस्त संशयों का निवारण कर दिया। इसी बीच नारायण स्वामी भी सिन्ध से आ गए। फिर स्वामी रामतीर्थ प्रताप नगर आ गए। प्रताप नगर टेहरी की ग्रीष्म कालीन राजधानी थी। वहाँ टेहरी नरेश ने उन्हें जापान में होने वाले सर्वधर्म सम्मेलन के विषय में बताया। उन्होंने स्वामीजी को वहाँ जाने की सलाह दी। स्वामीजी ने इसे स्वीकार किया। राजा साहब ने तुरन्त ही तार द्वारा जापान जाने वाले जहाज में ऐक केबिन राम और नारायण के लिए सुरक्षित करवा दिया। २८ अगस्त १९०२ को वे कलकत्ता से जापान के लिए रवाना हो गए। दोनों स्वामी टोकियो पहुँचे। याकोहोमा के आदमी ने क्लब में प्रवेश करके दोनों साधुओं का परिचय कराया। जब स्वामीजी ने पूछा कि आप किस देश के निवासी हैं? तो उन्होंने कहा- **सारा संसार मेरा घर है। भलाई करना मेरा धर्म है।**

वहाँ जाने पर यह भी मालूम हुआ कि यहाँ कोई सर्वधर्म सम्मेलन होने वाला नहीं है। स्वामीजी के वहाँ कुछ व्याख्यान हुए। उन्होंने टोकियो के कॉमर्स कॉलेज में एक बहुत ही महत्वपूर्ण व्याख्यान दिया जिसका विषय था- **'सफलता का रहस्य'**। रूसी राजदूत ने समाचार पत्र में जब उस व्याख्यान के विषय में पढ़ा तो वे मिलने आए। परन्तु स्वामीजी सेन फ्रांसिस्को पहुँच गए थे। राम एक पखवाड़े तक टोकियो में रहे थे और फिर उसी जहाज से अमेरिका चले गए। वहाँ सन् १९०३ में सर्वधर्म सम्मेलन होने वाला था। स्वामी नारायण को तो उन्होंने भारत भेज दिया। स्टीमर में सेन फ्रांसिस्को पहुँचने पर सारे यात्री उतरने की जल्दी में थे परन्तु स्वामी राम डेक पर चहलकदमी कर रहे थे। एक अमेरिकन उन्हें ध्यान से देख रहा था। उसने रामतीर्थ के पास जाकर पूछा- आपका सामान कहाँ है? स्वामीजी ने कहा- मेरे पास कोई सामान नहीं है। अमेरिकन ने पूछा- आपके रुपये-पैसे कहाँ हैं? स्वामीजी ने कहा- मैं रुपये-पैसे नहीं रखता। अमेरिकन ने पूछा- फिर आप रहते किस प्रकार हैं? स्वामीजी ने कहा- मैं सभी को प्रेम करता हूँ। जब मुझे प्यास लगती है तो कोई पानी पिला देता है और जब भूख लगती है तो कोई दो रोटी खिला देता है। क्या आपके अमेरिका में कोई मित्र है? हाँ, मैं ऐक अमेरिकन से परिचित हूँ और वह तुम्हीं हो। इतना कहकर स्वामीजी ने उसके कन्धे पर अपना हाथ रख दिया। वह स्वामीजी का भक्त बन गया। जिस दिन से रामतीर्थ ने अमेरिका की भूमि को स्पर्श किया, उसी दिन से अमेरिकी जनता और प्रेसों ने उन पर अगाध स्नेह प्रदर्शित करना प्रारम्भ कर दिया। स्वामीजी ने अमेरिका के बड़े-बड़े धनवानों का हृदय जीत लिया। वे उनकी त्यागवृत्ति पर मुग्ध हो गए। प्रोफेसर छत्रे के पास रामतीर्थ को अधिक समय तक ठहरने नहीं दिया। **वे अमेरिका के विशिष्ट अतिथि माने गए।** वे दो वर्षों से भी अधिक समय तक अमेरिका में रहे। इनमें से १८ महीने वे सेन फ्रांसिस्को के मेजबान डॉ. एडवर्ड हिलर के घर पर रहे। वे जहाँ भी जाते वहाँ एक भीड़ उन्हें देखने को एकत्रित हो जाती। वहाँ उन्होंने अनेक संस्थाओं की स्थापना की। इनमें सर्वाधिक प्रसिद्ध थी- **'हरमेथिक ब्रदरहुड'**। अमेरिकी प्रेसों ने उन्हें जीवित ईसा की संज्ञा दी। स्वामी राम ने संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति से भी मुलाकात की। उन्होंने राष्ट्रपति को भारत की ओर से अपील भेंट की। राष्ट्रपति ने उसे बड़ी शालीनता से बड़ी प्रसन्नता से अपने दाहिने हाथ में रखा और अन्त तक उसे उसी रूप में रखे रहे।

कई महिलाएँ और पुरुष भक्त बन गए। कई ने अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति उनके चरणों में अर्पित करने की इच्छा व्यक्त की, परन्तु स्वामीजी ने उसे अस्वीकार कर दिया। फिर वे इंग्लैंड होते हुए भारत को लौटने लगे। इंग्लैंड से जिस जहाज से भारत आने वाले थे, उसी जहाज से लॉर्ड कर्जन भारत आ रहे थे। स्वामी रामतीर्थ ने कहा- दो बादशाह एक जहाज से यात्रा नहीं कर सकते। उन्होंने अपनी यात्रा एक सप्ताह के लिए रोक दी। फिर वे दूसरे जहाज से भारत आए। किस देश में स्वामी रामतीर्थ अपने को राम बादशाह कहते थे। भारत में उनका बड़ा स्वागत हुआ उनके कुछ प्रशंसकों ने उन्हें एक नया संगठन उनके विचारों के प्रचार-प्रसार करने के लिए स्थापित करने को कहा। स्वामीजी ने उसे अस्वीकार कर दिया और कहा- भारत में जितनी भी संस्थाएँ हैं, वे सब मेरी ही हैं। स्वामीजी की कुछ शिष्याएँ भारत भी आईं और कुछ उन्हें पत्र भी लिखती रहीं। उनमें मुख्य हैं श्रीमती वेलमैन, श्रीमती ई.सी. मेक्सवेल, श्रीमती फ्लोरा आदि।

(शेष पृष्ठ २६ पर)

दधीचि ध्येयधर्मा पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा

• देवनारायण भारद्वाज 'देवातिथि'
'वरेण्यम' अवंतिका (प्रथम),
रामघाट मार्ग, अलीगढ़ (उ.प्र.)
दूरभाष : ५७१-२७४२०६१

वेद को पढ़ते-पढ़ाते व सुनते-सुनाते हुए जो इसके सार तत्व को अपना लेते हैं, वे मन्त्र के देवता के तुल्य ही पूजनीय-अर्चनीय व वन्दनीय हो जाते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती के मानस पुत्र पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा की गणना ऐसे ही महापुरुषों में की जाती है, जिनके जीवन में मन्त्र जीते हैं।

इन्द्रो दधीचो अस्थभिर्वृत्राण्यप्रतिष्कुतः।
जघान नवतीनंव।।

(ऋ. १.८४.१३ साम. १७९-९१३ अथर्व. २०.४१.१)

वही **(इन्द्रः)** सूर्य तुल्य नायक **(अप्रतिष्कृतः)** सब ओर से स्थिर होता है, जिसके सम्मुख कोई प्रतिद्वंद्वी ठहर न सके **(दधीचिः)** एकनिष्ठ ध्यानी पुरुष की **(अस्थभिः)** द्रोह-विकारों को दूर फेंकने वाली शक्ति किरणों को प्राप्त करके **(वृत्राणि)** ज्ञान-विजय को रोकने वाले तमाच्छादित शत्रुओं को उसी प्रकार **(जघान)** छिन्न-भिन्न कर देता है; जिस प्रकार ९० की संख्या को ९ का अंक पग-पग पर बिखराते हुए भी अपनी पूर्णता के स्वत्व को हर स्तर पर रक्षित करता है।

पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा के जीवन में इस मन्त्र के अवतरण दृश्यों को सहज ही देखा जा सकता है। इन्द्र ने दधीचि की अस्थियों से वज्र बनाकर वृत्रासुर का विनाश किया था- इस पौराणिक कथा का मूल इसी मन्त्र में है। पौराणिक इन्द्र के काल्पनिक आडम्बर को सभी जानते हैं। पर वैदिक इन्द्र के सच्चे स्वरूप का ध्यान करते हैं तो उसके स्थान पर अपने प्रणेता गुरुदेव दयानन्द सरस्वती को साक्षात् खड़ा पाते हैं। इन्होंने पहले जिस बालक का ऋषि दधीचि के रूप में निर्माण किया था, उसी से उसका सर्वस्व वेद-मानव-राष्ट्र के कल्याण हेतु माँग लिया था। वह भी ऋषि दधीचि से कुछ आगे ही बढ़कर अपने दोहरे कर्तव्य के निर्वाह हेतु सन्नद्ध हो गया था। उसने अपने जीवन काल में महर्षि के इन्द्रस्व को संभाले रखा। अपनी ७३ वर्षीय आयु की प्रत्येक श्वास महर्षि के यज्ञ में आहुतियत अर्पित की। निधनोपरान्त दधीचि ध्येय की पूर्ति हेतु अपनी अस्थियाँ सुरक्षित कर दीं जो अगले ७३ वर्ष तक इस प्रतीक्षा में रहीं कि भारत का कोई नरेन्द्र आए, जो महामोदी अपनी गोदी में उठाकर ले जाए। भारत में ये अस्थियाँ रवि-किरणों की भाँति उसकी भौतिक-सांस्कृतिक अस्थिरता को दूर करके विज्ञान विभूषित नूतन परिवेश में पुराण सनातन विश्वगुरु का विश्वास उसे पुनः लौटा दे।

पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा

जब विप्लव पल में पलक खुले

पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा का जन्म भारत की प्रथम महाक्रांति के वर्ष १८५७ में ४ अक्टूबर को गुजरात के कच्छ प्रान्तस्थ नगर माण्डवी में करसनजी भणशाली के यहाँ हुआ था। पहले इनकी माँ व १० वर्ष की अवस्था में इनके पिता की मृत्यु हो गई थी। इनकी नानीजी ने इन्हें सम्भाला और प्रारम्भिक पढ़ाई का प्रबन्ध किया। मुम्बई के सेठ मथुरादास जीवाजी भाटिया इनकी सुशीलता एवं कुशाग्रता से प्रभावित होकर इन्हें माण्डवी से अपने साथ मुम्बई ले आए और इनकी अंग्रेजी व संस्कृत शिक्षा की अच्छी व्यवस्था की।

जब दया-कलश भी छलक उठे

मुम्बई की भाटिया धर्मशाला में सन् १८७४ में किशोर श्यामजी को स्वामी दयानन्दजी ने देखा। इनके व्यवहार एवं विवेक को समझकर इनके संस्कृत शिक्षण का उत्तम प्रबन्ध किया। इनकी समग्र शिक्षा के साथ-साथ इनके स्थायी आर्थिक सहयोग का ध्यान रखते हुए अपने प्रभाव क्षेत्र के श्रेष्ठी छबीलदास उर्फ लल्लूभाई द्वारिकादास की पुत्री भानुमती से इनका विवाह सन् १८७५ में करवा दिया। इसी वर्ष जब महर्षि दयानन्द ने मुम्बई में प्रथम आर्य समाज की स्थापना की, तो इन्हें उसका सदस्य बनवाया। १८७७ में महर्षि वेदभाष्य का कार्य करने लगे थे और पत्राचार के माध्यम से सदस्यों को भेजते थे। वेदभाष्य के प्रकाशन एवं वितरण में श्यामजी का श्रमसाध्य सहयोग रहता था। महर्षि अपनी शास्त्रार्थ एवं धर्म प्रचार यात्राओं पर प्रायः बाहर चले जाते थे। इस अवधि में भी श्यामजी निरन्तर महर्षि के सम्पर्क में रहते थे। एक बार जब महर्षि २१ अगस्त १८७८ को रुडकी से चलकर २२ अगस्त १८७८ को अलीगढ़ पहुँचे थे, तब श्यामजी अपने कई सहयोगियों के साथ महर्षि से मिलने अलीगढ़ पधारे थे। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के संस्थापक सर सैय्यद अहमद खाँ महर्षि के मित्र व प्रशंसक थे। २३ अगस्त १८७८ को श्यामजी कृष्ण वर्मा सहित सभी अतिथियों को उन्होंने अपने यहाँ भोज पर आमन्त्रित किया था।

जब सागर तट के पार चले

महर्षि दयानन्द का हर क्षेत्र के विदेशी विद्वानों से पत्राचार के माध्यम से सम्पर्क रहता था। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के प्रसिद्ध प्रोफेसर मोनियर विलियम महर्षि से मिलने मुम्बई आए। उन्होंने अपनी सहायता के लिए महर्षि से एक भारतीय संस्कृत विद्वान की आवश्यकता व्यक्त की तो महर्षि ने श्यामजी को प्रस्तावित कर दिया और उन्हें लन्दन जाने के लिए प्रेरित

किया। फलत: सन् १८७९ के मार्च के अन्तिम सप्ताह में श्यामजी 'इण्डिया' नामक जलयान से समुद्र की लहरों को पार करते हुए १५ अप्रैल को लन्दन पहुँच गए। प्रो. मोनियर विलियम के प्रयत्न से २५ अप्रैल को ही उन्हें ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में प्रवेश मिल गया। १५ अक्टूबर को ही इसी विश्वविद्यालय में वे संस्कृत के प्रोफेसर पद पर नियुक्त हो गए। साथ ही अंग्रेजी की उच्च शिक्षा प्राप्त करते रहे और उत्तीर्ण होकर प्रथम भारतीय परास्नातक (एम.ए.) बने। यही नहीं, उन्होंने बैरिस्टरी की शिक्षा भी प्राप्त कर ली।

महर्षि निर्देशों के विस्तार फले

लन्दन प्रवास में भी महर्षि के निर्देश के अनुसार संस्कृति प्रकाश का इनका अभियान चलता रहा। लन्दन की रॉयल एशियाटिक सोसायटी में १८८१ में बर्लिन (जर्मनी) में होने वाली **'प्राच्य विद्या परिषद'** में भारत का प्रतिनिधित्व किया। श्यामजी के सम्पर्क के सुपरिणाम स्वरूप प्रसिद्ध विदेशी वैदिक विद्वान् मैक्समूलर की वेद सम्बन्धी धारणाओं में सकारात्मक सुधार हुआ। अपने निर्वाण निधन बलिदान के लिए हर क्षण तैयार महर्षि ने अपनी उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का श्यामजी को सदस्य मनोनीत कर दिया। षडयन्त्रवश ३० अक्टूबर १८८३ को महर्षि निर्वाण को प्राप्त हो गए। दिसम्बर १८८३ में श्यामजी भारत लौट आए और महर्षि के कार्य विस्तार तथा आर्य समाज के निखार के कार्य में संलग्न हो गए। आर्य समाज के क्षेत्र में एक से एक बढ़कर दिग्गज कर्णधारों के कार्य से आश्वस्त होकर श्यामजी पुन: अपनी पत्नी को साथ लेकर १८८४ में लन्दन चले गए। एक प्रतिभापरिपूर्ण न्यायविद बैरिस्टर बनकर १८८५ में पुन: भारत लौट आए।

विदेशी दासतापूर्ण अनुभव के आयाम चले

श्यामजी ने मुम्बई तथा अजमेर में बैरिस्टरी व वकालत की। अजमेर नगर पालिका के पार्षद बने। वकालत में मन नहीं लगा। फलत: वे रतलाम, उदयपुर एवं जूनागढ़ के प्रधानमन्त्री पद पर कार्य करते रहे। इनको अंग्रेजों की दासतुल्य इन देशी राज्यों की सेवा अनुकूल व रुचिकर प्रतीत नहीं हुई। इनके सम्पर्क में जस्टिस महादेव गोविन्द रानाडे थे, जो परोपकारिणी सभा के महर्षि के द्वारा मनोनीत सदस्य थे। इन्होंने ही १८७५ में महर्षि को पूना आमन्त्रित कर उनके १५ विस्तृत व्याख्यान कराए थे। पोंगा पण्डितों की भ्रान्त धारणाओं का खण्डन करने के लिए इन्होंने ही सन् १८८९ में श्यामजी को पूना बुलाया था। दादा भाई नौरोजी भी जस्टिस रानाडे के सम्पर्क में थे जो सत्यार्थ प्रकाश के पाठक थे और महाराष्ट्र केसरी लोकमान्य बालगंगाधर तिलक इनको सत्यार्थ प्रकाश के पन्ने पलटते देखकर पारसी से आर्य समाजी बनने का व्यंग्य कर बैठते थे, तब दादाभाई का यही कथन होता था– **'नहीं, मुझे स्वराज्य समर में स्वामी दयानन्द के ग्रन्थ से भारी प्रेरणा मिलती है।'** यह बाल गंगाधर तिलक ही थे, जिन्होंने **'मराठा'**, **'केसरी'** पत्रों एवं अपने न्यायिक वक्तव्यों में उद्घोष किया था– **'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा।'** वेद का यह शब्द **'स्वराज्य'** महर्षि दयानन्द ने १८७५ में ही सत्यार्थ प्रकाश में स्वर्ण जड़ित कर दिया था, जो सहस्रों नायकों की प्रेरणा का स्रोत बन गया था।

शत्रु के स्रोत पर शत्रु से सामना

लोकमान्य बालगंगाधर तिलक को राजद्रोही ठहराकर अंग्रेजों द्वारा सजा दी गई। ब्रिटिश सरकार ने भारत को अधिकाधिक दृढ़ बन्धन में कसने की नीति अपनाई। भारतीय भी विद्रोहात्मक प्रतिध्वनि हेतु बाध्य हो गए। अपनी क्रान्तिकारी गतिविधियों को लन्दन में संचालित करने के ध्येय से श्यामजी जुलाई १८९७ में मुम्बई से लन्दन चले गए। कुछ वर्षों तक वे मौन भूमिका का निर्वाह करते रहे। सन् १९०५ में उनके अभियान ने जोर पकड़ा। इसी वर्ष उन्होंने लन्दन में **'इण्डिया हाउस'** **'इण्डिया होम रूल सोसायटी'** उसका मुख पत्र **'इण्डियन सोशियालॉजिस्ट'** का प्रकाशन प्रारम्भ किया। उन्होंने स्वामी दयानन्द, राणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी एवं अकबर के नाम से छात्रवृत्तियों की व्यवस्था करके भारतीय छात्रों को उच्च शिक्षा एवं क्रान्ति दीक्षा के लिए उत्साहित किया। योग्य भारतीय लेखक–सम्पादकों, बुद्धिजीवियों को अमेरिका–यूरोप के भ्रमण हेतु आर्थिक सहायता प्रदान की ताकि वे विदेश में भारतीय स्वतन्त्रता तथा लौटकर भारतीय एकता एवं स्वातन्त्र्य संघर्ष का वातावरण बनाएँ।

भारत के महानगर, नगर, उपनगर तथा ग्रामों में आर्य समाज स्थापित कर समाज सुधारकों, स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों एवं बलिदानी क्रान्तिकारियों का सृजन कर रहे थे, वहीं दूसरी ओर आर्य समाज के संस्थापक युग प्रवर्तक दयानन्द का उत्तरवर्ती शीर्ष पुरोधा लन्दन में भारत भवन के माध्यम से प्रबुद्ध क्रान्तिवीरों का निर्माण कर रहा था। हर वर्ष यहाँ पर १० मई को भारत की १८५७ की प्रथम महाक्रान्ति का स्मृति दिवस मनाया जाता था। लाला लाजपतराय, भाई परमानन्द, वीर सावरकर, लाला हरदयाल, श्रीमती भीकाजी कामा, मदनलाल ढींगरा आदि अनेक भारतीय युवक इस भवन में रहकर अंग्रेजों के विरुद्ध क्रान्ति की ज्वाला को जलाने की तैयारी करते थे। दादाभाई नौरोजी ने यहाँ आकर पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा से भेंट की थी। इन्होंने कलकत्ता कांग्रेस के मनोनीत अध्यक्ष के उच्चासन से सत्यार्थ प्रकाश के **'स्वराज्य'** शब्द की घोषणा करके सभी को चकित कर दिया था। अंग्रेज भयाक्रान्त होकर श्यामजी के क्रान्ति अभियान में जब असह्य बाधाएँ खड़ी करने लगे, तब इन्होंने **'इण्डिया हाउस'** वीर सावरकर को सौंपकर फ्रांस की राजधानी पेरिस को अपना कार्यक्षेत्र बनाया। प्रथम महाक्रान्ति की स्वर्ण जयन्ती बड़े जोर–शोर से १९०७ में इन्होंने यहीं मनाई। इनका पत्र लन्दन में ही छपकर फ्रांस एवं विश्व भर में पहुँचता रहा। किन्तु बाद में फ्रांस में भी १९२३ तक छपा। सहयोगी वीर सावरकर से प्रेरित मदनलाल ढींगरा ने १९०९ में लन्दन के मध्य कर्नल वाइली की हत्या कर दी। इस समाचार को श्यामजी ने फ्रांस में सुनकर सन्तोष प्रकट किया।

विश्व मानव की गरिमा से गौरवान्वित हुए

ब्रिटिश सरकार के दबाव में फ्रांस सरकार श्यामजी को अपने यहाँ अधिक न रख सकी। अपने स्वाध्याय की चिन्ता किये बिना ये अमेरिका, रूस, जापान, जर्मनी एवं मिस्र आदि देशों की यात्रा पर निकल पड़े और सन् १९१४ में स्विट्जरलैंड के जिनेवा नगर में जाकर बस गए। यहाँ भी क्रान्ति युद्ध जारी रखा। सन् १९२७ में जब पं. जवाहरलाल नेहरू जिनेवा आए थे तो श्यामजी से मिलकर इन्हें 'वृद्धसिंह' कहकर सम्बोधित किया था।

(शेष पृष्ठ २४ पर)

भगवान श्री राम जन्मभूमि गर्भगृह का भूमिपूजन घोर अवैदिक

• **गजेन्द्रसिंह आर्य**
पूर्व प्राचार्य, वैदिक प्रवक्ता
जलालपुर, अनूपशहर, बुलन्दशहर (उ.प्र.)
चलभाष : ९७८३८९७५११,

भारत सनातन संस्कृति का संवाहक है और आज भी संपूर्ण विश्व को अपनी सनातन संस्कृति से प्रभावित और प्रकाशित कर रहा है। यही कारण है कि कोरोना जैसी भयंकर महामारी से जब पूरा विश्व काल के गाल में जा रहा था तो **'मरता क्या न करता'** की लोकोक्ति विश्व में चरितार्थ हो गई। विश्व के सभी महाद्वीपों के विकसित राष्ट्र अमेरिका, रूस, इटली ,स्पेन, डेनमार्क,कनाडा, ब्रिटेन, ब्राजील आदि के साथ कुछेक इस्लामिक देशों में भी वेद मंत्रों की गूंज दिखाई दी। पढ़े लिखे संभ्रांत लोग डॉक्टर, इंजीनियर, पोप, पादरी भी सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए संक्रामक रोगों के संवाहक गले मिलना और हाथ मिलाना छोड़ नमस्ते अभिवादन करने लगे तथा ईश्वर के निज और मुख्य नाम ओ३म् का साँस भरकर गुंजायमान (नाद) करने लगे तथा गायत्री मंत्र महामृत्युंजयी मंत्र का उच्चारण करते हुए अपनी शक्ति सामर्थ्य (Immunity) को बढ़ाते हुए देखे गए।

भारतवर्ष में भी लोग यज्ञ के माध्यम से पर्यावरण को शुद्ध करने में अहम भूमिका निभा रहे थे और कोरोना के कहर से बचाव हेतु वैदिक हवन के माध्यम से पर्यावरण (वायु, जलादि) को पवित्र करने में जनमानस को प्रेरित कर स्वच्छता का संदेश दे रहे हैं।

आज परम सौभाग्य का विषय है कि भूमंडल के चक्रवर्ती सम्राट (लोकनायक) दशरथनन्दन श्री रामचंद्र गर्भगृह का शिलान्यास एवं भूमि पूजन ५ अगस्त २०२० को भारत के प्रधानमंत्री माननीय नरेंद्र मोदी के करकमलों द्वारा किया गया। यह गर्भगृह प्रकरण लगभग ५०० वर्षों से कोर्ट में लंबित था। पता नहीं कितने नामित और अनामित बाल, युवा, वृद्ध बलिदान हो गए। यहां तक कि वर्तमान में स्व. अशोक सिंघल , लालकृष्ण आडवाणी, मुरली मनोहर जोशी, उमा भारती, ऋतंभरा, विनय कटियार आदि की महती भूमिका रही है। इस अवसर पर कंगूरे की ईंट बनने की प्रतिस्पर्धा चल रही है परंतु श्री राम गर्भगृह का शिलान्यास एवं भूमि पूजन जिस महान नायक पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह के संघर्ष और सत्ताच्युत होने से संभव हुआ। वही नींव का पत्थर है। चांदी की चमकती ईंट उस गारे के पत्थर का मुकाबला नहीं कर सकती है लेकिन सब उगते सूरज को ही प्रणाम करते हैं जबकि प्रतिदिन वह भी अस्तांचल की ओर जाता है याद रखो -

वेदाहमेतम पुरुषं महत्तम आदित्य वर्णा तमसः परस्तात।
त्वमेव विदित्वात्मेति नान्या पन्थे विद्यते अनाय।।

इस भव्य दिव्य मंदिर के कल्याण में कल्याण सिंह का योगदान मूगों की माला के केंद्र में बड़े मूंगे के समान दैदीप्यमान है।

माननीय प्रधानमंत्री मोदी ने पैनी दृष्टि, परिपक्वता से लंबित प्रकरण के निस्तारण में सहयोग करके एक नए युग की शुरुआत कर अपने सक्षम नेतृत्व का परिचय दिया है जो इतिहास के पृष्ठों में इंद्राज रहेगा। सर्वोच्च न्यायालय के महामहिम न्यायाधीश गोगोई का जीवट भी आज नमन करने योग्य है।

परंतु इस अवसर पर भी कुछ चिंतन करने का विषय है कि कौशल्या नंदन श्रीराम आदि प्रथम महाकवि महर्षि वाल्मीकि रचित प्रथम रामायण के अनुसार पूर्ण वैदिक महापुरुष थे। वे मर्यादा के पोषक और यज्ञों के संरक्षक थे। यज्ञों की सुरक्षा एवं संरक्षा तथा वैज्ञानिक शोध के लिए महर्षि विश्वामित्र उन्हें अपनी वैज्ञानिक यज्ञ शोधशाला में लाए थे। उन्हें तराश कर शस्त्र एवं शास्त्र की विद्या में निपुण कर राष्ट्र रक्षा में प्रशिक्षित किया। विश्व के अधिकांश देशों में राम को आज भी आदर्श माना जाता है। इंडोनेशिया जैसे मुस्लिम देश में श्री राम को राष्ट्रीय महापुरुष माना जाता है एवं थाईलैंड की राष्ट्रीय पुस्तक रामायण है। इसी प्रकार श्रीराम एशिया के अधिकांश देशों में १० लाख वर्ष बाद भी एक आदर्श है। डॉ. पी.एन. ओक जो कि इतिहास के मास्टर पीस अनुसंधानक रहे हैं। उनकी रचित पुस्तक '**भारतीय इतिहास की भयंकर भूलें**' में देखा जा सकता है। श्रीराम विस्तारवाद की नीति के कितने विरोधी थे कि लंका विजय के बाद विभीषण के राज्याभिषेक के समय विभीषण के अनुरोध को ठुकरा दिया और कहा- '**विभीषण जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी**' अर्थात् लंका का राज्य मेरी मातृभूमि से बढ़कर नहीं है। वेद भी अपनी सूक्ति में '**त्येन त्यक्तेन भुञ्जीथा**' अर्थात् त्याग पूर्वक भोग करने की बात कहता है। वह कितना त्यागी महापुरुष होगा कि लोकतंत्र की स्थापना कर स्वर्गमयी, स्वर्णमयी लंका के राज्य को वहां की जनता को छोड़ दिया। '**तेरा तुझको अर्पण क्या लागे मेरा**'।

परमात्मा का संविधान वेद जिसके जीवन का अंग था उसी मर्यादा पुरुषोत्तम महापुरुष के गर्भगृह का शिलान्यास एवं भूमि पूजन जिस अवैदिक, अवैज्ञानिक विधि से हुआ यह भी क्षोभ का विषय तथा गहन विचारणीय है। आज बहुत सारे कार्य माननीय मोदी जी के द्वारा राष्ट्रहित में हुए हैं और कुछ आगे भी होंगे। परंतु राष्ट्रनायक (प्रधानमंत्री) की गरिमामयी उपस्थिति में श्री रामजन्म गर्भगृह का शिलान्यास, भूमि पूजन जिन विद्वानों के द्वारा कराया गया है वह हमारी सत्य सनातन वैदिक संस्कृति पर प्रश्नचिन्ह लगाता है और मीडिया ने इसे प्रत्येक चैनल पर प्रसारित कर खूब वाह-वाही लूटी। जबकि पूर्व में प्रचारित किया गया था कि देश के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान चारों वेदों के कुछ चुनिंदा मंत्रों से शिलान्यास भूमि पूजन कराएंगे। लेकिन संपूर्ण कार्य वेद विरुद्ध था। लगता है कि सत्ता के गलियारों में चाटुकारों की पहुंच इतनी अधिक हो गई है कि मोदी जी भी उनके मकड़जाल में पूरी तरह फंस गए हैं। जबकि इस कार्यक्रम को सारा विश्व देख रहा है।

दक्षिण अमेरिका के सूरीनाम राष्ट्र के राष्ट्रपति श्रीमान् चंद्रिका प्रसाद संतोखी वेद को हाथ में लेकर वेद मंत्र 'ओ3म् अग्ने वृतपते वृत्तम चरिष्यामि तच्छ्केयम् तन्मये राध्यताम इदम् हमऽनृतात सत्यमुपेमि' बोलकर शपथ लेते हैं और हम ग्लोबल लीडर होकर उस पुरोहित के कहने पर कालिका माई की जय, भगवती माई की जय, क्षेत्रीय देवता की जय, कुल देवता की जय, जय श्रीराम बोलकर मर्यादा पुरुषोत्तम रामचंद्र के चरित्र का अवमूल्यन करके भी अंधी

आस्था में डूबे हैं।

जिन महाशय ने २१ वैदिक विद्वानों के साथ यह सुकर्म कराया वे है वृंदावन के श्री गंगाधर पाठक। जो मुख्य पुरोहित के रूप में प्रधानमंत्री के आमुख अर्थात् पश्चिम दिशा में अपने श्रीमुख को कर रखा था जबकि यज्ञ के पुरोहित को सदैव उत्तराभिमुख होकर स्थान ग्रहण करना चाहिए। परंतु श्री गंगाधर पाठक विचार करें कि वेदपाठी होने के कारण आपके पूर्वजों से यह पाठक गोत्र प्राप्त हुआ, परंतु श्री गंगाधर पाठक ने अपने गंगा ज्ञान सागर से सब कुछ वेद विरुद्ध कराया। आचमन् भी ओम् केशवाय नमः, नारायण नमः, माधवाय नमः बोलकर इतिश्री कर ली। संकल्प पाठ भी 'ओ३म् तत्सत् श्री ब्राह्मणे...' नहीं बोला गया और जो बोला गया वह लेखनीबद्ध करने योग्य भी नहीं है।

श्री गंगाधर पाठक पुरोहित प्रधानमंत्री को बता रहे थे कि अयोध्या प्रसंग तो वेदों में आया है, इनसे कोई पूछे कि वेद तो ज्ञान विज्ञान से ओतप्रोत हैं उसमें मनुष्य मात्र के कल्याण की शिक्षा है ना कि किसी परिवार का इतिहास। हां कुछ वेद मंत्रों का अर्थ का अनर्थ कर अपना सिक्का जमाने के अलावा कुछ नहीं है। देखो एक प्रसंग -

अष्टाचक्रा नवद्वारा देवानाम पूरयोध्या।
तस्यां हिरण्ययः कोशः स्वर्गो ज्योतिषा वृतः।।

-अथर्व(१०/२/३१)

वेद में इस शरीर को अयोध्या कहा है कि मनुष्य के भौतिक शरीर में आठ चक्र, नवद्वार और उसमें तेजस्वी कोष है, उसमें तेज से परिपूर्ण स्वर्ग है। इसी प्रकाशमयी कोष में ब्रह्म का निवास है। हे मनुष्य! तुम अमृत से परिपूर्ण इस ब्रह्म नगरी (अयोध्या) को जानो।

इसी कारण महर्षि दयानंद लिखते हैं कि ब्राह्मण वही है जो वेद विद्या को आत्मसात् कर राष्ट्रनायक को सुपथ के सन्मार्ग पर अग्रसर करे। जिस पथ पर राष्ट्रनायक चलता है आम नागरिक भी उसी का अनुगमन करता है। जब राष्ट्रनायक अपनी संस्कृति पर पकड़ नहीं रखता तभी अवैदिक मत इसी के कारण पनपते है। शासक को स्मरण होना चाहिए सम्राट अशोक के बौद्ध मत ग्रहण करने के कारण वैदिक संस्कृति का पतन हुआ और राजा सुधन्वा ने जैन मत ग्रहण किया तो हम नास्तिकता की ओर बढ़ने लगे। जबकि बौद्ध, जैन, चार्वाक, इस्लाम, पारसी, क्रिश्चियन आदि धर्म नहीं है यह तो संप्रदाय या पंथ हैं। धर्म तो सम्पूर्ण मानव जाति का एकमात्र वैदिक धर्म है जो सत्य सनातन है। जब सत्य एक हो तो धर्म भी एक होगा चूंकि सत्य सिद्धांत है तो धर्म उसका प्रयोग अर्थात् व्यवहार धारण करना। आज ऐसे ही शास्त्री, शास्त्रज्ञ होने का दंभ भर रहे हैं जो धर्म का क ख ग भी नहीं जानते। ये तो आम जनता को भ्रमित कर साधक बन रहे है। **धर्म की ध्वजा वेद, शास्त्र, उपनिषद् एवं आर्ष ग्रंथ हैं। कंठी, माला, तिलक, छापा, रुद्राक्ष धारण करने से कोई भी ना ऋषि-महर्षि बना है और ना ही बनेगा।**

भारत के अथक प्रयास से ऋग्वेद को पूरे विश्व में प्राचीनतम ग्रंथ मानकर जो ज्ञान विज्ञान से परिपूर्ण है विश्व के संग्रहालय में रखकर राष्ट्र गौरव बढ़ा है। परंतु उसी ऋग्वेद के १०५५२ मंत्रों में से प्रथम मंत्र **'ओ३म् अग्निमीडे पुरोहितं..'** भी बोला जाता तो कुछ आत्मसंतोष होता। ऐसे ही गंगाधरों के कारण मैकाले और मैक्समूलर जैसे लोग हमारी संस्कृति का उपहास करते है। ऐसे अवैदिक लोगों का एक्स-रे कर सरकार को सर्जिकल अभियान चलाना चाहिए। इसी अवैदिकता के कारण देश १००० से अधिक वर्षों तक विदेशी आक्रांताओं के चंगुल में फंसा रहा। जब मुख्य आचार्यों का यह हाल होगा जो उस टीम के हैड (Head) थे तो बिना हेड वालों का क्या हाल होगा?

मुख्य आचार्य की योग्यता का उसी समय परिचय मिल गया जब मोदी जी को यजमान के बजाय जिजमान बोल रहे थे।

हमें याद रखना चाहिए कि फ्रांस के शिक्षाविद् एवं न्यायाधीश जैकोलियट ने सन् १८६० में **'बाइबल इन इंडिया'** में उद्धृत किया है कि वेद एवं समस्त आर्ष ग्रंथ विश्व की प्राचीनतम धरोहर हैं। **महर्षि दयानंद ने सत्यार्थ प्रकाश में जैकोलियट की 'बाइबल इन इंडिया' की चर्चा की है।** विश्व हमारे ज्ञान का लोहा मानता है और हम उससे अविज्ञ होते जा रहे हैं। यही कारण है अशोक सम्राट के कालखंड में इसी अविद्या के कारण अशोक ने बौद्ध मत और राजा सुधन्वा ने जैन मत स्वीकार किया तो सारा समाज बौद्ध मत एवं जैन मत की ओर अग्रसर हो गया। समाज भी नास्तिकता की ओर बढ़ने लगा। इसी नास्तिकता को आदि शंकराचार्य ने वेद का परचम फहराकर दूर किया और इसी कारण ३३ वर्ष की अवस्था में तथाकथित कपोल कल्पित धर्माचार्यो ने विष देकर वैदिक धर्म को पुनर्जीवित करने वाली उस महान् विभूति शंकराचार्यजी को सदैव के लिए नींद में सुला दिया। इसी प्रकार महर्षि दयानंद ने जब सत्यार्थ प्रकाश किया एवं राष्ट्र में सोयी, खोयी प्रतिभा को जगाया और सत्ता के मोहन राजभोग पर पल रहे काशी के पंडितों, स्वामी विशुद्धानंद, बालशास्त्री जैसे लोगों का भंडाफोड़ किया। साथ ही अवैदिक मतों पर आक्रामक प्रहार किया तो उन्हें भी १७ बार विष देकर जो कुछ किया, वह सब जानते हैं। इन्हीं कारणों से महर्षि दयानंद ने देश के समस्त राजा महाराजों को संबोधित कर अपने उपदेश में बटी हुई ताकत को एक करने के लिए बहुत धर्मोपदेश किए। राष्ट्रीयता से ओतप्रोत करने के लिए **'आर्याभिविनय'** पुस्तक में १०८ मंत्रों की व्याख्या की है जिसे पढ़कर अंग्रेजी ब्रितानी सरकार ने ऋषि दयानंद को बागी फकीर घोषित किया।

महर्षि दयानंद ने धर्मार्य, विद्यार्य एवं राजार्य सभाओं के माध्यम से शासन की व्यवस्था पर जोर दिया। राज चलाने के लिए विद्यावान एवं राजनीति के पंडित होने चाहिए। ब्राह्मण, मंत्री विद्वान हों पर राजा अर्थात् शासक उनसे किंचित भी कम विद्वान ना हो। शस्त्रास्त्र का महान् योद्धा और शास्त्रों का पंडित भी होना चाहिए जिससे उसकी मजबूत पकड़ से सब अनुशासन में रहें। साथ ही सभा एवं जनता भी शासक पर निष्पक्ष दृष्टि रखे। आज आर्य समाज के कर्णधारों को भी आगे आने की आवश्यकता है। मौन रहना भी गलत कार्यों की स्वीकारोक्ति है। अतः समय-समय पर हम अपना मौन व्रत तोड़ कर महर्षि के कार्यों को आगे बढ़ाएं यही ऋषि के लिए हवि होगी।

जिस भारतीय जनता पार्टी का शासन आज है, उसके सन् १९८४ में मात्र दो सांसद थे। आज आर्य समाज के एक दर्जन के लगभग ज्ञात सांसद हैं - स्वामी सुमेधानंद, डॉक्टर सत्यपाल सिंह इत्यादि तथा अनेक अज्ञात ऐसे भी होंगे जो आर्य समाज की वैदिक विचारधारा से प्रभावित हों। हम उन्हें मजबूत करें और सहयोग करें तो आने वाला समय उज्ज्वल होगा। केंद्र एवं राज्य सरकारों को महर्षि दयानंद को अनुप्रतीक (Icon) बनाना चाहिए। इसका समर्थन प्रथम राष्ट्रपति देशरत्न डॉ. राजेंद्र प्रसाद, लौहपुरुष सरदार पटेल, पट्टाभि सीतारमैया, वीर सावरकर, सुभाषचंद्र बोस, महादेव गोविंद रानाडे और डॉ. भीमराव अंबेडकर के विचार करते हैं। ■

आयुर्वेद अपनाओ - कोरोना भगाओ

● पं. नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य
आर्य सदन बहीन, जनपद पलवल (हरियाणा)
चलभाष क्रमांक : ९८१३८४५७७४

आजकल चीन द्वारा उत्पन्न तथा पनपाए गए कोरोना वायरस से सारा संसार हाहाकार कर रहा है। सारे संसार के वैज्ञानिक एवं डॉक्टर अभी तक कोरोना से बचने का कोई टीका अर्थात् उचित औषधि नहीं बना सके हैं। सारे संसार में अब तक लगभग पाँच लाख से ज्यादा मौतें हो चुकी हैं। अमेरिका जैसा विकसित देश अपने लगभग डेढ़ लाख नागरिकों को मौत के मुँह में जाने से नहीं रोक पाया है। कहने का तात्पर्य है कि ऐसी मुसीबत पहले संसार पर कभी नहीं आई। इसका मूल कारण है दुनिया का वेद सभ्यता, संस्कृति का पालन न करना। आज का इंसान मानव से दानव बन गया है। आज के मानव ने अपने पेट को कब्र बना लिया है। तरक्की की अंधी दौड़ में आज के मानव का खान-पान-पहरान पूरी तरह बिगड़ गया है। सब जीवों का राजा कहाने वाला मानव थलचरों, जलचरों, नभचरों का शत्रु बन गया है। इसलिए प्रकृति का संतुलन बिगड़ गया है तथा तरह-तरह के भयंकर रोग संसार में फैल रहे हैं। हमें एलोपैथिक, होम्योपैथिक दवाइयों का प्रयोग बंद करके शाकाहारी बनकर संयमी जीवन जीना चाहिये। इसके लिए आवश्यक है आयुर्वेदिक दवाइयों का उपयोग करना। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान की चमत्कारी एंटी बायोटिक एंटी वायरल और स्टीरायड दवाओं की चकाचौंध में हम अपनी वैदिक काल से प्रमाणित सनातन चिकित्सा पैथी आयुर्वेद को भूलते जा रहे हैं। परंतु लाइलाज एवं प्राणघातक चीनी वायरस कोरोना से सामना होने पर हमें आयुर्वेद ने ही संभाला है। आयुर्वेद औषधि और घरेलू मामलों के रूप में युगों-युगों से इस्तेमाल हो रही गिलोय, अश्वगंधा, तुलसी, सौंठ, अदरक, लौंग, काली मिर्च और दालचीनी का काढ़ा कोरोना के खिलाफ जंग में कारगर सिद्ध हो रहा है। आधुनिक पैथी के चिकित्सा विज्ञानी भी मानते हैं कि इस काढ़े की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने की खासियत के बल पर यह काढ़ा न सिर्फ अधिकतर लोगों को संक्रमण से बचा रहा है बल्कि संक्रमित रोगियों की प्राण रक्षा और शीघ्र संक्रमण मुक्त होने में भी रामबाण साबित हो रहा है। इन सहज सुलभ एवं मसालों से तैयार काढ़ा दिन में एक-दो बार पीकर करोड़ों लोग कोरोना को मात दे रहे हैं। काढ़े का प्रभाव देखकर आयुष मंत्रालय और कई अन्य प्रतिष्ठित चिकित्सा संस्थानों, आयुर्वेदिक औषधियों-मसालों के औषधीय गुणों पर नए सन्दर्भ में परीक्षण कर रहे हैं।

१. गिलोय : इसे गुडची या अमृता भी कहते हैं। इसके रासायनिक अवयव रक्त में मौजूद श्वेत कणिकाओं की कार्यक्षमता को बढ़ाकर शरीर की प्रतिरोधक क्षमता मजबूत करते हैं। इसके फलों से तैयार काढ़ा दमा, खाँसी, डेंगू, स्वाइन फ्लू और शुगर का स्तर नियंत्रित करने में लाभकारी है।

२. अश्वगन्धा : एंटी ऑक्सीडेंट एंटीबेक्टीरियल और एंटी इन्फ्लेमेंटरी गुणों से भरपूर अश्वगंधा शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए रामबाण मानी जाती है। यह हाई ब्लड प्रेशर को नियन्त्रित करने के साथ कोलेस्ट्रॉल को भी कम करती है। कहते हैं कि अश्वगन्धा कैंसर सेल्स को बढ़ने से रोकता है। वहीं नए सेल्स नहीं बनने देता। इतने सारे गुणों के कारण ही इसे भारतीय जिनसिंग भी कहा जाता है।

३. दालचीनी : गर्म तासीर वाला यह मसाला बेहतरीन एंटी ऑक्सीडेंट है। पार्किंसन्स और अल्जाइमर जैसे तन्त्रिका सम्बन्धी विकारों में भी चिकित्सक इसे लेने की सलाह देते हैं। आयुर्वेद में इसे प्राकृतिक ब्लड थिनर कहा जाता है जिससे ब्लड सर्कुलेशन अच्छा होता है। इसमें एंटी इन्फ्लेमेंटरी (सूजन कम करने वाले) गुण भी हैं। पाचन सम्बन्धी विकार में भी यह कारगर है।

४. अदरक : एंटी बैक्टीरियल और एंटी ऑक्सीडेन्ट गुणों से भरपूर है। यह सर्दी-जुकाम जैसे संक्रमण से बचाने के साथ प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ाती है। पाचन शक्ति भी दुरुस्त करती है। इसमें विटामिन-ए और डी के साथ-साथ आयरन और कैल्शियम भी भरपूर मात्रा में पाया जाता है जो शरीर को ऊर्जा देता है।

५. लौंग : खुशबूदार मसाले के रूप में तो लौंग को जाना ही जाता है लेकिन इसके एंटी ऑक्सीडेंट एंटीबैक्टीरियल और एंटीसेप्टिक गुण भी भरपूर हैं। इसके तेल से मिनरल्स जैसे पोटेशियम, सोडियम, फास्फोरस, आयरन, विटामिन-ए और सी अत्यधिक मात्रा में होते हैं। गर्म तासीर वाली लौंग दाँत के दर्द में भी लाभकारी है।

६. कालीमिर्च : सर्दी में प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाती है। कोरोना में इसका प्रयोग अनिवार्य है। कालीमिर्च में पिपराइन भी पाया जाता है जो एंटी डिप्रेशेडेंट है। यानी टेन्शन कम करने के साथ डिप्रेशन दूर करता है।

७. तुलसी : तुलसी का पौधा एक वरदान है। इसमें जबर्दस्त एंटी बैक्टीरियल तत्व होते हैं। यही वजह है कि पौराणिक महत्व से अलग यह औषधीय पौधे के रूप में भी जाना जाता है। सर्दी-खासी से लेकर कैंसर तक के इलाज में तुलसी को कारगर पाया गया है।

विशेष टिप्पणी : कोविड-१९ पर अश्वगंधा, गिलोय, मुलेठी, पीपली के प्रभाव का आकलन करने के लिए आयुष मंत्रालय द्वारा अस्पतालों में क्लीनिकल ट्रायल भी कराया जा रहा है।

काढ़ा बनाने की विधि : आयुर्वेद विशेषज्ञ डॉ. शिवशंकर त्रिपाठी बताते हैं कि काढ़ा तैयार करने के लिए ४-४ भाग, गिलोय और तुलसी २-२ भाग, दालचीनी व सोंठ, एक भाग लौंग के जौ के तेल में टुकड़े कर लें। इस चूर्ण को दो कप पानी में तब तक उबालें जब तक वह घटकर आधा कप न रह जाए। इसके पूर्व स्वाद के अनुसार इसमें गुड़ या मनुक्का मिलाकर दिन में दो बार सेवन करें। अश्वगंधा चूर्ण तीन ग्राम पानी या दूध में सुबह-शाम दो बार ले सकते हैं। यदि अश्वगंधा सत ले रहे हैं तो एक ग्राम तक दो बार लें।

भारत के प्रसिद्ध डॉक्टर एवं निदेशक डॉ. तपस कुंडू कहते हैं कि काढ़े में इस्तेमाल होने वाली सामग्री चरक संहिता में इम्युनिटी को बढ़ाने में प्रामाणिक रूप से कारगर बताई गई है। काढ़े के रूप में औषधियाँ रक्त में पहुँचती हैं तो इन प्रोटीन की कार्यक्षमता बढ़ाने का कार्य करती हैं जो इम्युनिटी बूस्टर है। यही वजह है कि खासकर वायरल इन्फेक्शन से निपटने में काढ़ा काफी कारगर पाया गया है।

अन्त में मेरी समस्त नर-नारियों से प्रार्थना है कि अगर आप स्वस्थ रहना चाहते हैं तो निम्नलिखित बातों पर ध्यान देने का कष्ट करें :-

मद्य-मांस का सज्जनों, मत करना उपयोग। दूर रहेंगे आपसे, याद रखो सब रोग।।
दूध, दही, घी हर्ष से, पीना-खाना मीत। फल, सब्जी अरु शहद से, रखना पूरी प्रीत।।
परम पिता परमात्मा, जग का पालन हार। देवों का जो देव है, रखना उससे प्यार।।
दीनों-दुखियों का सदा, रखना पूरा ध्यान। 'नन्दलाल' परमात्मा, कर देगा कल्याण।।

■

आओ जानें! कुछ ऐतिहासिक तथ्य

● इन्द्रदेव गुलाटी
संस्थापक : नगर आर्य समाज,
बुलन्दशहर (उ.प्र.)
चलभाष : ८९५८७७८४४३

लौह पुरुष सरदार पटेल की १४५वीं जयन्ती (३१ अक्टूबर २०२०)

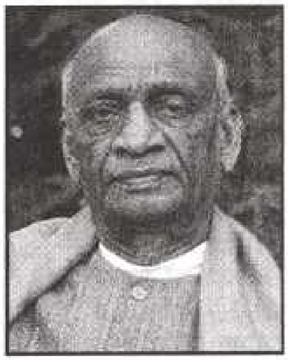

आप कुशल शासक एवं दूरदर्शी थे। आपकी जयन्ती जोर–शोर से मनाई जानी चाहिये। अधिकांश कांग्रेसी आपको ही प्रधानमन्त्री बनाना चाहते थे लेकिन अदूरदर्शी गाँधी ने जबर्दस्ती नेहरू को प्रधानमन्त्री बना दिया। आपको जम्मू–कश्मीर रियासत के विलय का कार्य नेहरू को नहीं देना चाहिये था। संविधान सभा ने आपकी अध्यक्षता में अल्पसंख्यक निर्धारण उपसमिति बनाई थी जिसे यह सिफारिश करनी थी कि खण्डित भारत में किस–किस समुदाय को किस आधार पर अल्पसंख्यक माना जाए? कई बैठकों में कुछ निश्चित नहीं हो सका। आपको यह सिफारिश करनी चाहिये थी कि धर्मनिरपेक्ष देश में किसी भी समुदाय को अल्पसंख्यक नहीं माना जाना चाहिये क्योंकि अल्पसंख्यक तो धार्मिक देशों में होते हैं जहाँ अल्पसंख्यक सर्वोच्च सरकारी पदों पर चुने नहीं जा सकते।

हरियाणा स्थापना दिवस की ५४वीं वर्षगाँठ (१ अक्टूबर २०२०)

यह देश का एकमात्र ऐसा राज्य है जहाँ दयानन्द जयन्ती पर राज्य स्तर पर सरकारी अवकाश होता है। इस राज्य में २५ आर्य समाज के गुरुकुल हैं। रोहतक में दयानन्द विश्वविद्यालय भी है। आर्य समाज का अच्छा प्रभाव है। इसी राज्य में ढोंगी बाबाओं के डेरे भी हैं। इनके अनुयायी भी काफी संख्या में है। ७०० एकड़ भूमि में बना हुआ गुरमीत राम रहीम का सिरसा वाला डेरा सबसे बड़ा है। इसकी शाखाएँ विदेशों में भी हैं। भक्तों की संख्या ५ करोड़ तक बताई जाती है। राम रहीम अय्याश और चरित्रहीन है। दो मुकदमों में २० साल के कठोर कारावास की सजा और १५ लाख रुपये की राशि की सजा जुर्माने में हुई है। कुछ मुकदमें अभी चल रहे हैं। यदि आर्य समाज ज्यादा सक्रिय होता तो हरियाणा में ढोंगी बाबाओं के डेरे ही नहीं खुलते।

देवता स्वरूप भाई परमानन्द की १४६वीं जयन्ती (४ अक्टूबर २०२०)

आप भाई मतिदास के वंशज थे। आपने १९१५ में अ.भा. हिन्दू महासभा बनवाई थी। आपके प्रयास से वीर सावरकर १९३७ में हिन्दू महासभा में आए थे। आपने १९३९ में हिन्दू महासभा भवन बनवाया था। आप नेशनल असेम्बली के लिए अम्बाला से सांसद चुने गए थे। आपके पुत्र डॉ. भाई महावीर १९५१ में भारतीय जनसंघ के सचिव बने। आप दो बार राज्यसभा के सदस्य बने। जो म.प्र. के राज्यपाल भी रहे थे। मुरादाबाद के सतीश मदान से आपने हिन्दू महासभा में चल रही गुटबाजी पर अपनी नाराजगी प्रकट करते हुए कहा था कि हिन्दू महासभा में आक्रामक संघर्षशील कार्यकर्ताओं का घोर अभाव देखकर उन्हें दु:ख होता है। उन्होंने स्वीकार किया कि उन्हें जनसंघ–भाजपा में नहीं जाना चाहिये था बल्कि हिन्दू महासभा का ही कार्य करना चाहिये था।

एलएसी पर तनाव घटाने के लिए पीछे हटी चीनी और भारतीय सेना

एनएसए डोभाल व चीनी विदेश मन्त्री की फोन पर दो घंटे की वार्ता के बाद डेढ़ कि.मी. तक पीछे हटा चीन

१. चीन पर पहला बम गिराने का स्थान और तारीख निश्चित हो गई थी।
२. ६ जुलाई को राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार और चीनी विदेश मन्त्री में समझौता हो गया।
३. राहुल गाँधी ने कहा था कि चीन ६ किलोमीटर तक आ गया है।
४. अब वह डेढ़ किलोमीटर तक हट रहा है।
५. भारत अपनी भूमि से क्यों हट रहा है? इससे स्पष्ट है कि भारत ने गलवान घाटी को तथा अन्य क्षेत्रों को विवादित मान लिया है।
६. चीन के १४ पड़ोसी हैं जबकि सीमा विवाद १८ देशों से है।
७. चीन की कुल भूमि का ४३ प्रतिशत क्षेत्र अन्य देशों से जबरन कब्जाई हुई भूमि है।
८. ७० सालों से वह दूसरों की भूमि पर कब्जा कर रहा है। उसने भूटान के बड़े भूभाग पर दावा कर दिया है।
९. कोरोना महामारी उसी की देन है। ४ लाख व्यक्ति मर चुके हैं। बड़ी संख्या में लोग बीमार हैं। अमेरिका उससे बेहद नाराज है।
१०. २७ देशों ने चीन को घेर रखा है। अमेरिका तो उसे समुद्र में डुबाना चाहता है।
११. ऐसी अनुकूल स्थिति में भारत का समझौता करना गलत है।
१२. यदि भारत युद्ध शुरू करता है तो २७ देश सहयोग को तैयार हैं। तब सारे विवादित क्षेत्र हमारे हो जाएँगे। अक्साई चीन तथा १९६२ में छीना गया क्षेत्र भी मिल सकता है।
१३. अत: मोदीजी से आग्रह है कि वे राम की भूमिका अदा करते हुए रावण रूपी चीन का संहार करे जिससे सारा विश्व परेशान है। ■

पावन नगरी अयोध्या के निर्माता शिल्पाचार्य

भगवान विश्वकर्मा का विहंगम स्मारक अयोध्या अथवा देश में क्यों नहीं?

परम पिता परमात्मा प्रदत्त विज्ञान विषयक अथर्ववेद के उपवेद अर्थवेद (शिल्प शास्त्र) के रचयिता ऋषि विश्वकर्मा का मानव जाति पर महान उपकार जिन्होंने वेदोक्त कला–कौशल का ज्ञान मानव जाति को सुलभ करवाया, किन्तु वर्तमान में आधुनिक विज्ञान के नाम पर विश्वकर्मा और उनका वेदोक्त ज्ञान दोनों उपेक्षित है। कालान्तर में व्यास की तरह विश्वकर्मा भी उपाधि (योग्यता) के रूप में प्रचलित हो गया। विभिन्न काल के विश्वकर्माओं को एक ही विश्वकर्मा मान लेना अज्ञानता का परिचायक है। – सम्पादक

● **डॉ. लक्ष्मी निधि**
'निधि विहार', १७२, न्यू बाराद्वारी, ह्यूम पाइप रोड
नया कोर्ट रोड, पो. साकची, जमशेदपुर–१ (झारखंड)
चलभाष : ९९३४५२१९५४

समस्त धार्मिक तथा ऐतिहासिक पुस्तकों में इस बात का औकात्य प्रमाण मिलता है कि शिल्पाचार्य भगवान विश्वकर्मा ने ही भू–लोक, देवलोक, शिवलोक, बैकुण्ठ धाम, इन्द्रपुरी, लंका आदि का निर्माण किया था। शिल्पाचार्य विश्वकर्मा देवताओं में ऐसे देव थे जो भगवान राम के समय मौजूद थे और वे भगवान कृष्ण के समय में भी मौजूद थे। अर्थात् त्रेता युग और द्वापर युग दोनों युगों में शिल्पाचार्य भगवान विश्वकर्मा की उपस्थिति से यह बात निर्विवाद रूप से प्रमाणित होती है कि वे देवताओं के बीच कितने महत्वपूर्ण देव थे और उनका देवताओं के बीच रहना कितना अनिवार्य था।

पृथ्वी के निर्माण के बाद ब्रह्माजी के अनुरोध पर शिल्पाचार्य विश्वकर्मा ने इस धराधाम पर अयोध्या का निर्माण किया जो राजा रघु की राजधानी थी। पहले रघुवंशी सूर्यवंशी कहलाते थे। राजा रघु ने सूर्यदेव से प्रार्थना की कि उनके वंशज को सूर्यवंशी की जगह रघुवंशी कहलाने की मान्यता दी जाए। तभी से रघुवंशी सूर्यवंशी दोनों कहलाते हैं। उसी महान तपस्वी राजा के वंश में राजा दशरथ हुए जो अत्यन्त धार्मिक राजा थे। उन्होंने अयोध्या को अत्यन्त पावन नगरी के रूप में विकसित किया। वहीं भगवान विश्वकर्मा ने दशरथ महल बनाया। वाल्मीकि रचित रामायण में अयोध्या का विशद् वर्णन है जिसमें बतलाया गया है कि अयोध्या नगरी ३६ कोसों में विस्तारित थी और उसी अयोध्या राज में दशरथ महल में राजा दशरथ के पुत्र के रूप में भगवान राम का अवतरण हुआ। वहाँ सभी देवताओं एवं बड़े–बड़े मुनियों के आश्रम थे। सरयू तट पर स्थित उस अयोध्या पावन नगरी में भगवान विश्वकर्मा ने ब्रह्मदेव के आग्रह पर श्रीराम के राज में उस अयोध्या को और विकसित किया। इस अयोध्या को पृथ्वी पर अनुपम अतुलनीय पावन देव तीर्थ माना गया है। जहाँ आज भव्य राम मन्दिर बनाने की योजना है।

हैरत की बात है कि सभी देवी–देवताओं के लिए जिस शिल्पाचार्य विश्वकर्मा ने उनके लोकों का निर्माण किया। सभी देवों के धामों का निर्माण किया, उन्हीं विश्वकर्मा भगवान का कोई स्मारक न तो अयोध्या में बनाया गया और न कहीं देश के किसी कोने में। जो सन्त–महात्मा भगवान विश्वकर्मा की अपने प्रवचनों में चर्चा करते हैं, उनकी अभ्यर्थना करते हैं, वे लोग भी अपने आश्रमों में धर्मशाला आदि निर्माण के लिए भक्तों से करोड़ों रुपया तो वसूल रहे हैं मगर विश्वकर्मा स्मारक बनाने के लिए उनके मन में कभी कोई बात नहीं उठी। दुर्भाग्य की बात है कि जिस रामायण का गायन कर ये सन्त–महात्मा अरबपति बन गए हैं, उस रामायण के रचयिता सन्त तुलसीदास का भी कोई भव्य स्मारक अयोध्या में नहीं है। भगवान विश्वकर्मा ने अपने पंच पुत्रों के माध्यम से शिल्पकला के द्वारा पंच पदार्थों का अनुसन्धान किया और समाजोपयोगी सामानों के निर्माण की कला विकसित की। उन्हीं पंच पुत्रों के वंशज आज विश्वकर्मा कहलाते हैं। विश्वकर्मा कोई जाति नहीं, यह शिल्पकारों की उपाधि है और सभी भगवान विश्वकर्मा को अपना इष्टदेव मानते हैं। उनका वंशज मानते हैं। भगवान विश्वकर्मा शिल्पकला के ज्ञान के अनुसंधानकर्ता और देवताओं के अभियन्ता थे। इस तरह भगवान विश्वकर्मा समस्त मानव जाति के इष्ट देव हुए क्योंकि सभी का सम्बन्ध किसी न किसी रूप में शिल्पकला विज्ञान के साथ जुड़ा है। इसीलिए देश के विश्वकर्मा समाज के सभी लोगों और संगठनों का यह दायित्व बनता है कि वे अपने पूर्वज और इष्टदेव शिल्पाचार्य भगवान का विशाल स्मारक रूपी मन्दिर अयोध्या में बनवाएँ और वह मन्दिर ऐसा हो कि लोग उसे देखकर कह उठे **'अवश्य देखिये देखन जोगू'**। उसके लिए समस्त भारत वर्ष की ओर से एक बड़ी संस्था का गठन हो जिसका नाम भगवान विश्वकर्मा स्मारक/मन्दिर निर्माण समिति रखा जाए और उसमें उसके माध्यम से बहुत बड़े भू–भाग पर विश्वकर्मा तथा विश्वकर्मा परिवार की भव्य मूर्तियों की स्थापना हो। (यह स्मारक और उसमें स्थापित मूर्तियाँ हमारे प्राचीन वैदिक विज्ञान की ओर अग्रेषित करने वाली प्रेरणा का स्रोत हो न कि जड़ मूर्ति पूजा का पाखण्ड फैलाने वाली बने। –सम्पादक)

शिल्पकला विज्ञान का मार्ग प्रशस्त करने वाला न प्राचीनकाल में उनका कोई मन्दिर बना और न वर्तमान काल में देश में कहीं उनका विशाल भव्य मन्दिर है। कहीं–कहीं विश्वकर्माजी का छोटा–मोटा मन्दिर है जिसे विश्वकर्मा समाज ने बनाया है। अयोध्या में भी एक छोटा विश्वकर्मा मन्दिर है जिसे लोग वहाँ लोहार मन्दिर कहते हैं क्योंकि उसे लोहारों ने बनवाया है। भगवान विश्वकर्मा के सम्बन्ध में ऐसी ओछी सोच क्यों बनी? विश्वकर्मा पूजा के दिन सारे देश के सभी जातियों, धर्मों, सम्प्रदायों और सभी राज्यों के वे लोग जो शिल्पकला विज्ञान से जुड़े हैं, हिन्दू हो या मुसलमान, सिख हो या ईसाई, भगवान विश्वकर्मा की आराधना समान भाव से करते हैं। भगवान विश्वकर्मा हमारा राष्ट्रदेव है ये किसी जाति विशेष का देवता नहीं है। मानव जाति के विकास के मार्गदर्शक हैं। ऐसे प्रभु विश्वकर्मा का मन्दिर अयोध्या में बनाने के लिए समाज के सभी वर्गों और जातियों को आगे आना चाहिये और इसके लिए वहाँ एक बड़े भू–भाग की व्यवस्था करनी चाहिये जहाँ भव्य विश्वकर्मा मन्दिर बने। विश्वकर्मा साहित्य का पुस्तकालय बने तथा विश्वकर्मा शिल्पकला विज्ञान का अनुसन्धान केन्द्र बने। इसके लिए समाज के लोगों को विश्वकर्मा के प्रति नई दृष्टि और नया दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। इस बात के लिए बड़े पैमाने पर राष्ट्रीय अभियान चलाना होगा और विश्वकर्मा साहित्य को प्रचारित करना होगा। अगर भगवान विश्वकर्मा न होते तो आज का मानव समाज पाषाण युग का वनमानुष समाज होता जो बन्दर की तरह पेड़–पर्वतों पर उछल–कूद कर रहे होते। पाषाण युग से आधुनिक युग में संसार को लाने वाले भगवान विश्वकर्मा की ऐसी उपेक्षा क्यों? ■

गतांक पृष्ठ ३५ से आगे

सैद्धान्तिक-चर्चा, भाग-७

● पं. कमलेश कुमार अग्निहोत्री
सत्य सनातन धर्म प्रबोधक मण्डल
पुष्कर बंगलोज, कर्णावती (गुजरात)

यम का तीसरा भाग है **'अस्तेय'**, अर्थात् दूसरे की वस्तु को (वस्तु के स्वामी को) बिना पूछे उपयोग में न लाना अथवा ग्रहण न करना। और आयकर–विक्रयकर यथावत देना, इत्यादि...

भगत : वर्तमान में आपके इस **'अस्तेय'** का पालन तो इने–गिने व्यक्ति ही कर पाते होंगे। यह सर्वविदित है कि परोपकार के नाम पर हो रहे अधिकांश कार्यों में 'कर' की चोरी करने वाले धनपति ही मुख्य रूप से योगदान देते हैं। आपको भलीभाँति ज्ञात होगा कि आज धर्म, अध्यात्म से सम्बन्धित अनेक व्यक्ति तथा संस्थान 'कर' की चोरी के बल पर पल रहे हैं। इस भ्रष्टाचार के युग में 'कर' चोरी से बचना कोई आसान कार्य नहीं है।

मनीषी : योग मार्ग पर चलने वालों के लिए युग का कोई बन्धन नहीं होता। वे तो किसी भी प्रकार की चोरी को अपनी प्रगति में बाधक समझते हैं और किन्हीं परिस्थितियों से विवश होकर अपना निश्चय नहीं बदलते। मनुष्यों को संसार में सुखपूर्वक रहने के लिए परिश्रम की आवश्यकता है। भले ही कोई कार, कोठी का स्वामी न बन पावे, किन्तु पुरुषार्थ के बल पर अति आवश्यक सुविधाओं के साथ स्वाभिमान का जीवन 'चोरी' न करके भी जिया जा सकता है।

यम का चौथा भाग **'ब्रह्मचर्य'** के नाम से जाना जाता है। अनुभवी ऋषियों के मतानुसार शरीर की शक्ति का संरक्षण किये बिना कोई भी व्यक्ति योगी नहीं हो सकता। अत: साधक के लिए अपनी इन्द्रियों पर पूर्ण नियन्त्रण रखना अति आवश्यक है। जो व्यक्ति रसनादि इन्द्रियों पर संयम नहीं कर पाते उनका **'ब्रह्मचर्य'** अवश्य ही खण्डित होता है।

भगत : इस समय उपलब्ध दूषित खाद, जलादि से उत्पन्न अन्न–सब्जियों आदि खाद्य पदार्थों का सेवन करके अपने शरीर की शक्ति को सुरक्षित रखना तो बहुत कठिन है। और फिर सिनेमा, टीवी, ट्रांजिस्टर आदि द्वारा हो रहे दुष्प्रचार एवं अश्लील चित्रों–कहानियों वाली पत्रिकाओं के रहते हुए **ब्रह्मचर्य** का विधिवत् पालन करना कैसे सम्भव है? आप ही बताइये।

मनीषी : प्रयत्न करने और सावधानी रखने से अपेक्षित सफलता अवश्य प्राप्त होती है। अर्थात् दूषित अन्न–सब्जियों आदि को आयुर्वेदीय पद्धति से निर्दोष बनाने तथा सिनेमादि की अश्लीलता से बचने वाले समझदार व्यक्ति अपने **ब्रह्मचर्य** की रक्षा कर लेते हैं।

यम का अन्तिम पाँचवाँ भाग है **'अपरिग्रह'**। यदि मैं सार रूप से कहूँ तो अनावश्यक पदार्थों का संग्रह न करना **'अपरिग्रह'** कहलाता है।

भगत : संग्रह करने योग्य पदार्थ तो सब आवश्यक ही होते हैं। **'अपरिग्रह'** की यह परिभाषा मैं समझ नहीं पाया, कृपया इसे स्पष्ट कीजिये।

मनीषी : विषयासक्त व्यक्ति इन्द्रिय सुखों में सहायक पदार्थों का आवश्यकता से अधिक संग्रह करते हैं। उदाहरणार्थ– अन्न, वस्त्रादि का उपयोग शरीर (जीवन) की रक्षा के स्थान पर रसना की तृप्ति और शृंगार के लिए किया जावे तो विभिन्न प्रकार के व्यंजन तथा वस्त्रादि अधिकाधिक आवश्यक समझे जाते हैं। शास्त्रीय मान्यतानुसार तन, भवन आदि को सजाने हेतु अनेकानेक वस्तुओं का संग्रह करना **परिग्रह** की कोटि में आता है। साधक को सादगी प्रिय होना चाहिये क्योंकि कृत्रिमता **योग** में बाधक हुआ करती है।

योग के इस प्रथम अंग **'यम'** का परिपालन सदा–सर्वदा सभी स्थानों पर करना अनिवार्य है। इसके लिए जाति, देश, कालादि का कोई बन्धन नहीं होता।

नियम

योग का दूसरा अंग **'नियम'** है। इसके भी पाँच भाग हैं। यथा– **शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय** और **ईश्वर प्रणिधान।**

शौच का अर्थ है– शुद्धता, पवित्रता, निर्मलतादि अर्थात् साधनाशील व्यक्तियों के बाहर से शरीर, वस्त्र, स्थान, पात्र, आहारादि तथा भीतर से अन्त:करण पवित्र हों, यह बहुत आवश्यक है। अन्यथा **'योग'** में सफलता नहीं मिल सकती।

भगत : पवित्रता का ध्यान तो रखना ही चाहिये। देखिये, हम तो हर किसी व्यक्ति का स्पर्श किया हुआ अन्न–जल ग्रहण नहीं करते। और न हर किसी के साथ बैठकर चिलम, तम्बाकू, हुक्का आदि पीते हैं।

मनीषी : इसे पवित्रता नहीं कहते। किसी के छू लेने मात्र से कोई वस्तु अपवित्र नहीं हो जाया करती। और धूम्रपान आदि सभी प्रकार के दुर्व्यसन तो साधकों के लिए सर्वथा वर्जित हैं। फिर चाहे उनका सेवन किसी के भी साथ बैठकर किया जावे।

भगत : आप यह क्या कहते हैं? मुझे तो लगभग २० वर्ष हो गए बीड़ी, सिगरेट, भांग आदि पीते और भगवान् का 'ध्यान' करते हुए।

मनीषी : ध्यान के सम्बन्ध में आप भ्रमित हैं, यह निवेदन आपके समक्ष मैं कर चुका हूँ और मैंने आपको यह भी बता दिया कि **'ध्यान'**, योग का सातवाँ अंग है। अत: इससे पूर्व के छ: अंगों का विधिवत् परिपालन यथार्थ जानकारी के साथ योगियों को अवश्य करना होता है, विश्वास कीजिये तन, मन, बुद्धि को विकृत करने वाले दुर्व्यसन ध्यान में बाधक होते हैं। आप **'अष्टांग योग'** को समझिये, और अब नियम के दूसरे भाग **'सन्तोष'** का अर्थ सुनिये।

भगत : 'सन्तोष' का अर्थ तो मैं जानता हूँ। भगवान् हमें जैसे रखे वैसे ही रहना, क्योंकि हम अपनी ओर से कुछ कर भी तो नहीं सकते। ■

(शेष भाग आगामी अंक में)

गतांक पृष्ठ १७ से आगे

सत्यार्थ प्रकाश
प्रथम समुल्लास काव्य सुधा

५३. **(हु दानादयो:, आदाने चेत्येके)** इस धातु से **'होता'** शब्द सिद्ध हुआ है।
यो जुहोति स होता।।

छन्द : जो देय वस्तु प्रदान करता सर्व जीवों को अहा।
औ ग्रहण करने योग्य का ग्राहक वही प्रभु है महा।।
इस हेतु **'होता'** नाम उस परमात्मा का एक है।
देता वही फिर ग्रहण करता जो कि जगत् अनेक है।।११५।।

५४. **(बन्ध बन्धने)** इससे **'बन्धु'** शब्द सिद्ध होता है।
य स्वस्मिन चराचरं जगत् बध्नाति बन्धु वद्धर्मात्मनां सुखाय सहायो वा वर्तते स बन्धु।।

छन्द : जो निज नियम में लोक औ लोकान्तरों को राखता।
सारे जगत् को बाँध कर नियमानुसार सँवारता।।
सबका सहायक वह सहोदर के समान स्वयं बना।
रखता परिधि में वह सभी को, और सुख देता घना।।११६।।
उसकी परिधि औ नियम है, अनुलंघ्य सबके हित सदा।
सब लोक की रक्षा करे धारण करे वह ही सदा।।
है सकल सुख दाता सभी का ज्यों सहोदर जन करें।
इस हेतु कहते **'बन्धु'** उसको ही वरण बुधजन करें।।११७।।

५५. **(पा रक्षणे)** इस धातु से **'पिता'** शब्द सिद्ध हुआ है।
यः पाति सर्वान् स पिता।।

छन्द : जैसे पिता सन्तान अपनी पालता है प्रेम से।
उत्कर्ष सबका चाहता है, अति कृपा कर नेम से।।
त्यों ब्रह्म भी है चाहता सब जीव सुख में ही रहें।
रक्षा करे प्रतिक्षण सदा, इससे **'पिता'** उसको कहें।।११८।।

५६. **(यो पितृणां पिता स पितामहः)**

छन्द : वह ही पिताओं का पिता भी है, अनन्त अपार है।
है नाम इस कारण **'पितामह'** भी वही जग-सार है।।

५७. **(यः पिता महानां पिता स प्रपितामहः)**

छन्द : जो है पिताओं का पिता इस विश्व का जो मूल है।
सारे पितर हैं पुत्र सम उसके, वही भव-कूल है।।
इस हेतु कहते हैं **'पितामह'** भी सभी जगदीश को।
स्मरण करते हैं विबुध इस भाव से जगदीश को।।११९।।

५८. **(यो मिमीते मानयति सर्वान् जीवान् स माता)**

छन्द : जैसे कृपा से युक्त जननी पालती सन्तान को।
सुख और उन्नति चाहती है, सुमिरति भगवान को।।
त्यों ईश भी सब जीव गण की वृद्धि ही है चाहता।
इस हेतु **'माता'** नाम उसका वह दु:खों को दाहता।।१२०।।

५९. **(चर गति भक्षणयो:)** आङ् पूर्वक इस धातु से **'आचार्य'** शब्द सिद्ध होता है।
य आचारं ग्राहयति, सर्वा विद्या बोधयति स आचार्य ईश्वरः।।

छन्द : जो सत्य का आचार ही है ग्रहण करता सर्वदा।
अर्थात् सत्याचारियों को शरण वह लेता सदा।।
है सत्य विद्या-स्रोत वह ही ज्ञान देता जीव को।
विद्या कराता प्राप्त सब आचार्य सम वह जीव को।।१२१।।
इस हेतु है **'आचार्य'** उसका एक नाम पवित्रतम्।
ध्यायें सदा उसको सभी, भवबन्ध से हों मुक्त हम।।

६०. **(गृ शब्दे)** इस धातु से **'गुरु'** शब्द बना है।
यो धर्म्यान् गृणात्युपदिशति स गुरु।
स पूर्वषामपि गुरुः काले नानवच्छेदात्।।
-योग दर्शन समाधि पाद सूत्र २६

छन्द : जिसने प्रतिष्ठा सत्य की औ धर्म को जग में किया।
प्रारम्भ में श्रुति ज्ञान देकर ज्ञानमय जग कर दिया।।
अग्न्यादि चार महर्षियों का और ब्रह्मा आदि का-
भी है गुरु वह ब्रह्म ही, अक्षर, अनीह अनादि का-
स्वामी वही है, नाश उसका है कभी होता नहीं।
उपदेश करता विश्व को, वह वास करता सब कहीं।।
इस हेतु उस परमात्मा का नाम **'गुरु'** भी है कहा।
उसकी शरण है अति सुखद, वह पूर्ण है सबसे महा।।१२२।।

६१. **(अज गति क्षेपणयो:, जनी प्रादुर्भावे)** इस धातु से **'अज'** शब्द बनता है।
यो अजति सृष्टिं प्रति सर्वान प्रकृत्यादीन् पदार्थान् प्रक्षिपति, जानाति वा कदाचिन्न जायते सोऽजः।

छन्द : आकाश आदि समस्त भूतों के सकल परमाणु को।
संगठित कर वह सृष्टि रचता प्रकृति अङ्ग महान् को।।
जो जन्म देता जीव को सम्बन्ध करके गात का।
पर स्वयं रहता है अजन्मा सङ्ग तजकर गात का।।१२३।।
है जन्म-मरण विहीन वह प्रभु इसलिए **'अज'** नाम है।
वह निर्विकार अदेह है, साकार लेकिन काम है।।

६२. **(बृह बृहि वृद्धौ)** इन धातुओं से **'ब्रह्म'** शब्द सिद्ध होता है।
योऽखिलं जगन्नि माणेन वृंहति बर्धयति स ब्रह्मा।।

छन्द : निर्माण करता जो जगत् का औ बढ़ाता है उसे।
इस हेतु **'ब्रह्मा'** नाम से भी मानते हैं सब उसे।।१२४।।

(क्रमशः आगामी अंक में) ■

● पं. देवनारायण तिवारी
धर्माचार्य आर्य समाज, कलकत्ता
विधान सरणी, कोलकाता, प. बंगाल
चलभाष : ९८३०४२०४९६

सरदार वल्लभभाई पटेल जयन्ती (३१ अक्टूबर) पर विशेष

१५ अक्टूबर २०१८ के दैनिक जागरण के विज्ञापन में प्रधानमन्त्री तथा गुजरात के मुख्यमन्त्री की ओर से प्रकाशित किया गया– ''अखण्ड भारत के निर्माता को शाश्वत आदरांजलि''।

प्रतिक्रिया

- यह १०० प्रतिशत गलत है। १९४७ में देश का विभाजन सरदार पटेल की भी सहमति/स्वीकृति से हुआ था। फिर उन्हें अखण्ड भारत का निर्माता कैसे कहा जा सकता है?
- उन्हें लौह पुरुष कहना उचित है क्योंकि उन्होंने बहुत कुशलता से ५६१ देसी रियासतों का सफलतापूर्वक विलय खण्डित भारत में कराया था।
- उनका पूरा नाम है– **सरदार वल्लभभाई जावेरभाई पटेल।**
- उनकी नई दिल्ली स्थित कोठी की सड़क का नाम था– औरंगजेब रोड।
- वे मृत्युपर्यन्त (१५.१२.१९५०) उप प्रधानमन्त्री एवं गृहमन्त्री रहे।
- उन्होंने सख्त व्यवहार करके हैदराबाद और जूनागढ़ रियासतों का विलय भारत में कराया था क्योंकि इनके नवाब विलय पाकिस्तान से चाहते थे।
- गाँधी, नेहरू और मौलाना आजाद के विरोध करने पर भी आपने सोमनाथ मन्दिर का जीर्णोद्धार कराकर डॉ. राजेन्द्र प्रसाद से उद्‌घाटन कराया था।
- आप देश विभाजन के समर्थक इसलिए हो गए थे क्योंकि समझौते में पहला प्रावधान था कि देश के १०० प्रतिशत मुस्लिमों को पश्चिमी और पूर्वी पाकिस्तान में भेजा जाएगा।
- मुस्लिम प्रेमी गाँधी–नेहरू ने गुप्त समझौता आपस में कर लिया था कि सारे मुस्लिमों को नहीं भेजेंगे। इसकी जानकारी पटेल को नहीं मिली थी।
- कांग्रेसियों का प्रचण्ड बहुमत पटेल को प्रधानमन्त्री बनाने के पक्ष में था लेकिन गाँधी ने लोकतन्त्र की हत्या करके जबर्दस्ती नेहरू को बनवा दिया।
- विश्व की सबसे ऊँची १८२ मीटर की प्रतिमा सरदार सरोवर बाँध के निकट लगा दी गई है। इसका लोकार्पण ३१ अक्टूबर २०१८ को प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी ने किया है।
- १८२ मीटर की ऊँचाई इसलिए रखी गई है क्योंकि गुजरात विधानसभा में १८२ विधायक हैं।
- पत्रकारों द्वारा पूछे गए प्रश्न के उत्तर में आपने स्पष्ट रूप से कहा था कि पूरे देश में केवल एक मुस्लिम ही राष्ट्रवादी है जिसका नाम है जवाहरलाल नेहरू।
- वे जम्मू–कश्मीर के मुख्यमन्त्री पद पर शेख अब्दुल्ला को बनाने के प्रखर विरोधी थे। वे नेहरू की कश्मीर नीति को देश विरोधी मानते थे।
- प्रतिमा स्थल केवड़िया गाँव, नर्मदा (गुजरात) में है। यह क्षेत्र पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया गया है जिसे देखने हजारों पर्यटक आते हैं।
- भारत सरकार ने नाम 'स्टेच्यु ऑफ यूनिटी' रखा है जबकि नाम 'स्टेच्यू ऑफ आयरन लीडर' रखना ज्यादा अच्छा रहता।

● **डॉ. विनोद कुमार गुप्ता** *(अध्यक्ष)*

● **अशोक माथुर** *(उपाध्यक्ष)*

सावरकरवाद प्रचार सभा, बुलन्दशहर (उ.प्र.)

(पृष्ठ १६ का शेष भाग)

सूर्य सदृश भारत भवन तो लन्दन में था, किन्तु उसकी प्रखर किरणों की भाँति श्यामजी कृष्ण विश्व धरातल पर भारतीय संस्कृति एवं उसकी स्वतन्त्रता की अलख जगाकर विश्व मानव बन चुके थे। वीर सावरकर तथा अन्य क्रान्तिकारी लन्दन से भारत आकर मुक्ति युद्ध में कूद पड़े थे तथा कालापानी व अन्य यातनाओं को झेलते हुए कारागारों में निरुद्ध कर दिये गये थे। श्यामजी ने अपनी संस्था एवं उसका भवन छोड़ दिये थे। सूर्य कहीं अस्त होता है, तो और कहीं उदय होता है। भारत भवन या उसका निर्माता रहा न रहा, किन्तु १५ अगस्त १९४७ की भारत स्वतन्त्र होने तक उसका सक्रिय प्रभाव काम करता रहा। इसका उदाहरण अमर शहीद ऊधमसिंह का वह बलिदान है जो उन्होंने अमृतसर के जलियाँवाला बाग के नरसंहार कर्ता जनरल ओ. डायर का भरी सभा में वध कर १९४० में प्रतिशोध स्वरूप प्राप्त किया था।

दधीचि ने स्वयं अपनी अस्थियाँ समर्पित कीं

नश्वर शरीर में रहने वाली अमर आत्मा नव जीवन प्राप्त कर और कुछ चमत्कार करने के लिए व्यग्र हो उठी। उन्होंने अपनी पत्नी भानुमती से अन्तिम आकांक्षा व्यक्त की कि मेरी मृत्यु के उपरान्त जब अन्त्येष्टि की जाये, तो अस्थियों को रक्षित किया जाये और उन्हें भारत भूमि पर तब भेजा जाए, जब वह स्वतन्त्र हो जाए। ३१ मई १९३० को श्यामजी का और १९३३ में उनकी धर्मपत्नी का निधन हो गया। धन्य है जिनेवा वासी, जिन्होंने इस महावीर दम्पति पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा की अस्थियों को सम्मानपूर्वक संग्रहालय में प्रतिष्ठित रखा। भारतीय सत्ता सामाजिक महत्ता ने इन क्रान्ति पुरुषों को भारत लाने का पहले क्या प्रयत्न किया, पता नहीं। परन्तु भारत माता अपने उस सपूत को जन्म देकर कृतकृत्य हुई जो गुजरात के मुख्यमन्त्री नरेन्द्र मोदी के नाम से सुख्यात हुआ और जो आज अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त भारत देश का प्रधानमन्त्री है जिसने अपने पुरुषार्थ से उन प्रेरणा किरण अस्थियों को जिनेवा से स्वतन्त्रता के ५७वें वर्ष में २५ अगस्त २००३ को मुम्बई लाने में समर्थ हुआ। सम्पूर्ण गुजरात में इस अस्थि कलश की शोभायात्रा वीरांजलि के रूप में निकालते हुए राष्ट्र नायक मोदी ने पं. श्यामजी के शरीर की भस्म को माण्डवी नगर स्थित उनके पुरखों के घर में पहुँचा दिया। भस्म तो उड़ती है। इसकी यात्रा कब रुकती है। जल व वायु के साथ मिलकर यह तो देश देशान्तर में मेघ गर्जना की भाँति वर्षा कर बिखर जाती है।

अस्थियाँ तो सदैव रहती नहीं, किन्तु उक्त मन्त्र में **'अस्थभिः'** शब्द का अर्थ किरणें बताया गया है, जो कभी मिटती नहीं। जो युगों–युगों तक अपनी छटा बिखेरती रहेंगी। ■

हम पूर्वाग्रह से ग्रसित परम्परावादी नहीं अपितु विवेक के अनुगामी बनें

• पं. उम्मेदसिंह विशारद
गढ़ निवास मोहकमपुर, देहरादून (उत्तराखण्ड)
चलभाष : ९४११५१२०११, ९५५७६४१८००

महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी के उपदेशों मे कहा गया है कि स्वस्थ समाज की प्रगति में स्वस्थ रीति-रिवाजों एवं सत्य परम्पराओं का विशेष योगदान होता है। कई सत्य वेदानुकूल परम्परागत प्रचलन ऐसे हैं जो आज भी स्वस्थ समाज की प्रगति में सहायक है। किन्तु अनेक अन्ध परम्पराओं व रूढ़ीवादी प्रचलनों को उखाड़ फेंका जाना चाहिये। समाज का स्वस्थ निर्माण तब तक सम्भव नहीं जब तक कि हम व्यर्थ अविवेकशील सिद्धान्तहीन परम्पराओं से ग्रसित प्रचलनों को दूर करने में आमूलचूल क्रान्ति नहीं करेंगे। पिछड़ेपन की ओर ले जाने वाली अवैज्ञानिक व सृष्टिक्रम के विरुद्ध अप्रासंगिक समझी जाने वाली रूढ़ी मान्यताओं, अन्धविश्वासों से मुक्ति पाने का सर्वप्रथम प्रयास होना चाहिये।

हम हिन्दू-मुसलमान-ईसाई व अन्य अन्ध परम्पराओं में क्यों लिपटे हुए हैं?

आज के सामाजिक व्यवस्था के संस्कारों में झूठी मर्यादा में हिन्दू-मुसलमान-ईसाई क्यों है क्योंकि प्रत्येक मत के बच्चों को माँ के पेट से अपने मतों का संस्कार दिया जाता है। **जो-जो बच्चा जिस-जिस समूह में जन्म लेता है उसके मत के संस्कार उसके चित्त पर अंकित हो जाते हैं। वह उसकी परम्परा बन जाती है। वह अपने को पूर्ण रूप से हिन्दू-मुसलमान-ईसाई व अन्य समझकर उस मत के विपरीत एक शब्द भी नहीं सुनना चाहता है। वह उस मत को अपनी मर्यादा समझ लेता है। बस संसार में अशान्ति व मनुष्य को बाँटने का यही कारण है।** तो फिर मानव किसे अपनाए?

ईश्वर ने प्राणीमात्र के लिए इस विशाल सृष्टि का निर्माण किया है और मानव सब प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ योनि है। प्रत्येक प्राणी को जीवन जीने के पदार्थ भी बनाए हैं। और मानव मात्र को सुखी जीवन की कर्म व्यवस्था में वेदों का ज्ञान भी दिया है। और मनुष्य को बुद्धि विशेष देकर कर्म करने में स्वतन्त्र भी किया हुआ है। किन्तु कर्मफल प्रदान ईश्वरीय हाथ में है। **संसार में मानव ने अपने स्वार्थ के लिए मनुष्यों को वर्गवाद, जातिवाद, अलग-अलग मतों में बाँटकर अलगाववाद की खाई खोद रखी है।** मनुष्य जिस वर्ग में जन्म लेता है, उसको गर्भ से ही उस मत के अर्थात् हिन्दू-मुसलमान-ईसाई आदि के संस्कार गर्भ से लेकर आजीवन थोप दिये जाते हैं और मनुष्य ईश्वरीय व्यवस्था को भूलकर आपस में अपने व्यर्थ वर्गवाद को लेकर एक-दूसरे से अपने को बड़ा समझते हैं। आपस में अपने अहं को लेकर मरते रहते हैं। इसलिए हे मनुष्य! तू यदि ईश्वरीय प्रदत्त वैदिक धर्म जो सृष्टि क्रमानुसार व वैज्ञानिक मार्गदर्शक धर्म है उसका पालन करता तो आज संसार में विकृत स्थिति नहीं होती। वास्तव में इस संसार में न कोई हिन्दू न कोई मुसलमान न कोई ईसाई है। यह मनुष्यों द्वारा मनुष्यों पर थोपे गये मत हैं। मनुष्य मात्र का धर्म व मत तो केवल मनुष्य मत व वैदिक धर्म है। यह भयंकर अलगाववाद की स्थिति तभी समाप्त होगी जब सृष्टि में प्रलय आएगा। यह विकट नासूर बन गए हैं। यदि मनुष्यों में सुबुद्धि आ जाए तो केवल महर्षि दयानन्दजी द्वारा प्रदत्त वेदज्ञान व आर्य समाज जो मनुष्य मत व वैदिक धर्म व विज्ञान के अनुसार चल रहा है। यदि सारा संसार उक्त ईश्वरीय व्यवस्था में चलने लगे तो वातावरण आज भी बदल सकता है।

भारत वर्ष में धर्म निरपेक्ष मान्यता व कानून से लाभ या हानि

ईश्वर द्वारा प्रदत्त ज्ञान धर्म सदैव एक रस रहता है। धर्म का अर्थ है जिस पदार्थ के गुण, कर्म और स्वभाव सदैव एक समान बने रहें और सभी प्राणियों में परोपकार बना रहे जिसमें निज स्वार्थ न्यून और परमार्थ अधिक हो उसे धर्म कहते हैं। ईश्वर ने सृष्टि को संचालन हेतु वैदिक धर्म सापेक्ष बनाया है। मानव समाज ने विशेषकर भारत वर्ष के धर्म निरपेक्ष कानून मान्यता मानने से सृष्टि प्रलय तक एक अशान्ति की दीवार खड़ी कर दी है। और ईश्वरीय नियम का उल्लंघन किया है। भारत वर्ष ने अति उदारता से प्रत्येक मत मतान्तरों और रूढ़ी परम्पराओं की मान्यता दिखाकर मानव मानव को बाँट दिया है।

एक उदाहरण- आज संसार में कोरोना जैसी भयंकर महामारी फैली हुई है। सब ओर त्राहि-त्राहि मची है। किन्तु भारत वर्ष के मुसलमान मस्जिदों में हजारों को जमा करके भयंकर बीमारी को बढ़ा रहे हैं और अनर्गल बयान देकर धर्म निरपेक्षता की दुहाई देकर भारत में विष घोल रहे हैं। ये कैसी धर्म निरपेक्षता है जिससे मानवता मर रही हो। भारत के लिए यह विचारणीय स्थिति है।

ईश्वर ने सब प्राणियों के सर्वसुख के लिए वैदिक धर्म सापेक्ष ज्ञान दिया है

ईश्वर ने सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, अग्नि, वनस्पति अन्य आदि सबके लिए दिये हैं। किसी के कोई भी भेदभाव नहीं रखा है। ईश्वर की सृष्टि रचना अद्भुत है। वह सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक है। इसी प्रकार से वेदों का ज्ञान भी दिया है। वेदों में कोई वर्ग वाद, जन्म जातिवाद, इतिहास, अन्धविश्वास नहीं है और कोई रूढ़ी परम्परा नहीं है। वेदों में सत्य साम्यवाद है, वेदों में कुशल राजनीति नेतृत्व ज्ञान है। अस्तु मानवों ने ईश्वर का स्वरूप को न समझकर अपने-अपने कथित मत पंथ बनाकर ईश्वरीय आज्ञा को ठुकरा दिया है। मानव समाज को बाँट दिया है। फलस्वरूप आज भ्रष्ट राजनीति, व्यवसाय, विद्या, काल्पनिक भगवान, देवी-देवता, भिन्न-भिन्न विचार धाराएँ, व्यावसायिक रूखी शिक्षा पद्धति उत्पन्न करके सात्विक विचारों से मानव को दूर कर दिया है। ईश्वर द्वारा रचित पदार्थों से ही मानव सम्पूर्ण जीवन व्यतीत करता है। इन पदार्थों में कभी भी किसी भी तरह कमी नहीं होती है। इसलिए ईश्वर ने संसार को धर्म सापेक्ष स्वाभाविक रूप से बनाया है।

यदि यह बात संसार के लोगों को विशेषकर भारतवासियों के समझ में आ जाए तो हमारी प्रत्येक समस्या का हल हो जाए। अत: भारतवासी जब तक वैदिक धर्म सापेक्ष देश नहीं बनता तब तक चहुँओर अशान्ति बनी रहेगी।

अन्धविश्वासों की भूल-भुलैया से निकलें

पिछले पाँच हजार वर्षों के इतिहास को भारतीय समाज और संस्कृति का अन्धकार युग कहा जाना चाहिये क्योंकि इस अवधि में अपने भारतीय समाज की स्थिति निरन्तर पतनोन्मुख ही रही। पतनशील प्रवाह इस स्थिति में पहुँच गया है कि इस प्रवाह को रोकने के लिए अठारहवीं शताब्दी में युग पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी ने भारत में जन्म लिया और सदियों से चली आ रही धार्मिक, रूढ़ी, सामाजिक कुप्रथाएँ, भ्रष्ट राजनीति सदियों से पराधीनता भारत की इन सबके उन्मूलन के लिए आवाज उठाई, एक सुधारवादी वैचारिक क्रान्ति का सूत्रपात हुआ। भारतीयों में नई चेतना का संचार हुआ और धार्मिक–सामाजिक– राजनीतिक अराजकता के ठेकेदारों की चूलें हिल गईं। उनको विचारों में परिवर्तन करने के लिए मजबूर होना पड़ा। किन्तु वे सभी पूर्वाग्रह से ग्रसित विचारों को पूर्ण रूप से दूर नहीं कर सकें हैं। जिससे अन्धविश्वासों का चलन अभी भी हमारे समाज को घुन की तरह खा रहा है।

धार्मिक अन्धविश्वास : महापुरुषों को ईश्वर मानकर और उनकी प्रतिमा बनाकर पूजना और उनके आदर्शों व चरित्रों पर न चलकर जनता में भ्रम फैलाना और यह उपदेश देना कि ये कार्य तो कथित ईश्वर ही कर सकते हैं। उन महापुरुषों के चरित्रों की अवहेलना करना आदि देवी–देवताओं के नाम पर बलि देना, धर्म की आड़ में अन्ध परम्पराएँ फैलाना, सिर पर देवता आने का ढोंग, धार्मिक क्षेत्र में ठगी करना, ईश्वर का अवतार लेना मानना, जादू–टोना, भूत–प्रेत का चक्कर, अनेक भ्रमित अन्धविश्वास फैलाकर जनता को ईश्वर से बहुत दूर करना आदि–आदि।

सामाजिक अन्धविश्वास : व्यर्थ जातिवादी, छुआछूत मानना, दहेज प्रथा, जादू चमत्कारों का प्रदर्शन, फलित ज्योतिष का चक्कर, कर्मवादी न बनाकर भाग्यवादी बनाना, अपने कर्मफल का दोष ईश्वर पर देना।

अन्ध विश्वास एक सामाजिक कोढ़ : पिछड़ेपन का पोषक अन्धविश्वास, शिक्षा को आध्यात्म ज्ञान न देकर व्यवसायी बनाना, अवतारों की पल्टन, पूर्वाग्रह की अनैतिक परम्परा नहीं औचित्य देखें। विवेकहीन कुप्रचलन, कुण्डली व मुहूर्त का अज्ञान, मृतक भोज, फैशन के नाम पर चुस्त कपड़े, परिवार में बड़ों का आदर न करना, उत्सवों के नाम पर दिखावा, शादी में कॉकटेल पार्टी, गरीब–अमीर की दीवार, वर कन्या के गुण कर्म स्वभाव न मिलाकर कुंडली मिलान आदि अनेक कुप्रथाएँ हैं।

राजनीतिक अन्धविश्वास : विद्वान् व सत्यवादी को न जिताकर भ्रष्टाचारी व धनाढ्य को नेतृत्व देना, अन्धविश्वासी एवं अनपढ़ या जो धर्म का मर्म नहीं जानते, जड़ व चेतन की परिभाषा नहीं जानते, ईश्वर का सत्य स्वरूप नहीं पहचानते तथा जो स्वार्थी और अहंकारी हो उसको जनता का नेतृत्व करने का कोई अधिकार नहीं है। ऐसे विचारों वाले प्रजा के दुश्मन तो हो सकते हैं किन्तु सृजन नहीं कर सकते हैं। ■

(पृष्ठ १४ का शेष भाग)

घूमते–घामते स्वामीजी पुन: टेहरी पहुँचे। १७ अक्टूबर १९०६ को दीपावली के दिन के १२ बजे तैंतीस वर्ष के होने के पाँच दिन पूर्व ही अपना शरीर गंगा को समर्पित कर दिया। आठ दिन बाद उनका शरीर गंगा में तैरता हुआ मिला तो विधि–विधान से उनका अन्तिम संस्कार कर लकड़ी की एक मंजुषा में लिटाकर गंगा में प्रवाहित कर दिया गया। टेहरी नरेश ने अपने राज्य में उस दिन सभी कार्यालयों में अवकाश घोषित कर राज्य के अन्दर शोक मनाया।

स्वामी रामतीर्थ ने जीवन भर देश और हिन्दू जाति की सेवा की। स्वामी रामतीर्थ ने अमेरिका में ब्रिटिश शासन के विरोध में कहा था– अन्धकार पूर्ण देश की भयंकर राजनीति दुर्दशा से राम अछूता नहीं रह सकता। उसके देश में लाखों व्यक्ति भूख से अकाल में मर रहे हैं। वहाँ अल्पवयस्क बच्चे और बच्चियाँ भुखमरी के ग्रास बनते जा रहे हैं। कितने होनहार नवयुवक दरिद्रता और प्लेग के शिकार हो रहे हैं। वहाँ सुकुमार बच्चों और बच्चियों के सूखे अधर अपनी माँ के दुग्धपान के लिए ललक रहे हैं किन्तु उन माताओं का शरीर कंकाल प्राय: है। उनके स्तनों का दूध उपवास के कारण सूख गया है। उस देश में बिरले ही मनुष्यों को दो जून का भोजन मिल रहा है। वहाँ जिसे दोनों वक्त भोजन मिल जाता है वही धनी और सम्पन्न समझा जाता है। तुर्रा यह कि वहाँ की सरकार इन भूखे, दीनों पर भी कर लगाकर उनका रहा–सहा रक्त भी चूस रही है। बड़े–बड़े पदों पर अंग्रेज सुशोभित हैं। इंग्लैंड की पार्लियामेंट में भारत के तीस करोड़ लोगों का कोई भी प्रतिनिधि नहीं है। भारत के सभी देशी धन्धों और व्यापार का अंग्रेजों ने सत्यानाश कर दिया है।

अंग्रेजों के शासन में भारत के वायसराय कर्जन अंग्रेजी औरंगजेब हैं। फिर हिन्दू जाति की स्थिति के विषय से वे कहते हैं जबकि जाति–पाति के भावों का काँच जैसा जल्द टूटने वाला परदा हृदयों का मिलाप नहीं होने देता। उस समय यदि हम अपनी समस्याएँ, विवेक और न्याय द्वारा निपटाना चाहें तो उसका और भयंकर उल्टा परिणाम होता है। फिर हिन्दू समाज में स्त्रियों की स्थिति के विषय में वे कहते हैं, सभ्य समाज में स्त्री को निर्जीव पदार्थ का दर्जा दिया जाता है। पुरुष अपने कार्यों में सर्वथा स्वतन्त्र है, स्त्री के हाथ–पाँव जकड़कर बाँधे हुए है। स्त्रियों, बालकों और श्रमजीवी जातियों की शिक्षा पर ध्यान न देना, उन्हीं शाखाओं को काट डालना है जिनके सहारे हम खड़े हुए हैं। इतना ही नहीं, यह तो राष्ट्रीयता की जड़ पर घातक कुठाराघात करना है।

राम की दृष्टि में समाज के कुचले हुए लोग राष्ट्रीयता के वृक्ष की जड़ है। तथाकथित उच्च वर्ग के लोग उसके फल हैं। यदि जड़ की उपेक्षा और अवहेलना करोगे तो शाखाएँ, टहनियाँ, पत्तियाँ, फूल, फल सभी कुछ नष्ट हो जाएगा। स्वामी रामतीर्थ के बताए हुए रास्ते पर चलकर ही हम राष्ट्र का विकास कर सकेंगे और यही उनको सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ■

दशहरा अर्थात् विजयादशमी

● डॉ. गंगाशरण आर्य, 'साहित्य सुमन'
चरित्र निर्माण मण्डल, सैनी मोहल्ला,
ग्राम- शाहबाद, मोहम्मदपुर, नई दिल्ली,
चलभाष : ९८७१६४४१९५

दशहरा अर्थात् विजयादशमी भारत में मनाया जाने वाला एक प्रसिद्ध त्योहार है। कहते हैं कि इस दिन श्रीराम ने रावण का वध किया था और लंका पर विजय प्राप्त की थी। लेकिन ऐसी लोक प्रचलित असत्य धारणा है क्योंकि रावण-वध तो श्रीराम ने चैत्र मास में किया था। ना कि अश्विन मास में। आइये! सर्वप्रथम यही जानने का प्रयास करते हैं कि विजयादशमी है क्या? अर्थात् दशहरा क्यों मनाया जाता है?

सम्पूर्ण जगत् में भारत ही ऐसा भूखण्ड है जहाँ दो-दो महीने की छह ऋतुएँ होती हैं और विशेष रूप से चार-चार महीने की तीन बड़ी ऋतुएँ सर्दी, गर्मी, वर्षा भी होती है। अर्थात् हर चार मास के बाद क्रमशः ग्रीष्म, वर्षा और शरद ऋतु आती है। ऋतु परिवर्तन होता रहता है। अन्य देशों में ऐसा नहीं होता। वहाँ वर्ष भर में केवल दो ही ऋतु होती है। उन्हीं में समय-समय पर वर्षा भी होती है। यहाँ भी वर्षा समय-समय पर गर्मी और सर्दी दोनों ऋतुओं में भी होती है परन्तु फिर भी चार महीने वर्षा के विशेष रूप से माने जाते हैं जिन्हें चौमासा कहा जाता है।

हमारे देश में वर्षा ऋतु के अन्त में एक पितृ-तर्पण भी होता है अर्थात् जीवित गुरु, आचार्य, विद्वान, महात्मा, संन्यासी, माता-पिता की सेवा की जाती है। उन्हें भोजन आदि से तृप्त किया जाता है। (पितर संज्ञा जीवितों की ही होती है, मरे हुओं की नहीं) यह भी माना जाता है कि महात्मा तपस्वी, संन्यासी, विद्वान् जो कन्दराओं में, वानप्रस्थी होकर जंगलों में रहते थे, वह वर्षा ऋतु में ग्रामों, नगरों में आ जाते थे और वर्षा ऋतु बीतने पर आश्विन की अमावस्या के बाद वह वापस अपने आश्रमों में चले जाने की तैयारी करते थे। इसलिए क्योंकि इन पितरों ने दोबारा फिर एक वर्ष के बाद चौमासे में ही वापस आना होता था, इसलिए उनकी तरह-तरह के भोजन वस्त्र आदि से खूब सेवा की जाती थी। यह पितृ तर्पण श्राद्ध कहलाया जाने लगा। क्योंकि इन सबको शास्त्रों में पितर कहा गया है। वापस जाने वाले पितरों के प्रति श्रद्धा, आस्था का भाव बनाए रखना यही श्राद्ध था। यही तर्पण था। मृतक द्वारा मरने के बाद तो आगे जाकर दूसरा शरीर धारण कर लिया जाता है। उस रूप में वह वापस आ ही नहीं सकता क्योंकि उनका पहला शरीर तो अग्नि में जल चुका है। परन्तु अब तो श्राद्ध का ही रूप बदल गया है। अब तो मरे हुए पूर्वजों के नाम पर श्राद्ध के निमित्त कृष्ण पक्ष के आश्विन मास के १५ दिन तक ब्राह्मणों को भोजन कराया जाता है। पिण्डदान किया जाता है। अब तो यही कुछ किया जाता है जबकि इसका वास्तविक पितृ तर्पण से कोई सम्बन्ध नहीं है। जीवित माता-पिता की सेवा और साधु-महात्मा, संन्यासी व विद्वानों की सेवा ही पितृ तर्पण है। इसे हम भूल गए हैं। पूर्वजों की तृप्ति के नाम पर कराया जाने वाला भोजन श्राद्ध नहीं है। इस विषय में अधिक जानकारी के लिए मेरे द्वारा लिखित पुस्तक **'श्राद्ध किसका? मृतकों का या जीवितों का?'** अवश्य पढ़ें। वास्तव में श्राद्ध तो जीवित माता-पिता, दादा-दादी, विद्वान महात्माओं की सेवा करना ही होता है।

पितृ पक्ष की समाप्ति आश्विन की अमावस्या पर हो जाती थी और आश्विन सुदी प्रथमा से दशमी तक इन दस दिनों में वह पितर अपने-अपने स्थानों पर पहुँच जाते थे। वर्षा ऋतु में रुके सभी कार्य आरम्भ हो जाते थे, क्षत्रिय अपने 'हथियारों' का परीक्षण करते थे। विजय यात्राएँ आरम्भ हो जाती थी। इसलिए इस अवसर पर विजयादशमी का पर्व मनाया जाता था। किसान आश्विन सुदी प्रथमा को 'जौ' आदि अनाजों के बीज परीक्षण के लिए बोते थे ताकि आगे बोई जाने वाली फसल का बीज परीक्षण हो जाए क्योंकि यदि खेत में बोया हुआ बीज न उगे या कम उगे तो किसान की बहुत बड़ी हानि होती थी। इसलिए परीक्षण जरूरी था। ऐसी परम्परा भी सभी स्थानों पर देखने में आती है।

अब तो सब कुछ बदल गया है। लोग सब कुछ भूल गए हैं। केवल अब तो विजयादशमी को भारत वर्ष में सर्वत्र रावण का पुतला जलाने की परम्परा चल पड़ी है। अब इस पर्व को कोई विजयादशमी नहीं कहता। अब तो इसे दशहरे के नाम से जाना जाता है। रावण के दस काल्पनिक सिर कहे जाते हैं वैसे तो सृष्टि नियम के विरुद्ध दस सिर वाला मनुष्य हो ही नहीं सकता परन्तु जब पौराणिक भाइयों ने अपने महापुरुषों को नहीं छोड़ा काल्पनिक दोष लगाने में तो फिर रावण तो राक्षस कहा जाता है। उसकी क्या औकात कि वह इनके द्वारा बच जाए। वास्तव में रावण को चार वेद और छः शास्त्रों का ज्ञान था उसके कोई अन्य काल्पनिक सिर नहीं थे। ये काल्पनिक सिर तो प्रतीकात्मक रूप से हैं और कुछ नहीं। रावण का वध विजयादशमी को नहीं हुआ था क्योंकि वाल्मीकि रामायण के किष्किन्धा काण्ड के २४वें सर्ग के ८वें, १०वें, ११वें श्लोक में श्रीरामजी लक्ष्मण को सम्बोधित करते हुए कहते हैं- 'सूर्य की प्रचण्ड गर्मी से कीचड़ सूखकर नष्ट हो गई है, भूमि ने घनी धूल को उत्पन्न कर दिया है। परस्पर बैर रखने वाले राजाओं का उद्योग समय आ गया है।''

''हे सौम्य! एक-दूसरे से बैर रखने वाले विजयाभिलाषी राजाओं की युद्ध यात्रा के उद्योग का यही समय है।''

''हे राजकुमार! विजय अभिलाषी राजाओं के लिए यह यात्रा का प्रधान समय आ गया है परन्तु मैं ना तो सुग्रीव को देखता हूँ और ना ही सीता के अन्वेषण के लिए कोई तैयारी ही देखता हूँ।'' इसके बाद लक्ष्मणजी को सुग्रीव के पास भेजते हैं ताकि सीताजी का पता लगाया जा सके और लगभग एक महीने का वक्त सुग्रीव अपनी वानर सेना को सभी दिशाओं में भेजकर सीताजी का पता लगाने के लिए देते हैं।

और कार्तिक मास पूरा बीत जाने पर भी सीता के विषय में कोई भी सूचना किसी भी दिशा में गई वानर सेना से प्राप्त नहीं होती है तो फिर आश्विन मास शुक्ल पक्ष की दशमी को रावण का वध कैसे सम्भव हो सकता है? उपरोक्त तथ्यों पर विचार करने से पता चलता है कि ना तो रावण का वध ही विजयादशमी के दिन हुआ था और ना ही रावण के दस सिर थे।

विजयादशमी भारत का एक महान पर्व है जो हमें विजय पताका फहराने की प्रेरणा देता है। उन्नत खेती की प्रेरणा देता है। शुद्धता, पवित्रता की प्रेरणा देता है। पर्व तो पर्व है। उस पर्व को मनाते हुए यदि हमने अपने आपको पवित्र नहीं किया, अपने आपको प्रेम रस से परिपूर्ण नहीं किया, द्वेष-भाव को त्यागकर एक-दूसरे को गले नहीं लगाया तो पर्व मनाने का क्या लाभ हुआ?

कई लोग दशहरे को पाप पर पुण्य की विजय, दुराचार पर सदाचार की विजय, दुष्टता पर सज्जनता की विजय, राक्षसों पर देवताओं की विजय का पर्व मानकर मनाते है। यह मानना भी ठीक है। जब-जब दुराचारी, पापी और दुष्ट लोग अर्थात् राक्षसी प्रवृत्ति के लोग देश में बढ़े हैं, तब-तब देश में अराजकता, दु:ख और कष्ट बढ़े हैं। राक्षस सदा देवताओं के शत्रु रहे हैं। यह देवासुर संग्राम सृष्टि के आरम्भ से चला आ रहा है। बाह्य जगत में तथा मानव के अन्तरात्मा में यह युद्ध निरन्तर चलता रहता है। मानव जाति में देव और असुर दोनों तरह की प्रवृत्ति वाले लोग होते हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह व अन्धकार की सीमा के बाहर जाकर कर्म करने पर राक्षस बन जाते हैं। आँख, नाक, कान, जिह्वा एवं वाणी आदि देवताओं के साथ इनका युद्ध होता रहता है। जब राक्षसी विचारों (काम, क्रोध आदि) की प्रबलता होने पर अर्थात् अपने मन की लगाम को अपने वश में न रखने पर मनुष्य की आत्मा इन्द्रियों को अपने वश में करने की बजाय उनके वशीभूत हो देवता से राक्षस बन जाता है। इसके विपरीत इन्द्रियों का स्वामी हो जाने पर राक्षस से देवता की श्रेणी में अपना स्थान बना लेता है।

विजयादशमी का पर्व हमें यह सन्देश देता है कि हमें कभी भी राक्षसी विचारों को पनपने नहीं देना चाहिये। जब भी राक्षसी विचार हमारे भीतर पैदा होने लगे तो तुरन्त ही सचेत होकर हमें उन्हें नष्ट कर देना चाहिये। तब ही मनुष्य दिव्य गुणों से युक्त होकर दानव बनने से बच सकेगा और अपने जीवन के लक्ष्य को जानकर उसे प्राप्त करने के मार्ग की ओर अग्रसर हो सकेगा। आर्यावर्त (भारत वर्ष) में दिव्य गुणों से युक्त संतति का (गुरुकुल प्रणाली के द्वारा) निर्माण और उस संतति के द्वारा पूरे विश्व में फैले अनाचार, दुराचार को समाप्त करने का जो तारतम्य था, जिसके कारण भारत कभी विश्वगुरु के पद पर आरूढ़ था, के अभाववश आज आर्यावर्त पिछड़ता जा रहा है। बाह्य देश इसकी इसी कमजोरी का फायदा उठाकर इस पर शासन करने में सफल हो रहे हैं। तभी तो आज के भारत में मनुष्यता कहीं खो गई है और राक्षसी तत्वों की बढ़वार होकर दानवता पनप रही है। चारों ओर भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, चरित्रहीनता, स्वार्थपरता का बोलबाला है। आज का मनुष्य रूपी दानव जरा-जरा सी बात पर गुस्से में आकर तोड़-फोड़ यहाँ तक कि हत्या करने में भी अब तो शर्म-संकोच नहीं करता। राक्षस राज रावण का पुतला हर साल दशहरे के नाम पर लोग जलाते हैं लेकिन अपने अन्दर पनप रहे रावण को समाप्त करने का प्रयास तक नहीं करते। अरे! रामायण को ध्यान से पढ़ो, रावण ने सीता का केवल अपहरण किया था और अपहरण करने के बाद भी अपनी मर्यादा नहीं तोड़ी थी। अर्थात् उसे छुआ तक नहीं था। कहने का तात्पर्य है कि राक्षसी पदवी को प्राप्त करने के बाद भी रावण शास्त्रीय नियम के विरुद्ध नहीं जाता है। और ना कामुकतावश बलात् दुष्कृत्य सीताजी के संग करता है। वह बदले की भावना से सीताजी को उठाकर ले गया था। फिर भी उसे अपने महल में न रखकर अशोक वाटिका में उसके रहने की व्यवस्था करता है। उसकी अशोक वाटिका में सीता सुरक्षित रही, वह उसे पटरानी बनने के लिए मनाता रहा, गिड़गिड़ाता रहा परन्तु उसके साथ कोई जबर्दस्ती नहीं की। उस समय हमारे देश में रावण जैसा कोई भी दुराचारी नहीं था। हमारे देश में देवताओं का निवास था। परन्तु आज स्थिति इसके विपरीत है। आज तो हर गली में, हर मोहल्ले में रावण बैठे हैं। राह चलती लड़कियों से लेकर दूधमुँही बच्चियों तक के साथ दुष्कृत्य करने की ताक में रहते हैं। उन्हें कोई दण्ड नहीं दिया जा रहा है। प्रशासन भी चुप है और जनता भी चुप। सारे देश में ऐसा हो रहा है लेकिन इन रावणों पर कोई कार्यवाही होती नजर नहीं आती। केवल रावण के पुतले फूँकने से कुछ नहीं होगा, इन आधुनिक रावणों का भी कुछ तो इलाज करना ही चाहिये। खैर, विषय की ओर वापस चलते हैं। हमें विजयादशमी अर्थात् दशहरे पर अपने भीतर के रावण को हराकर उस पर विजय पाना है।

ध्यान रहे विजयादशमी या दशहरे का त्योहार मनाते समय हमें इसके वास्तविक स्वरूप को समझकर मनाना है। यह बात ठीक है कि अब वर्षा ऋतु के आने पर भी कोई मार्ग अवरुद्ध नहीं होता, ना ही कोई कामकाज स्थगित होता है या रुकता है, ना ही अब पर्वतों पर या जंगलों में साधु-संन्यासी रहते हैं, ना ही अब कहीं जंगल हैं। कुछ समय बाद तो खेती के लिए भी पता नहीं भूमि बचेगी या नहीं, यह भी पता नहीं। क्योंकि प्रतिदिन सभी नगरों में सैकड़ों कॉलोनियाँ कट रही हैं। कुछ किसानों की भूमि सरकार अधिग्रहण (इक्वायर) कर रही है। कुछ कॉलोनियाँ काटने वाले प्रॉपर्टी डीलर भूमि खरीदते जा रहे हैं और प्लॉट काट-काट कर बेचते जा रहे हैं। अब तो सारी स्थिति ही बदली हुई है। हमें इस स्थिति में भी इस पर्व के महत्व को समझना है और प्राचीन परम्परा के अनुसार इस पर्व को मनाना है। इस पर्व पर आज जो पटाखे आदि छोड़े जाते हैं वह वायु प्रदूषण को बढ़ाने में ही सहायक हैं जिसे हमें व हमारे बच्चों को ही भविष्य में भोगना है। इसलिए अपने वातावरण को प्रदूषण से बचाने के लिए व अपनी जीवन रक्षा हेतु इन्हें बन्द करना चाहिये। जब हर कोई इस प्रकार सोचकर क्रियान्वित करेगा तो अवश्य ही प्रदूषण के निवारण में सहायता होगी। इसके अलावा एक काम और करना है कि जो पैसे हम पटाखे पर खर्च करते हैं, उनका प्रयोग किसी जरूरतमन्द और गरीबों की मदद के लिए करना है ताकि समाज में चोरी, हत्या और लूटपाट से बचा जा सके।

अत: इस पर्व को मनाते हुए अपने लिए, परिवार के लिए, दूसरों के लिए, समाज के लिए, देश के लिए कुछ सोचें जिससे सबकी उन्नति हो सके और देश को बचाया जा सके। ■

अध्यात्म का सरल व सही मार्ग क्या है?

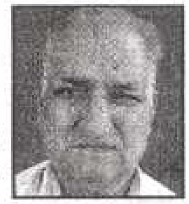

● मोहनलाल दशौरा 'आर्य'
नारायणगढ़, जनपद : मन्दसौर (म.प्र.)
चलभाष : ९५७५७९८४१२

हम देख रहे हैं, कई लोग अध्यात्म को जरूरी ही नहीं समझते जबकि जीवन की गाड़ी भौतिक और आध्यात्मिक दो पहियों पर ही सही चल सकती है। कई लोग अध्यात्म, पुनर्जन्म और कर्मफल पर विश्वास ही नहीं करते। कहते हैं सब ढकोसला है। कहते हैं जो कुछ है वह इसी जीवन में सम्भव है। खाओ-पीयो और मौज करो। कल क्या? पता नहीं। बहुत से लोग शरीर और शरीर के सुख साधन पर ही ध्यान देते हैं। इसी के आराम परवरिश में सारा जीवन खपा देते हैं। कर्मफल का डर न होने से अवैध धन्धे, कदाचार, दुराचार व दुर्व्यसनों में लिप्त रहकर जीवन बिता देते हैं। मैं और मेरा बस। पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश से बना शरीर इन्हीं में मिल जाता है। जीव और आत्मा किसने देखा?

इसके विपरीत अधिक प्रतिशत लोग आत्मा, परमात्मा, धर्म, सेवा, परोपकार, दया, अहिंसा तथा कर्मफल और पुनर्जन्म में पूर्ण विश्वास करते हैं। वे शरीर को नश्वर व आत्मा को अमर मानते हैं। और साधना, आराधना के अनेक तरीके अपनाकर स्वर्ग (मोक्ष) के लिए प्रयास करते हैं। वैसे सत्य-असत्य, धर्म-अधर्म, पुण्य-पाप, हिंसा-अहिंसा, भला-बुरा का भेद अपने हिसाब से सभी जानते हैं। चाहे बुद्धिमान हों या मन्दबुद्धि, शिक्षित हो या अशिक्षित, ब्राह्मण क्षत्रिय हो या वैश्य शूद्र। वे सब अपने-अपने ज्ञान के अनुसार देवी-देवता, इष्ट भगवान, गॉड, खुदा या ईश्वर को मानते रहते हैं। अध्यात्म के रास्ते पर चलने के अनेक तरीके (मार्ग) महापुरुषों ने, धर्म प्रणेताओं ने, सन्तों ने व शास्त्रों ने बताए हैं। गीता पढ़ो, रामायण पढ़ो, कुरान पढ़ो, बाइबिल पढ़ो या अन्य पुराण ग्रन्थ जो समय-समय पर मानव ने अपने ज्ञान से रचे व बताए और उस पथ पर चलने के निर्देश दिये। आज तो जितने तबके समाज में हैं, उनसे अधिक इष्ट देवी-देवता, तथाकथित सन्त-विद्वान, उपदेशक और आराधना (धर्म) के रास्ते। मन्दिर, मस्जिद बनवाना धर्म, मूर्ति स्थापना धर्म, प्राण प्रतिष्ठा धर्म, पूजा-पाठ, अभिषेक-पारायण धर्म, सदाव्रत, भण्डारा धर्म, दान चंदा इकट्ठा करना धर्म। इनकी आड़ में कर्म कैसे भी हो तो चलेगा। माफी माँग लेगे, गंगा स्नान कर लेंगे, गुरु कर लेंगे। सत्संग सुन लेंगे, तीर्थ दर्शन कर लेंगे। पाप कट जाएँगे।

भक्ति करना कठिन है अपनों से भी दूर।
चढ़े तो चाखे प्रेम रस, गिरे तो चकनाचूर।।

आज की साधना भक्ति प्रदर्शन व स्वार्थ की हो गई है। माफ करना- कौन इष्ट देव-देवी या भगवान कितनी जल्दी प्रसन्न होकर मनोकामना (स्वार्थ) की पूर्ति कितनी जल्दी कर देगा। इसका हिसाब लगाया जाता है। पण्डे, पुजारी, गुरु, सन्त भी ऐसे ही प्रोत्साहित करते हैं। मेरा आशय किसी देवी-देवता, इष्ट या भगवान की पूजा-अर्चना या पद्धति की आलोचना, विरोध करना कतई नहीं है। आस्था की चीज है। परन्तु आस्था से वास्ता न होकर अध्यात्म सिर्फ दुकानदारी हो, स्वार्थ और भक्ति का व्यवसायीकरण हो जावे तो चिंता की बात है। मेरा आशय यह है कि यदि कोई व्यक्ति अध्यात्म, भक्ति, पूजा-पाठ, पारायण, जाप, अभिषेक, भोग, भण्डारा में संलग्न रहे और अपने में व्याप्त काम, क्रोध, लोभ, स्वार्थ, अहंकार, दुर्व्यसन, दुराचार आदि अनेक दोष पालता रहे तो ऐसी साधना भक्ति किस काम की। किसी ने ठीक ही कहा है- **आदत अपनी सुधार ले तो हो गया भजन।** धर्म में सत्कर्म भी जरूरी है। भजन/भोजन/भोग गोपनीय रहे तो ही उत्तम है, प्रदर्शन की वस्तु नहीं है। हम और हमारे आराध्य के मध्य दलाल, बिचौलिया न हो। क्योंकि भगवान/ईश्वर सबके मन की बातें व सबकी भाषाएँ समझता है।

अब हम कुछ वेद सम्मत बातों की ओर ध्यान दें। वेद ईश्वर की आदि वाणी है जो चार ऋषियों के मस्तिष्क में ईश्वर ने प्रथम डाली, जो चलते-चलते आज चार वेद (ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद) के रूप में सर्वत्र मौजूद है। इसमें ज्ञान-विज्ञान एवं सृष्टि क्रम अनुसार अपरिवर्तनीय बातें हैं जो प्राणीमात्र के लिए सर्वकाल में, सर्व स्थान में, सबको उपयोगी तथा लाभकारी है। एक ही ईश्वर असीम सृष्टि का निर्माता, संचालक पालक और उद्धारक है। वह सर्वोच्च सत्ता, सर्वाधार निराकार, अजर, अमर, अभय, नित्य और सच्चिदानन्द है। वही हम सबका स्थायी पिता, माता, बन्धु, सखा और सहायक और निष्पक्ष न्यायाधीश अर्थात् कर्मफल दाता है।

वेदों में मानव जीवन, मानव शरीर, वर्णाश्रम, धर्म और कर्म की अति वैज्ञानिक व्याख्या जगह-जगह की गई है। वेद मूल संस्कृत में है जो सामान्य जन को कठिन है। परन्तु अब तो वैदिक साहित्य हिन्दी और अनेक भाषाओं में सरल व्याख्या और भावार्थ सहित उपलब्ध है।

धर्म-कर्म का वैदिक (वैज्ञानिक) विश्लेषण

चार आश्रम : ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास।

चार वर्ण : ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र (योग्यतानुसार)।

सोलह संस्कार : गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोनयन (जन्म पूर्व), जात कर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, कर्णविध, उपनयन, वेदारम्भ, समावर्तन, गृहस्थ (विवाह), वानप्रस्थ, संन्यास और अन्त्येष्टी (अति वैज्ञानिक)।

पाँच कर्मेन्द्रियाँ, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच प्राण, मन बुद्धि चित्त एवं अहंकार।

जीवन का उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। भौतिक व अध्यात्म

वृत्तियाँ– सात्विक, राजसी, तामसी

पाँच कोष : अन्नमय कोष, प्राणमय कोष, मनोमय कोष, विज्ञानमय कोष, आनन्दमय कोष (शरीर में)।

आठ चक्र : मूलाधार चक्र, स्वाधिष्ठान चक्र, मणिपुर चक्र, अनाहत चक्र, हृदय चक्र, विशुद्ध चक्र, आज्ञा चक्र और ब्रह्म चक्र।

पाँच धर्म : वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्र धर्म, मानव धर्म।

पाँच भक्ति : ज्ञान योग, कर्म योग, भक्ति योग, दान योग, सेवा योग।

ये कुछ उदाहरण हैं। विषय लम्बा न हो और आप सब जानते हैं। इसी प्रकार अध्यात्म भक्ति की आठ सीढ़ियाँ भी कितनी सटीक हैं।

१. पाँच यम : सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह। **२. पाँच नियम :** शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान। **३. आसन, ४. प्राणायाम, ५. प्रत्याहार, ६. धारणा, ७. ध्यान, ८. समाधि।**

कितनी वैज्ञानिक सरल और सत्य अध्यात्म की आठ सीढ़ियाँ हैं। यदि मनुष्य इनका अभ्यास करे, उपरोक्तानुसार पालन करे और प्रत्यक्ष जीवन में आत्मसात कर लेवे तो सच्चा मानव, देव और भगवान भी बन सकता है और आत्मा परमात्मा (ईश्वर) से साक्षात्कार भी कर सकता है।

कई लोग निराकार ईश्वर को समझते नहीं, इस कारण मानते नहीं। बिना शरीर व अंगों के सृष्टि का निर्माण कैसे कर लेता है। हम देख रहे हैं बीज से वृक्ष बन रहा है। पेड़, पौधे, पत्ते, फल, बीज, फूल अलग-अलग रंग आकार स्वाद के कैसे बनते जा रहे हैं। बादल, बिजली, वर्षा, हवा, तूफान। दिल की धड़कन चालू कौन करता है? मानव मशीन १०० साल तक कौन चलाता है? हवा, बिजली दिखती नहीं, पत्थर में आग दिखती नहीं, गन्ने में मिठास दिखती नहीं, फूलों में महक, तिल में तेल, दूध में घी। स्वाद, रंग कौन भरता है। ऐसे कई उदाहरण ईश्वर के कर्म व अस्तित्व के हैं।

जल विद्युत का ही उदाहरण ले लीजिये। डेम पर जनरेटर बड़े खम्भों पर तार के जरिये विद्युत स्टेशनों तक व ट्रांसफारमरों में हर खेत, घर तक लाइन विद्युत पम्प, कूलर, पंखे, बल्ब, ट्यूब, हीटर, फ्रीज, वाशिंग मशीन, एसी सब चलते हैं। यदि कहीं फाल्ट हो जाए, तार टूट जाए, ट्रांसफार्मर जल जाए या जनरेटर ही बन्द हो जाए तो क्या होगा? इन सबको चलित कौन रखता? बड़ा इंजीनियर चालू-बन्द करता है। हमारी सृष्टि और शरीर को भी सबसे बड़ा इंजीनियर All Mighty God ही चलाता-बन्द करता है। दिल की धड़कन, फेफड़ों की हवा, लार की भट्टी, गुर्दों के फिल्टर, नस नाड़ियों का संचार और सारे विश्व पर शासन करने वाले मस्तिष्क को कौन शक्ति देता, चलाता है। शरीर में कहीं भी पिन चुभ जाए तो संवेदना कौन देता। जीवात्मा शरीर से निकल जाने के बाद यह सब क्यों नहीं होता। इसी तरह असीम सृष्टि का संचालन वह एक ही ईश्वर करता है। जानो, समझो और अपने इस विलक्षण मानव योनि को सफल सार्थक बनाओ, तभी मानव जीवन की सफलता है अन्यथा सब व्यर्थ है। ■

कोरोना

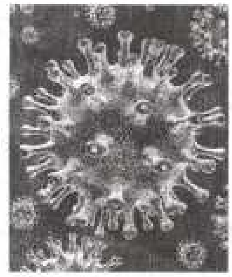

अब गाँव नगर सड़कों पर छाया सन्नाटा है।
खुद अपनों से अपनों को मजबूरन काटा है।।
चारों ओर दहशत का साया फैला है।
घर में रह मनुज अब घबराया है।।
क्या अब बाल बच्चे पढ़ पाएँगे?
अब भूखे कैसे रोटी खा पाएँगे।।
ये भयंकर अंधियारा कब खत्म होगा?
हुए संक्रमित, रोगी कब अच्छा होगा।।

वर्तमान में ज्ञान विज्ञान बेकार हुआ।
एक विषाणु महाकाल विकराल हुआ।।
डर बैठ गया है अब सबको।
हर मुँह पर बँधा रूमाल है सबको।।
जिन्दा थे जो नित्य मजदूरी से।
बेघर से दूर भूखे दु:खी हैं मजबूरी से।।
अब न किसी का ठौर ठिकाना है।
पैदल चल-चल बिना ठौर मर जाना है।।

सब आर्त और आशंकित हैं।
कोरोना बना जग में विशेष अंकित है।।
परिजन फँसा दूर विदेशों में।
सबको डर खौफ भरा संदेशों में।।
हर जननी की लोचन बनी गंगा जमुना की धारा।
तोड़ रहा दम धीरज, मिल न रहा किनारा।।
विकट विशाल आफत आई है।
सारी दुनिया बहुत घबराई है।।

मलय का असुर आक्रमण कर रहा है।
हर दिन लाशों का ढेर लग रहा है।।
दुष्ट चीन अपनी कुटिलता से बाज आता नहीं।
जग में महामारी फैलाने तेरा भी धर्म नहीं।।
भू पर प्रलय मच गया तेरे कुकर्मों से।
हर आँसू शाप दे रहा है अर्शों से।।
पर आप कभी धीरज मत खो देना।
इस दु:ख पर कभी मत रो देना।।

इस कठिन परीक्षा में हर हाल में पास होना है।
बस दूरी रखो, भीड़ से बचो, मुँह पर मास्क लगाना है।।
हर घर वैदिक यज्ञ करो आम नीम गिलोय पीपल आहूत करना है।
'सुन्दर' संयम, ईश प्रार्थना से कोरोना को मिलकर भगाना है।।

● **सुन्दरलाल प्रहलाद चौधरी**
अधीक्षक पोस्ट मैट्रिक अनुसूचित जाति बालक छात्रावास, बुरहानपुर (म.प्र.)

श्री कृष्ण गौरव गाथा

पुस्तक–परिचय

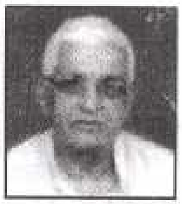

● पं. देवमुनि वानप्रस्थी
गुरुकुल मलारना चौड़, जिला सवाई माधोपुर (राज.)
चलभाष : ७७४२२२१३२७

आर्य धरा पर दो महान विभूतियों का जन्म हुआ जिनके आदर्श हमारे जीवन में नया मोड़ लाते हैं। उनके कार्यकलापों का प्रेरणादायी रूप वर्तमान में तथा भविष्य में भी रहेगा। राम आदर्श मर्यादावादी हैं तो कृष्ण योगीराज, अहंकार नाशक, दुष्टों का दमन करने वाले हैं। कृष्ण को स्वार्थी तत्वों द्वारा अपने स्वार्थ साधना के लिए माखन चोर, वस्त्र हरण, दुष्टाचार, सोलह हजार रानियों के पति, राधा का प्रेम, रासलीला तथा चूड़ी बेचने वाला बताया जा रहा है। कितने आँख के अन्धे हैं जो इन पदचिह्नों पर चल रहे हैं। कृष्ण सबल योगी थे। उनके जीवन में अनेक घटनाएँ आई उनका बड़ी वीरता एवं सहृदयता का परिचय दिया है। पूतना वध, पागल बैल को पछाड़ना, गोवर्धन पूजा, कंस वध, जरासन्ध पर आक्रमण, खाण्डव दहन, जरासन्ध वध आदि का न्यायिक परिचय दिया। सती सावित्री रुकमणी के साथ विवाह, अटल प्रतिज्ञा, महाभारत के युद्ध को रोकने के लिए शान्ति दूत बनना, युद्ध में अर्जुन का सारथी बनना, अर्जुन के मोहभंग के लिए गीता का उपदेश देकर कर्तव्य पालन की ओर अग्रसर करना, धर्मयुद्ध की बात आदि अनेक महत्वपूर्ण ज्वलन्त उद्धरण मिलते हैं।

● लेखक : आचार्य सत्येन्द्र
● प्रकाशक : वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन रोजड़, पत्रालय सागपुर, जि. साबरकांठा (गुज.)
● चलभाष : ८९५५९२४९४५
● मूल्य : स्वाध्याय ● पृष्ठ संख्या : ७२

पुराणों में एवं भागवत में कृष्ण का भद्दा स्वरूप प्रस्तुत किया। क्या ऐसे अवतारी कृष्ण थे? उनके प्रति लांछन, भद्दी बातें बताना वास्तव में कृष्ण को कलंकित करने का कार्य समाज के स्वार्थी तत्वों ने किया है। और नाचते है, अति प्रसन्न होते हैं। यही देश–विदेश के सामने स्वरूप प्रस्तुत करते हैं। ऐसे लोगों को डूब मरना चाहिये। लेखक की आत्मा व्यथित है। इस कारण उन्होंने कृष्ण के गौरव गाथा को सरल रूप में पाठकों के सामने रखा है। गागर में सागर भर दिया है। कृष्ण की महिमा एवं गौरव को अति कुशलता से प्रस्तुत किया है। समाज कंटकों से दूर रहकर वास्तविकता से परिचित होना चाहिये और हमें अपने जीवन में उतारना चाहिये।

लेखक ने कृष्ण की वास्तविकता को समझने के लिए पुराणों में कृष्ण की समीक्षा, कृष्ण का भद्दा रूप एवं कृष्ण जन्म का अलौकिक वर्णन पूतना के शरीर की असम्भव कल्पना, कृष्ण अवतार के रूप में, कृष्ण को छली घोषित करना, कृष्ण द्वारा सन्ध्योपासना आदि पर पूर्ण प्रकाश डाला है। शास्त्रों के कथन द्वारा सिद्ध किया है। मनुस्मृति, भागवत, महर्षि मनु, सत्यार्थ प्रकाश ११वाँ समुल्लास, गीता, डॉ. भवानीलाल भारतीय, महाभारत उद्योग पर्व द्वारा वास्तविकता को सामने रखा है। पाठक पूर्ण पुस्तिका का अध्ययन कर स्वयं मंथश्र करें और लेखक की भावनाओं को समझें। उनके विचार समाज, देश, राष्ट्र एवं अन्ध श्रद्धा वालों को नितान्त समझना होगा। भारत के गौरव के साथ कृष्ण गौरव को प्रदर्शित करना आवश्यक है। लेखक को साधुवाद। ■

मूल रचनाकार : स्व. श्रीयुत मुंशी दरबारीलाल 'कविरत्न'

हिन्दी की वर्ण मंजु मञ्जरी

गतांक पृष्ठ ३७ से आगे

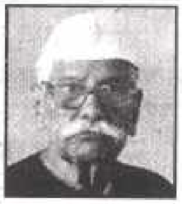

संकलनकर्ता एवं सम्पादक
● चौ. बदनसिंह 'पूर्व विधायक'
१३/१०८, चारबाग, शाहगंज आगरा (उ.प्र.)
चलभाष : ९९२७४१६२००

ओ३म् "अवशिष्ट"

सरसी छन्द (२७ मात्रा का १६, ११)

श्री श्रीपति पद वन्दन करि करि, मात पिता गुण गान।
विनवहुँ नित्य द्वारिका धीशहिं, जो करि हैं कल्यान।।
विजय कीजिये प्रति कारज में, सुयश हेतु मम ख्यात।
पंकज पदतव मोहिय मेंते, डिगहि न राखि कुशलात।।
लीन होंहु हरि तव सुमिरन में, लाउ धर्म (धरम) की जीति।
काम क्रोध मद लोभ भगाइय, हरौ सकल दुर नीति।।
केशव कृष्ण कृपाल प्रभू, यदुराइ सफल करियत्न।
सेवक की विनती सेवा हो, मूल्यवान जिमि रत्न।।
मुण्डमाल गल शीश गंगा, दरसै बारी शुचि लाल।
जीत नेम यश दीजिय हरिये, सबके संकट जाल।।
मंजुल मंगल जनमन भावन, रीति नीति की रवानि।
जग निर्माण मेरी हो तव, गुण गायन की वानि।।

अर्थ : लेखक ने प्रस्तुत सरसी छन्द के द्वारा अपनी धार्मिक प्रवृत्ति का उल्लेख भी परमेश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण भाव से किया है। सर्वप्रथम वह लक्ष्मी पति विष्णु की वन्दना करता है। फिर माता–पिता के गुणगान करता है। कल्याणकारी विष्णु की उपासना उनके द्वारा प्रतिदिन की जाती है। प्रत्येक कार्यकर्ता की सफलता अपनी प्रसिद्धि का यश प्राप्त करने के लिए विनती करता है। अपने हृदय में ईश्वर के चरण कमलों की उपस्थिति अपनी कुशलता के लिए चाहता है। हरि सुमरन में वह सदैव तल्लीनता धर्म को जीतने के लिए चाहता है। अपने दुर्गुणों को दूर करने के लिए काम, क्रोध, मद और मोह को भगाने की प्रार्थना करता है। परम पिता परमात्मा की सदैव सेवारत रहने में सेवक विनयशील बने रहने की कामना करता है। सबके संकटों को दूर करने की विजय यश करने के लिए दुर्जनों की मुंड माला गले में पहनने को तथा पाप तारणी गंगा को सिर पर धारण शिव शंकर परमात्मा कहते रहें। सृष्टि निर्माता परमात्मा तेरे गुण गाने की मेरी स्थायी प्रवृत्ति बनी रहे। और जन सेवा भावना की सुन्दर मंगलमयी कामना मेरी रीति–नीति की वाणी बनी रहे। लेखक जन सेवा भाव और सृष्टि रचयिता कार का समर्पित सेवक बने रहने की कामना प्रार्थी है। **(स्वर वर्ण पूर्ण)** ■

त्याग देता है सच्चा सुख

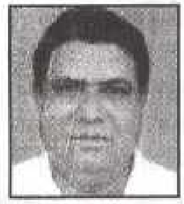

● **रोहिताश्व जांगिड**
से.नि. वरिष्ठ अध्यापक
डाबला रोड, कोटपूतली, जयपुर (राज.)
चलभाष : ७७२७८३८९९९

त्याग हर व्यक्ति नहीं कर सकता। त्याग के लिए बहुत बड़े साहस की आवश्यकता होती है। त्याग करने से हमें सच्चा सुख मिलता है। कबीरजी ने कहा है–

मेरा मुझ में कुछ नहीं, जो कुछ है तोर।
तेरा तुझको सौंपूँगा, क्या लागे मोर।।

महाभारत में कहा गया है– **''भय नहीं अपितु प्रेम ही सच्चे त्याग का स्रोत है तथा त्याग के समान कोई सुख नहीं है।''**

गाँधीजी ने कहा है– **''जो मनुष्य त्याग करके दुःख मानता है उसने सही अर्थों में त्याग किया ही नहीं। सच्चा त्याग सुख देता है एवं मनुष्य को ऊँचा उठाता है।''**

जयशंकर प्रसादजी ने कहा है– **''श्रेय के लिए मनुष्य को सब कुछ त्याग करना चाहिये।''**

त्याग के पर्याय, अपरिग्रह असंग्रह को माना जाता है किन्तु अंग्रेजी शब्द सेक्रीफाइज (बलिदान) सबसे उत्तम पर्याय लगता है। विसर्जन के बिना अर्जन और अर्जन के बिना विसर्जन का अस्तित्व ही नहीं है। दोनों संगी साथी हैं। जगदीशचंद्र बोस ने कहा है कि त्याग एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। मनुष्य ग्रहण किये हुए भोजन को मलमूत्र के रूप में त्याग कर देता है। यदि वह ऐसा नहीं करता है तो वह व्याधि ग्रस्त हो जाएगा। कमाया हुआ धन भी सतपात्रों में बाँटना उसे त्याग करना ही उसकी रक्षा है। नदी, तालाब, जलाशय पानी से भरते हैं, उनसे सिंचाई के लिए जल छोड़ा जाता है। यह बहाव ही पानी की रक्षा करता है। यदि पानी को संचित ही रखा जाए तो वह दूषित हो जाता है।

दीपशिखा भी अपना अंग जलाकर जन साधारण को प्रकाश उपलब्ध कराती है। इसलिए कहा गया है कि संग्रह अनर्थ की जड़ है। बिना जानकारी या गुप्त दान को और भी उत्तम माना गया है। मानवीय गुणों में त्याग का बहुत ऊँचा स्थान है पर त्याग वृत्ति किसी–किसी में ही पाई जाती है। त्याग करना कहना जितना सरल है, उसका पालन उतना ही कठिन है। त्याग अनेक वस्तुओं का होता है। यथा– कपड़ा, भोजन, धन, मकान आदि।

त्याग की कोई सीमा नहीं है। इसकी सीमा बड़ी विशाल है। जिन्होंने त्याग को सही अर्थों में समझ लिया वे महापुरुष बन गए। व्यावहारिक जीवन में त्याग वृत्ति को अपनाना अत्यन्त कठिन कार्य है। संयमी तथा आत्म नियन्त्रण के धनी लोग इस कठिन कार्य को सरल बना सकते हैं। जो त्याग नहीं कर सकता, सच्चे अर्थों में उसे जीने का हक ही नहीं है। जिन्होंने यह जान लिया कि हम कल क्या थे, आज क्या हैं और कल क्या होंगे? कहाँ जाना है और साथ क्या जाएगा? ऐसे विवेकी पुरुषों ने ही त्याग किया है।

चीनी जीवन दर्शन के अनुसार जो जितना अधिक त्याग या दान देगा उसे समाज में उतना ही अधिक सम्मान मिलेगा। किसी ने परिवार, किसी ने स्त्री, किसी ने देश, किसी ने धन का त्याग कर इतिहास में नाम कमाया है। दधीचि का अस्थि त्याग, राम का राज्य त्याग, महात्मा बुद्ध का परिवार त्याग, पन्ना धाय का पुत्र त्याग, अशोक का शस्त्र त्याग आदि त्याग के उत्तम उदाहरण हैं। ■

रोज एक टमाटर खाने से डॉक्टर आपसे दूर रहेगा

आयुर्वेद मत : रस और विपाक में खट्टे, रुचिकर, अग्नि दीपक पाचक, सारक और रक्त शोधक है। अग्नि भेद, उदर शूल भेद वृद्धि, रक्त विकहार में हित्तावह अर्श, पांडु और जीर्ण ज्वर को दूर करते हैं। उत्तम वायु नाशक, हृदय को तृप्त करने वाले लघु उष्ण, स्निग्ध है। रक्त तथा पित्त की वृद्धि करता है। खट्टा रस ज्वर के लिए उपयोगी, रुचिकर और पाचक है। पथरी, सूजन, शंधिवात, आम वात के लिए अम्ल पित्त रोगियों को अनुकूल नहीं।

वैज्ञानिक मत : टमाटर अत्यन्त महत्वपूर्ण और उपयोगी है। टमाटर लीवर, गुदा और अन्य अंगों के लिए महत्वपूर्ण छः प्रकार के विटामिनों में से पाँच विटामिन में से एक है। पके टमाटर में विटामिन ए, बी, सी काफी मात्रा में है। लवण, पोटाश, लोहे, चूना और मैगनीज पर्याप्त मात्रा में है। टमाटर में ऑक्सेलिक एसिड, अंशतः साइटिक एसिड अधिक है। सेब, सन्तरा, मौसम्बी की अपेक्षा रक्त उत्पन्न करने की शक्ति कई गुना अधिक है। द्रव्य लौह तथा अन्य क्षार प्रचुर मात्रा में विद्यमान है।

प्रयोग : १. पके टमाटर का एक प्याला रस पीने से पुरानी कब्ज दूर होती है। २. पके टमाटर का रस सुबह–शाम पीने से चर्म रोग में लाभ होता है। ३. टमाटर के रस में शकर मिलाकर पीने से पित्त जन्य विकारों में लाभ होता है। ४. टमाटर के टुकड़ों पर सौंठ, सेन्धा नमक का चूर्ण अग्निमाद्य में लाभ होता है। ५. टमाटर के रस में हींग का बघार कर पीने से कृमि रोग में लाभ होता है।

● **हरिश्चन्द्र आर्य**
अधिष्ठाता उपदेश विभाग, प्रचार कार्यालय अमरोहा
दूरभाष : ०५०२२–२६३४२२

अन्तर्राष्ट्रीय बालिका दिवस ११ अक्टूबर पर विशेष प्रस्तुति

बेटियों के लिए

अरी बेटियों तुम पर गर्व, करता रहा यह समाज है।
तुम्हारी जरूरत देश धर्म को, सबसे ज्यादा आज है।।
क्योंकि तुम हो ईश्वर की, सबसे सुन्दर रचना।
तुम्हें छलने को तैयार है दुनिया, सावधान हो बचना।।

तुम बहक न जाना मनचलों की, प्यारी लुभावनी बातों में।
वर्ना खो जाओगी तुम, गुमनामी की अन्धेरी रातों में।।
देश धर्म कुल मर्यादा की, तुम ही असल निशानी हो।
तुम नहीं केवल छुई–मुई सी कली, तुम तो प्रचण्ड भवानी हो।।

तुम स्वतन्त्र निजपथ पर बढ़ने को, पर पथ की पहचान जरूरी है।
तुम अनमोल थाती हो हमारी, तुम्हारी तो सुरक्षा जरूरी है।।
दुनिया तुमको पाना चाहती, छल–बल और प्रलोभन से।
बेटी सावधान हो के रहना, दूर करो झूठा आकर्षण मन से।।

तुम्हीं देश की आधार शिला हो, तुम से ही नई पीढ़ी आती।
तुम ही सह धर्मिणी बनती, तुम ही माता का दर्जा पाती।।
दुनिया की कुदृष्टि भी, तुम पर ही आकर है टिकती।
परमात्मा की श्रेष्ठ रचना हो, सुन्दर भी तो तुम दिखती।।

निज संस्कृति की आन–बान हो, सीता सावित्री की शान हो।
अपना गौरव ध्यान रखो तुम, भारत की नारी महान हो।।
कठोर बत्तीस दाँतों के बीच में, कोमल जीभ ज्यों रहे सुरक्षित।
ऐसे ही खुद को सबल बनाकर, रहना होगा खुद ही सुरक्षित।।

तुम कोमल शुभांगिनी हो, गर्व से इस पर तन जाना।
पर जब खुद पर संकट आये, तुम झट रणचण्डी बन जाना।।
समय–समय पर रूप तुम्हारा, कभी भगिनी हो कभी भार्या।
अपना धर्म कभी न भूलना, तुम हो आर्यावर्त की महान आर्या।।

● आर्य पी.एस. यादव
प्रधान आर्य, समाज, मण्डीदीप
जनपद : रायसेन (म.प्र.)
चलभाष : ९४२५००४३७९

(प्रातःकाल उठकर बोले जाने वाले, प्रातःकाल के विज्ञान को प्रकट करने वाले वेद के मन्त्रों के आधार पर ईश्वर के गुणों का गुणगान)

ब्रह्म बेला

प्रातःकाल की ब्रह्म बेला में, उठ प्रभु का हम ध्यान करें।
बरस रहा प्रभु का अमृत, हम उसका रसपान करें।।

सूर्य पधारे स्वप्रकाश ले, जीवों में नव प्राण भरें।
चन्द्र चमकता शीतलता से, औषध में रस दान करें।।
दिव्य औषधि देकर हमको, पुष्ट और बलवान करें।
प्राण उदान समान मित्र वह, प्रातः की वायु पुष्ट करे।।
प्रातःकाल की ब्रह्म बेला...।।१।।

सब लोकों का धारण कर्ता, सब में ज्ञान प्रकाश भरे।
प्रभु के ज्ञान में चलकर हम, उत्तम प्रज्ञा प्राप्त करें।।
उत्तम प्रज्ञा सुमति वाले, विद्वजनों का संग करें।
विद्वजनों के संग को पाकर, उत्तम पथ प्रयाण करें।।
प्रातःकाल की ब्रह्म बेला...।।२।।

ऐसी करपा कर दो प्रभुजी, हम उत्तम पुरुषार्थ करें।
पुरुषार्थ कर शाम सवेरे, तेरा ऐश्वर्य प्राप्त करें।।
सकल पदारथ देने वाले, राज्य श्री का योग करें।
पाप कर्म का बन्धन काटें, बनकर रुद्र वो दण्ड करें।।
प्रातःकाल की ब्रह्म बेला...।।३।।

वेद विद्या के ज्ञाता ब्राह्मण, उत्तम बुद्धि दान करें।
उत्तम बुद्धि के स्वामी बन, योग साधना नित्य करें।।
योग समाधि सिद्ध करें और, बल और तेज को प्राप्त करें।
बल और तेज प्रदाता प्रभु का, नित 'रमेश' गुणगान करें।।
प्रातःकाल की ब्रह्म बेला...।।४।।

● रमेशचन्द्र भाट
कोषाध्यक्ष : आर्य समाज रावतभाटा
जनपद : चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)
चलभाष : ९४१३३५६७२८

भाई राजपालसिंह चौहान का असामयिक निधन

राष्ट्र निर्माण पार्टी के अनन्य सहयोगी, आर्य समाज के वरिष्ठ सदस्य, सामाजिक सेवा कार्यों में सदैव अग्रणी रहने वाले भाई राजपाल सिंहजी चौहान का कोविड–१९ के कारण दिनांक १ सितंबर २०२० को असामयिक दुःखद निधन हो गया। आपके निधन से राष्ट्र निर्माण पार्टी के साथ–साथ राष्ट्र और समाज की अपूरणीय क्षति हुई है। वैदिक संसार परिवार दिवंगत आत्मा के प्रति अपने श्रद्धासुमन अर्पित करता है तथा परिजनों के प्रति गहन शोक संवेदनाएँ व्यक्त करता है।

ओ३म् शान्ति... शन्ति... शान्ति...

बेहाल और निहाल

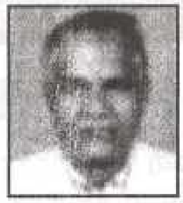

● खुशहालचन्द्र आर्य
द्वारा- गोविन्दराम आर्य एण्ड सन्स
१८०, महात्मा गान्धी मार्ग, कोलकाता
चलभाष : ९८३०१३५७९४

देश की आम जनता है बेहाल,
देश के भ्रष्ट नेता, मन्त्री हो रहे हैं निहाल।।
व्यापारी, छोटे उद्योगपति हैं बेहाल,
ऑफिसर, इंस्पेक्टर हो रहे हैं निहाल।।
रेलगाड़ी के लाचार मुसाफिर हैं बेहाल,
टिकट चेकर, सिपाही हो रहे हैं निहाल।।
निम्न मध्यम वर्ग के लोग हैं बेहाल,
उच्च वर्ग के लोग हो रहे हैं निहाल।।
पशु–पक्षी अत्याचार से हैं बेहाल,
मन्दिरों में देवी–देवता हो रहे हैं निहाल।।
गाय, बैल हो रहे हैं बेहाल,
कसाई, ट्रैक्टर हो रहे हैं निहाल।।
उपदेश, प्रवचन हैं बेहाल,
सिनेमा, टीवी हो रहे हैं निहाल।।
सन्ध्या, हवन, सत्संग हैं बेहाल,
भागवत कथा, अखण्ड कीर्तन हो रहे हैं निहाल।।
मन्दिर, धर्मशाला हैं बेहाल,
क्लब, फाईव स्टार होटल हो रहे हैं निहाल।।
साधु, सन्त, संन्यासी हैं बेहाल,
खिलाड़ी, अभिनेता हो रहे हैं निहाल।।
भारतीय संस्कृति है बेहाल,
पश्चिमी सभ्यता हो रही है निहाल।।
राष्ट्रभक्त, देश हितैषी हैं बेहाल,
माफिया, अपराधी, आतंकवादी हो रहे हैं निहाल।।
संयम, सदाचार हैं बेहाल,
उच्छृंखलता, नग्नता हो रही है निहाल।।
वेद, उपनिषद, स्मृति हैं बेहाल,
उपन्यास, फिल्मी पुस्तकें हो रही हैं निहाल।।
सत्य, न्याय, त्याग है बेहाल,
असत्य, अन्याय, लोभ हो रहे हैं निहाल।।
सच्चा, ईमानदार व्यक्ति है बेहाल,
झूठा, बेईमान व्यक्ति हो रहा है निहाल।।
स्वदेशी माल के व्यापारी हैं बेहाल,
विदेशी कम्पनियाँ हो रही हैं निहाल।।
विद्वान, चरित्रवान, सज्जन हैं बेहाल,
धूर्त, भ्रष्ट, गुण्डे हो रहे हैं निहाल।।
देश का संगठन है बेहाल,
जातिवाद, प्रान्तवाद, भाई–भतीजावाद हो रहे हैं निहाल।।
दया, धैर्य, शान्ति है बेहाल,
लोभ, लालच, अहंकार हो रहे हैं निहाल।।
प्रेम, सहृदय, परोपकार हैं बेहाल,
द्वेष, घृणा, स्वार्थ हो रहे हैं निहाल।।
साहस, पुरुषार्थ, कर्तव्य हैं बेहाल,
कायरता, निष्क्रियता, आलस्य हो रहे निहाल।।
देश के बहु संख्यक हैं बेहाल,
कुर्सी के भूखे धर्म निरपेक्षता के नाम से फैला रहे हैं झूठा जाल।।
सब तुष्टीकरण पर जुटे हुए हैं, नहीं देश हित का ख्याल,
जिससे देश द्रोहियों की चल रही है विध्वंसक चाल।।
क्या खेल रहे हो होली, लगाकर गुलाल,
लुट रहा है तुम्हारा **'गौरव'** साथ ही माल।।
यदि रहा कुछ वर्षों तक यही हाल,
तो जल्दी ही आने वाला है वही गुलामी काल।।
अब तो चेतो, सम्भलो मेरे देश के सच्चे लाल,
रखो हमेशा अपने देश हित का ख्याल।।
मत चलने दो देश द्रोहियों की टेढ़ी–मेढ़ी चाल,
तभी देश रह सकेगा स्वतन्त्र, बन सकेगा **'खुशहाल'**।। ■

वानप्रस्थ साधक आश्रम, रोजड़

वैदिक ज्ञान, ध्यान, साधना, अध्यात्म व सिद्धान्त को समर्पित
आर्यवन, रोजड़, पत्रालय : सागपुर,
जनपद : साबरकांठा–३८३३०७ (गुजरात)
अणुडाक : vaanaprastharojad@gmail.com
वेबसाइट : www.vaanaprastharojad.org
सम्पर्क : ०९४२७०५९५५०, ९७२३०६७१४३

संस्कृति–संस्कारों से विहीन शिक्षा, अर्थवाद तथा भोगवाद के भीषण दावानल और सांस्कृतिक विकराल प्रदूषण के युग में मनुष्य निर्माण द्वारा समाज निर्माण, बगैर पक्षपात सम्पूर्ण मानव जाति को सुख–शान्ति, समृद्धि प्रदान करने वाले वैदिक धर्म की पुनर्स्थापना तथा भावी पीढ़ी व वैश्विक भावी भविष्य की शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति हेतु क्रान्तिकारी परिवर्तन हेतु कृत संकल्पित

आगामी प्रमुख गतिविधियाँ

आध्यात्मिक योग शिविर
दिनांक : १०–११ अक्टूबर २०२०
क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर
दिनांक : २२ से २९ नवम्बर २०२० तक
ध्यान प्रशिक्षक–प्रशिक्षण शिविर
दिनांक : १९ से २६ दिसम्बर २०२०
कार्यक्रम में परिस्थितिवश परिवर्तन सम्भव है।
बगैर पूर्व अनुमति के आश्रम में प्रवेश निषेध है।

अपना, अपने परिवार व समस्त मानव जाति के कल्याण का सर्वोत्तम पथ

वैदिक संसार के सम्माननीय संरक्षक महानुभाव

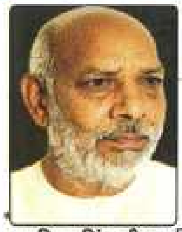
ठा. विक्रमसिंह जी आर्य
अध्यक्ष
राष्ट्र निर्माण पार्टी, दिल्ली

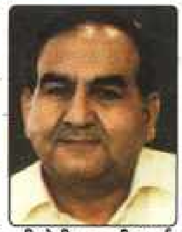
श्री नेमीचन्द जी शर्मा
भामाशाह-राज सरकार
गान्धीधाम (गुजरात)

श्री पूनाराम जी बरनेला
बरनेला चेरिटेबल ट्रस्ट
जोधपुर (राजस्थान)

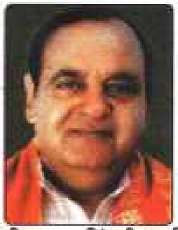
श्री रामफलसिंहजी आर्य
प्रा. वरिष्ठ उप प्रधान
सुन्दर नगर (हिमाचल प्रदेश)

अधि. रतनलाल जी राठौर
उपमन्त्री- आर्य समाज
निम्बाहेड़ा (राज.)

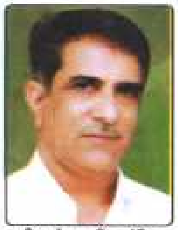
श्री नरेश जी जांगिड
वरिष्ठ समाजसेवी
जोधपुर (राजस्थान)

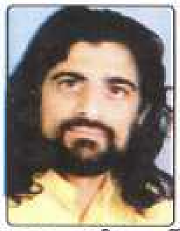
आ. आनन्द जी पुरुषार्थी
अ. वैदिक प्रवक्ता
होशंगाबाद (म.प्र.)

श्री मोहनलालजी भाट
वेद ज्ञान पिपासु
लस्सानी दोयम, अजमेर

श्री विनोद जी जायसवाल
वरिष्ठ समाजसेवी
रायपुर (छत्तीसगढ़)

श्री वेदप्रकाश जी आर्य
आई.ओ.सी.एल.
सवाई माधोपुर (राज.)

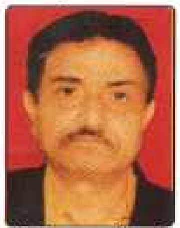
श्री लेखराज जी शर्मा
टी.पी.टी. कॉन्ट्रेक्टर
भरतपुर (राज.)

श्री अनिल जी शर्मा
युवा समाज चिन्तक
इन्दौर (म.प्र.)

श्री नानूराम जी जांगिड
जा.ब्रा. जिलाध्यक्ष
धुलिया (महाराष्ट्र)

श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य
प्रधान सार्वदेशिक सभा
अहमदाबाद (गुजरात)

श्रीमती सुमित्रा जी शर्मा
योग प्रशिक्षिका
अहमदाबाद (गुजरात)

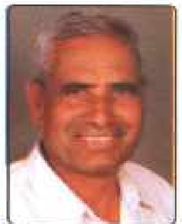
श्री रामभजनजी आर्य
वरिष्ठ समाजसेवी
बूढ़ा, मन्दसौर (म.प्र.)

श्री रमेशचन्द्रजी भाट
वैदिक ज्ञान पिपासु
रावतभाटा (राज.)

आचार्य सोमदेवजी आर्य
वैदिक धर्मोपदेशक
गुरुकुल मलारना चौड़

आचार्य वाचोनिधिजी आर्य
वरिष्ठ समाज सेवी
गान्धीधाम, गुजरात

श्री अर्जुन जी झलोया
वरिष्ठ समाजसेवी
मन्दसौर (म.प्र.)

श्री ओमप्रकाशजी शर्मा
वरिष्ठ समाजसेवी
आगरा (उ.प्र.)

श्री महेन्द्र जी आर्य
वरिष्ठ समाजसेवी
अहमदाबाद (गुजरात)

श्री समाधान जी पाटिल
वैदिक धर्मनिष्ठ युवा
जलगाँव (महाराष्ट्र)

श्री सीतारामजी शर्मा
वरिष्ठ समाजसेवी
अहमदाबाद (गुजरात)

कर्नल चन्द्रशेखर शर्मा
वेद ज्ञान पिपासु
उदयपुर (राज.)

सुश्री अंजलि जी आर्या
वैदिक भजनोपदेशिका
घरोंडा (हरियाणा)

सर्वेशजी सिद्धान्ताचार्य
वैदिक शिक्षाविद्
गुरुकुल केहलारी (म.प्र.)

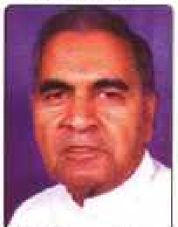
श्री गोविन्दरामजी आर्य
वैदिक धर्म प्रचारक
देपालपुर (इन्दौर)

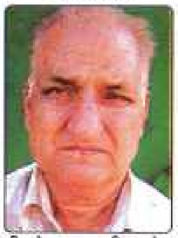
श्री मोहनलालजी दशोरा
चिन्तनशील साहित्यकार
नारायणगढ़ (म.प्र.)

श्री बंशीलालजी आर्य
आर्य नेता
बरखेड़ापन्थ (म.प्र.)

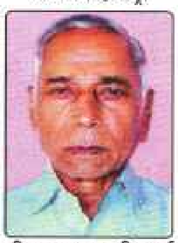
श्री ज्ञानकुमार जी आर्य
वैदिक मनीषी
लातूर (महाराष्ट्र)

श्री वेदभूषणजी गुप्त
पिता अनुव्रतो पुत्रः
सहारनपुर (उ.प्र.)

श्री ओमप्रकाशजी आर्य का असामयिक दुःखद निधन

आर्य समाज कसरावद, जिला खरगोन (म.प्र.) के समर्पित, सेवाभावी, सक्रिय समाजसेवी, वरिष्ठ सदस्य बालकृष्णजी आर्य (पाटीदार) के ज्येष्ठ सुपुत्र श्री ओमप्रकाशजी आर्य का ६६ वर्ष की आयु में दिनांक ४ सितम्बर को इन्दौर में उपचार के दौरान दुःखद निधन हो गया। आपका अंतिम संस्कार इन्दौर में तथा शुद्धि यज्ञ आपके निवास स्थान कसरावद में कोविड गाइड लाइन का पालन करते हुए किया गया। आप भी अपने पिता के अनुव्रती होकर मिलनसार, सेवाभावी तथा सामाजिक कार्यों को समर्पित थे। आप अपने पीछे माता-पिता, धर्मपत्नी श्रीमती शशिकला आर्या, दो सुपुत्र श्री जितेन्द्र आर्य, पूर्व जिलाध्यक्ष भाजपा युवा प्रकोष्ठ, पुत्रवधू श्रीमती अनिता आर्या, अजय आर्य, पुत्रवधू श्रीमती किरण आर्या, सुपौत्र कुशाग्र आर्य, सुपौत्री कु. वैदिका आर्या, कु. ऋषिका आर्या, कु. नितिका आर्या तथा छोटे भाई सतीश आर्य का भरा-पूरा परिवार छोड़ गए हैं।

आचार्य संदीपजी को पितृशोक

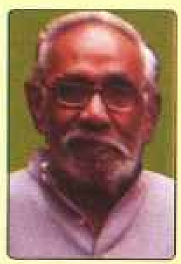

व्याकरण दर्शन के आर्य जगत् के उच्च कोटि के विद्वान, वानप्रस्थ साधक आश्रम आर्यवन, रोजड़ के क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविरों में महती भूमिका का निर्वाह करने वाले आचार्य संदीपजी, सोनीपत (हरियाणा) के पिता श्री सुधाकरजी कूसरे, सेवानिवृत्त प्रधान अध्यापक, निवासी : दुर्ग, छत्तीसगढ़ का ८० वर्ष की आयु में दिनांक १५ सितम्बर २०२० को जबलपुर में निधन हो गया। आपकी एकमात्र सुपुत्री श्रीमती दीप्ति देशपाण्डे तथा दामाद जबलपुर में प्रोफेसर पद पर सेवारत हैं। आपको रूग्ण अवस्था में उपचार हेतु जबलपुर ५-६ दिन पहले लाया गया था। आप आध्यात्मिक वृत्ति के सामाजिक सरोकारों से युक्त हसमुख, मिलनसार व्यक्ति थे। आपके एकमात्र सुपुत्र आचार्य संदीपजी आपके अनुव्रती बनकर वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

वैदिक संसार परिवार दिवंगत आत्माओं के प्रति अपने श्रद्धासुमन अर्पित करता है।

एम.पी.एच.आई.एन.-२०१२/४५०६९ • सम्पादक : गजेश शास्त्री • डाक पंजीयन : एम.पी./आई.डी.सी./१४०५/२०१८-२०

स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले
वतन पर मरने वालों का यही बाक़ी निशाँ होगा

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

"आत्मनिर्भर व्यक्ति सुखी जीवन व्यतीत करने के लिए सभी व्यवस्थाएँ स्वयं कर लेता है। आत्मनिर्भरता ही उन्नति का आधार है। हम प्रदेश के प्रत्येक नागरिक को आत्मनिर्भर बनाना चाहते हैं।"

D-18014

शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री

आपका साथ मध्यप्रदेश का विकास

1. संबल योजना – गरीबों को फिर मिला संबल। एक अप्रैल से 31 जुलाई 2020 तक योजना के विभिन्न घटकों में 25 हजार से अधिक हितग्राहियों को 268 करोड़ रुपये से अधिक की सहायता स्वीकृत।
2. पथ व्यवसायी योजना – आत्मनिर्भर भारत के तहत प्रदेश के शहरी एवं ग्रामीण पथ विक्रेताओं को कार्यशील पूंजी का ब्याज मुक्त ऋण।
3. श्रम सिद्धि अभियान – प्रदेश के इतिहास का सबसे बड़ा रोज़गार अभियान। 61 लाख 34 हजार 426 श्रमिकों का नियोजन। 3536 करोड़ रुपये से अधिक की राशि का भुगतान।
4. श्रमिक आयोग का गठन – श्रमिकों को बेहतर जीवन दिलाने के एकाग्र प्रयासों की दिशा में अहम कदम।
5. रोज़गार सेतु पोर्टल – रोज़गार के अवसरों का नया आसमान। 13 लाख 10 हजार से अधिक श्रमिक और 31 हजार से अधिक नियोक्ता पंजीकृत। 38,900 से अधिक लोगों को रोज़गार मिला।
6. श्रम कानूनों में संशोधन – क्रांतिकारी संशोधनों से श्रमिकों के हितों का संरक्षण एवं औद्योगिक विकास को प्रोत्साहन।
7. पंच परमेश्वर योजना पुन: प्रारंभ – 52 हजार से अधिक गांवों के विकास के लिये 14वें वित्त आयोग के 1555 करोड़ रुपये तथा 15वें वित्त आयोग के 996 करोड़ रुपये जारी।
8. गेहूँ उपार्जन में सबसे आगे – एक करोड़ 29 लाख 42 हजार मीट्रिक टन गेहूँ का उपार्जन। देश में प्रथम स्थान।
9. प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना – 16 लाख किसानों को 3100 करोड़ रुपये की फसल बीमा राशि का एक क्लिक में भुगतान।
10. मंडी अधिनियम में सुधार – किसानों को घर बैठे देश की किसी भी मंडी में फसल बेचने की सुविधा। किसान एवं व्यापारी दोनों के लाभ की पहल।
11. चंबल प्रोग्रेस-वे – चंबल क्षेत्र को मिली विकास की अभूतपूर्व सौगात।
12. बिजली बिलों में राहत – 97 लाख बिजली उपभोक्ताओं को 623 करोड़ रुपये से अधिक की राहत।
13. किल कोरोना अभियान – कोरोना संक्रमण की चेन तोड़ने के लिए 15 दिन का डोर-टू-डोर सर्वे अभियान।
14. उद्योगों को रियायतें – कोरोना संक्रमण के दृष्टिगत उद्योग संवर्धन नीति एवं निवेश प्रोत्साहन योजना में लाभ ले रही औद्योगिक इकाइयों को संचालन तथा भुगतान संबंधी रियायतें।

आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश से आत्मनिर्भर भारत की ओर बढ़ते कदम

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर भोपाल में आयोजित होने वाले राजकीय समारोह और माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के संबोधन को प्रात: 8:50 बजे आप इन माध्यमों पर लाइव देख सकते हैं : दूरदर्शन, मध्यप्रदेश @CMMadhyapradesh, @JansamparkMP @CMMadhyapradesh, @JansamparkMP Youtube.com/JansamparkMP

D-11055/2020

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक : सुखदेव शर्मा, इन्दौर द्वारा इन्दौर ग्राफिक्स, २४, कुँवर मण्डली से मुद्रित एवं १२/३, संविद नगर, इन्दौर-१८ से प्रकाशित